ISSN NO. 3048-8664

GLOCAL UNIVERSITY
SHAPING GLOBAL MINDS

ग्लोकल दृष्टि

(नवीन शोध व रचना धर्मिता को समर्पित वार्षिक पत्रिका)

वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024

ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग, मिर्जापुर पोल,
सहारनपुर–247121 उत्तर प्रदेश, भारत

ग्लोकल दृष्टि

(नवीन शोध व रचना धर्मिता को समर्पित वार्षिक पत्रिका)

वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024

संरक्षक

प्रो0 पी0 के0 भारती

कुलपति, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

सलाहकार संपादक मंडल

प्रो0 उमापति दीक्षित, (डी. लिट.)

अध्यक्ष, नवीनीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

डॉ0 अखिलेश मिश्रा

प्रशासनिक अधिकारी, उ0प्र0शासन

डॉ0 जयंती प्रसाद नौटियाल

महानिदेशक (अध्यक्ष), वैश्विक हिंदी शोध संस्थान, देहरादून

प्रो0 सतीश कुमार शर्मा

प्रतिकुलपति, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

प्रो0 जान फिनबे

प्रतिकुलपति, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

प्रो0 विभा अग्निहोत्री

अध्यक्ष, मानवशास्त्र विभाग, एन.एस.एन. पीजी कॉलेज, लखनऊ

प्रो0 सत्या मिश्रा

समाजशास्त्र विभाग, नारी शिक्षा निकेतन पीजी कॉलेज, लखनऊ

प्रो0 रईस अफजल मीर

डायरेक्टर रिसर्च, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

copyright@glocaluniversity2024

सम्पादक मंडल

प्रधान सम्पादक

डॉ0 शोभा त्रिपाठी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर shobha.tripathi@theglocaluniversity.in

सह–सम्पादक

डॉ0 विजय कुमार, डीन, स्कूल ऑफ बिजिनेस एंड कॉमर्स, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर dean.management@theglocaluniversity.in

डॉ0 अंजुम जावेद, प्रोफेसर, ग्लोकल कॉलेज ऑफ यूनानी मेडिकल साइंस एंड रिसर्च, सहारनपुर anjum@glocalunanicollege.in

डॉ0 शम्मून अहमद एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल यूनिवर्सिटी फार्मेसी कॉलेज, सहारनपुर shmmon@theglocaluniversity.in

डॉ0 आतिका बानो, एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल लॉ स्कूल ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर aateka@theglocaluniversity.in

डॉ0 पूजा, असिस्टेंट प्रोफेसर, पंचकर्म विभाग, आयुर्वेदिक कॉलेज एवं अनुसंधान केन्द्र, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर poojayadav40086@gmail.com

डॉ0 मोहम्मद नफीस, असिस्टेंट प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर nafis@theglocaluniversity.in

श्रीमती अंकिता गर्ग, असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ कंप्यूटर एंड इनफॉरमेशन साइंस, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर ankita.garg@theglocaluniversity.in

श्री गुरदीप पंवार, असिस्टेंट प्रोफेसर, पैरामेडिकल कॉलेज, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर gurdeep@theglocaluniversity.in

श्री कुलदीप, असिस्टेंट प्रोफेसर, ग्लोकल कॉलेज ऑफ नर्सिंग एंड रिसर्च सेंटर, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर kuldeep.saroj@theglocaluniversity.in

डॉ0 सलमा प्रवीन, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर salma@theglocaluniversity.in

प्लेगेरिज्म इंचार्ज

श्री शाहनवाज अली, विभागाध्यक्ष, आई0 टी0 ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर shahnawazali@theglocaluniversity.in

कु0 शालू विश्वकर्मा, डिप्टी लाइब्रेरियन, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर shalu@theglocaluniversity.in

शोध पत्रिका के विषय में

ग्लोकल दृष्टि, ग्लोकल विश्वविद्यालय दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121 की वार्षिक, बहुविषयक शोध पत्रिका है। यह विश्वविद्यालय यूजीसी अधिनियम की धारा 22 के तहत यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त और यूनिवर्सिटी अधिनियम 2011 (यूपी अधिनियम संख्या 2, 2012) द्वारा स्थापित (जैसा कि उत्तर प्रदेश विधानमंडल द्वारा पारित किया गया है)। ग्लोकल विश्वविद्यालय के लगभग 350 एकड़ के विशाल परिसर में वर्तमान में आठ प्रमुख स्कूल हैं। जिनमें 55 से अधिक स्नातक, स्नातकोत्तर व पेशेवर पाठ्यक्रम अत्यधिक प्रतिष्ठित, अनुभवी एवं योग्य संकाय सदस्यों द्वारा संचालित किये जाते हैं। विश्वविद्यालय में विश्व–स्तरीय बुनियादी ढांचे में अत्याधुनिक सुविधाएं, सुसज्जित छात्रावास, जिम आदि अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

ग्लोकल दृष्टि का उद्देश्य हिंदी भाषा में उच्च कोटि के शोध लेख प्रकाशित करना है। वैश्वीकरण के युग में शोध अध्ययन हेतु बहुविषयक उपागम को सबसे अधिक उपयुक्त माना गया है। अतः ग्लोकल दृष्टि को एक बहुविषयक शोध पत्रिका के रुप में वर्ष 2024 से प्रकाशित करने का निर्णय लिया गाया है। प्राप्त शोध लेखों की समीक्षा विषय विशेषज्ञों से कराने के पश्चात उन्हें प्रकाशन हेतु चयनित किया जाता है।

फार्म 'बी'

सम्पादक का नाम, राष्ट्रीयता व पता	:	प्रो. शोभा त्रिपाठी, भारतीय, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर
प्रकाशक का नाम, राष्ट्रीयता व पता	:	ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121
अवधि	:	वार्षिक
प्रकाशन का स्थान व पता	:	ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121
स्वामी का नाम, राष्ट्रीयता व पता	:	ग्लोकल विश्वविद्यालय, ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121
लेजर टाइप सैटिंग	:	ई.टी.डी.आर. कम्प्यूटर्स, बी–1205ए, के.एम. रेजिडेन्सी, राज नगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद–201017
मुद्रक का नाम व पता	:	3 एन प्रिंट एण्ड गिफ्टस, 425, द्वितीय तल, पटपड गंज इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली–110092, भारत
वैबसाइट	:	*glocaluniversity.edu.in*

ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI

(नवीन शोध व रचना धर्मिता को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका)

आई.एस.एस.एन. संख्या : **3048-8664**

वर्ष 1 अंक 1 सितम्बर 2024

अनुक्रमणिका

संदेश i

सम्पादकीय 1

शोध लेख

ग्लोकल दृष्टिकोण से शिक्षा का सार 3
अर्चना व गुरदीप पंवार

मानवाधिकारों का आलोचनात्मक विश्लेषण 7
वन्दना उप्रेती

भारत में हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव एवं विकास 13
रीना पंत

रामचरित मानस का सार्वभौमिक संदेश 17
ज्ञान धनुकचंद ए.

मॉरीशसीय संदर्भ में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध 23
अंजू घरभरन

भारत में मीडिया का संवैधानिक अधिकार और स्वतंत्रताः 31
एक सामाजिक–कानूनी अध्ययन
उमर जहाँ व अतीका बानो

परिवार न्यायालयों की स्थापनाः एक समग्र विश्लेषण 35
नूरे मनव्वर व आतिका बानो

पॉक्सो केस व आपस में उलझते देश के कई कानून 39
ओजस्कर पाण्डेय

लोकसभा और राज्य विधान सभा के लिए निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन 45
कविता गोस्वामी

भारत में डिजिटल लाइब्रेरी की विशेषताएँ 49
शालू विश्वकर्मा

लाल रक्त कोशिका विकारों पर एक शोध पत्र 55
अर्चना

फार्मेसीः स्वास्थ्य सेवा में अनगिनत अवसरों का खुलता द्वार 61
उमेश कुमार

फार्मेसी का इतिहास और विकास 69
शम्मून अहमद

पॉलीसिथीमियाः एक व्यापक अध्ययन 79
गुरदीप पंवार

चिकित्सा क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artifical Intelligence) 85
का उपयोग और भविष्यवाणी
अंकिता गर्ग

सूखा रोगः सतत शिक्षा गतिविधि 93
अंजुम जावेद

मुँहासे (एक्ने वल्गेरिस) 101
मोहम्मद इमलाक

ए. आई. टैकनोलजी के साथ अकेलेपन को दूर करना 107
यश राज

वार्षिक रिपोर्ट 115
शोभा त्रिपाठी

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027

12, अगस्त 2024

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर द्वारा "ग्लोकल दृष्टि" नामक शोध पत्र पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के शोध पत्र का हिंदी भाषा में प्रकाशन एक महत्वपूर्ण प्रयास है। मैं आशा करती हूँ कि प्रकाश्य पत्रिका में कला, विज्ञान, वाणिज्य, तकनीकी और चिकित्सा जैसे विभिन्न विषयों पर शोध पत्र हिंदी में प्रकाशित किये जाएंगे, जो हिंदी माध्यम और हिंदी भाषी छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगें।

मैं "ग्लोकल दृष्टि" पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

मनोज कुमार सिंह
मुख्य सचिव
Manoj Kumar Singh
Chief Secretary

उत्तर प्रदेश शासन
लोक भवन, लखनऊ – 226001
Government of Uttar Pradesh
Lok Bhawan, Lucknow -226001

दिनांक: 23 अगस्त, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर द्वारा शोध पत्रिका **'ग्लोकल दृष्टि'** का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है, जिसमें कला, विज्ञान, वाणिज्य, तकनीकी तथा चिकित्सा आदि सभी विषयों के शोध पत्र हिन्दी में होंगे।

विभिन्न विषयों पर होने वाले शैक्षणिक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। शोध पत्रिका विभिन्न विषयों पर आधारित शोध को साझा करने का एक प्रभावी मंच है। हिन्दी माध्यम में शोध प्रकाशित होने से छात्र विषय को सहजता से आत्मसात कर सकेंगे। आशा है कि शोध पत्रिका से छात्रों के ज्ञान संवर्धन और अनुसंधान को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगी।

शोध पत्रिका के सफल एवं उद्देश्यपरक प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें !

(मनोज कुमार सिंह)

Office Address : Room No. 101 'B' Wing, Lok Bhawan, U.P. Secretariat, Lucknow - 226001
Tel.: 0522-2239212, 2239296; Fax: 0522-2239283; Resi.: 0522-2239461, 2237290; Email: csup@nic.in
Website: https://up.gov.in/

प्रो. उमापति दीक्षित डी.लिट्.
विभागाध्यक्ष
नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग
Prof. Umapati Dikshit D.Litt.
Head of the Department
Deptt. Of Orientation & Language Extension

केंद्रीय हिंदी संस्थान
CENTRAL INSTITUTE OF HINDI
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Education, Govt. of India
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा – 282005 (भारत)
Hindi Sansthan Marg, Agra – 282005 (India)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, निकट भविष्य में "ग्लोकल दृष्टि" शीर्षक से शोध पत्रिका का प्रारंभ करने जा रहा है। मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि इस पत्रिका में कला, विज्ञान, वाणिज्य, तकनीकी तथा चिकित्सा आदि सभी विषयों के शोध पत्र हिंदी में प्रकाशित होंगे। हिंदी में ज्ञान विज्ञान के विभिन्न विषयों के आलेख प्रकाशित किया जाना हिंदीभाषी राज्यों के विद्यार्थियों के लिए यह एक उपयोगी पहल है। इसका स्वागत और समर्थन किया जाना चाहिए। विशेष उल्लेखनीय है कि इस पत्रिका के विमोचन की योजना इस वर्ष हिंदी दिवस के दिन की जा रही है, अतः इस पहल का महत्व और भी बढ़ जाता है।

मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी भाषा के शैक्षणिक उन्नयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान करेगी।

इसमें विभिन्न विषयों के शोधपरक अध्ययन के नये आयाम आकार लेंगे। एक बार पुनः इस सार्थक प्रयत्न के लिए आप सभी को हार्दिक साधुवाद और शुभकामनाएँ !

उमापति

(प्रो० उमापति दीक्षित)

Mob : 8765002624, 7355116538 / E-Mail : dr.umapati2011@gmail.com

प्रोफेसर पी. के. भारती
कुलपति

ग्लोकल विश्वविद्यालय
सहारनपुर - 247121
25 अगस्त 2024

शुभकामना संदेश

हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है कि ग्लोकल विश्वविद्यालय हिंदी भाषा में बहुविषयी पत्रिका 'ग्लोकल दृष्टि' का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका निश्चित ही हमारे छात्रों की प्रतिभा, उनकी रचनात्मकता और उच्च गुणवत्ता वाले शोध कार्यों का अद्वितीय मंच है। इस पत्रिका के माध्यम से हम उन शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं, जो निरंतर ज्ञान की खोज में लगे हुए हैं और अपने प्रयासों से नई ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं। यह पत्रिका उन सभी का सम्मान करती है जिन्होंने अपने शोध और लेखन में उत्कृष्टता प्राप्त की है और हमारी शैक्षणिक संस्थान की गरिमा को बढ़ाया है। हमारा उद्देश्य है कि इस पत्रिका के पन्नों में छपे हर लेख, शोधपत्र, और निबंध पाठकों को प्रेरित करें और उन्हें नए विचारों, दृष्टिकोणों, और शोध के क्षेत्रों से परिचित कराएं। हम चाहते हैं कि यह पत्रिका न केवल हमारे छात्रों और शिक्षकों के लिए, बल्कि पूरे शैक्षणिक समुदाय के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

मैं इस पत्रिका को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। इसके साथ ही मुख्य सम्पादक, संपादक मण्डल, सभी लेखकों और सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका को इस उच्च स्तर तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम आशा करते हैं कि यह पत्रिका निरंतर नवीन आयाम प्राप्त करने हेतु सजग रहेगी। आप सभी इस पत्रिका का आनंद लेंगे और इससे प्रेरणा प्राप्त करेंगे।
बहुत बहुत शुभकामनाएं।

प्रोफेसर पी. के. भारती

प्रो. सतीश कुमार शर्मा
प्रतिकुलपति

ग्लोकल विश्वविद्यालय
सहारनपुर - 247121
25 अगस्त 2024

शुभकामना संदेश

प्रिय पाठकों,

यह बहुत गर्व और खुशी की बात है कि ग्लोकल विश्वविद्यालय अपनी आधिकारिक पत्रिका "ग्लोकल दृष्टि" का पहला अंक लेकर आया है। यह प्रकाशन हमारी यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, और यह उत्कृष्टता, नवाचार और सामुदायिक जुड़ाव के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

आज की तेजी से विकसित हो रही दुनिया में, जुड़े रहना और सूचित रहना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। हमारा लक्ष्य एक ऐसा मंच प्रदान करना है जहाँ छात्र, संकाय, पूर्व छात्र और हितधारक अपनी आवाज साझा कर सकें, सफलताओं का जश्न मना सकें और उन विचारों का पता लगा सकें जो प्रगति को आगे बढ़ाते हैं।

हमने लेखों, विचारों और भावनाओं की एक विविध श्रृंखला तैयार की है जो ग्लोकल विश्वविद्यालय की गतिशील भावना को प्रदर्शित करते हैं। नवान्वेषी लेखों से लेकर व्यक्तिगत विकास और सामुदायिक प्रभाव की प्रेरक कहानियों तक, इस पत्रिका का प्रत्येक लेख हमारी सामूहिक यात्रा के सार पर प्रकाश डालता है।

इस प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लोगों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं। आपका समर्पण और उत्साह "ग्लोकल दृष्टि" को जीवंत करने में सहायक रहा है। मैं आप सभी को सामग्री के साथ जुड़ने, प्रतिक्रिया प्रदान करने और चल रहे संवाद में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जिसे यह पत्रिका बढ़ावा देना चाहती है।

जैसे-जैसे हम इस नए अध्याय की शुरुआत कर रहे हैं, आइए हम उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना जारी रखें और एक उज्जवल, अधिक सूचित भविष्य को आकार देने के अपने दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध रहें। हम सब मिलकर "ग्लोकल दृष्टि" को एक मूल्यवान संसाधन और ग्लोकल विश्वविद्यालय के जीवंत समुदाय के लिए एक ज्ञान सम्पदा बना सकते हैं। मैं इस प्रतिष्ठित पत्रिका के प्रकाशन के लिए डॉ. शोभा त्रिपाठी और उनकी पूरी संपादकीय टीम को बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार शर्मा

प्रोफेसर एस. पी. पांडेय
कुलसचिव

ग्लोकल विश्वविद्यालय
सहारनपुर - 247121
25 अगस्त 2024

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि ग्लोकल विश्वविद्यालय माननीय कुलपति प्रो. पी.के. भारती जी के संरक्षण में 'ग्लोकल दृष्टि' नमक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका में विभिन्न विषयों से संबंधित प्रपत्र होंगे, जो हिंदी भाषी विद्वानों/ छात्रों के लिए निश्चित ही उपयोगी सिद्ध होंगे।

इस पत्रिका के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करेगी , बल्कि शोध और ज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी। मुख्य सम्पादक व सम्पादक मण्डल की समस्त टीम को उनकी मेहनत और समर्पण के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

प्रोफेसर एस. पी. पाण्डेय

सीए. ए. पी. सिंह

मुख्य वित्त अधिकारी

GLOCAL UNIVERSITY
SHAPING GLOBAL MINDS

ग्लोकल विश्वविद्यालय
सहारनपुर - 247121
25 अगस्त 2024

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि ग्लोकल विश्वविद्यालय द्वारा 'ग्लोकल दृष्टि' नाम से पत्रिका का प्रकाशन हिंदी भाषा में किया जा रहा है, जिसमें सभी विषयों के विद्वान अपने अमूल्य विचारों को साझा करेंगे। छात्रों और सुधीजनों के रचनात्मक कौशल और उनके शोध कार्यों को विश्व तक पहुँचाने के लिए यह एक उचित मंच होगा। हिंदी भाषा भाषी छात्रों और विद्वानों के लिए निश्चित यह पत्रिका मील का पत्थर साबित होगी। मैं इस पत्रिका के प्रेरणास्रोत और संरक्षक माननीय कुलपति महोदय प्रो. पी. के. भारती जी को हार्दिक बधाई देता हूँ कि उन्होंने राष्ट्रभाषा में विचारों को प्रस्तुत करने की एक सात्विक पहल की है। मैं पत्रिका की प्रमुख संपादक डॉ. शोभा त्रिपाठी को अपनी शुभेच्छाएं प्रस्तुत करता हूँ और समस्त संपादक मंडल को शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

हिंदी मेरी पहचान है, जान हमारी हिंदी है।
राष्ट्र को जोड़ा हिंदी ने, वह भारत माँ की बिंदी है।
मान मेरा अभिमान मेरा, ईमान व आशा हिंदी है।
प्यारे हिंदुस्तान की भाषा, जन-जन की भाषा हिंदी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में शिक्षा और शोध के क्षेत्र में हिमालय की ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

शुभकामनाओं सहित

सीए. ए. पी. सिंह

-

डा0 शोभा त्रिपाठी

संपादकीय

प्रिय पाठकों,
नमस्कार!

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।। (भारतेंदु हरिश्चंद)

भारतेंदु द्वारा लिखी गई यह पंक्तियाँ उस समय भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक हैं बल्कि यूँ कहा जाय कि आज अधिक प्रासंगिक है तो अत्युक्ति नहीं होगी। भारत की 'निज भाषा' यदि माना जा सकता है तो हिंदी को ही। यद्यपि हिंदी आधिकारिक रूप से भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है परंतु हिंदी को ही भारत की राष्ट्रभाषा माना जाए ऐसा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से लेकर दक्षिण भारतीय विद्वान श्री गोपाल स्वामी अय्यंगर तक ने माँग की। अनेक लोगों के प्रयासों से यह 14 सितंबर सन 1949 को राजभाषा घोषित हो गई परंतु भारतवर्ष में हिंदी आज भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। यह बात कई बार कही जा चुकी है परंतु प्रसंगवश इसका बार–बार दोहराया जाना भी अति समीचीन है कि सन 1835 ई० में मैकाले की समिति ने सिफारिश की थी कि भारतीय स्कूलों में शिक्षा की भाषा अंग्रेजी होनी चाहिए और पाठ्यक्रम पूर्वी मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी मूल्यों और विचारों पर आधारित होना चाहिए, क्योंकि वह पश्चिमी संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ संस्कृति मानता था। उसके लिए वह स्वाभाविक भी था और यह उसकी अपने देश के प्रति भक्ति का सूचक भी था। उसने वही किया जो उसे करना चाहिए था। किसी भी संस्कृति को नष्ट करना है तो उस देश की भाषा को नष्ट कर देना चाहिए यह सभी जानते हैं। परंतु स्वतंत्रता के 78 वर्षों बाद हम क्या कर रहे हैं? हम क्यों अब तक भाषा के रूप में पराधीन है? हम इतने पंगु हैं कि अपनी भाषा में ज्ञान और विज्ञान की बातें कर सकने में भी असमर्थ हैं! हिंदी तो हमारी सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर का महत्वपूर्ण माध्यम है, हमारी पहचान हिंदी से ही है। स्वतंत्र भारत में हिंदी अवश्य राजनीति की बेदी पर बलि हो गई परंतु हिंदी प्रेमियों ने अपना साहस नहीं छोड़ा। वह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, चिकित्सा अन्य क्षेत्रों में तकनीकी शब्दावलियों का निर्माण करते रहे और हिंदी की शब्दावली के विकास के लिए कार्य करते रहे। उसका परिणाम यह है कि आज हम किसी भी प्रकार की तकनीकी शब्दावली के लिए रंक नहीं है। इसके साथ ही हिंदी के अंदर सामंजस्य की प्रबल क्षमता है बहुत सारी भाषाओं के शब्दों को इसने आत्मसात किया है, अर्थात यदि हम चाहे तो हमें अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए किसी अन्य भाषा पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है, बस हमारे अंदर अपनी भाषा के प्रति प्रेम होना चाहिए। आज का युग वैश्वीकरण का युग है। आज ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में नित्य नवीन शोध हो रहे हैं उन नवीन शोधों को भाषा और संवाद के माध्यम से समस्त विश्व तक पहुँचाना संपूर्ण विश्व की प्रगति

के लिए न सिर्फ महत्वपूर्ण ही है बल्कि आवश्यक भी हैं। यह संदेश अगर अपनी भाषा में पहुँचे तो कितना ही अच्छा हो! आज विश्व के अनेक देश अपनी ही भाषा में शोध करके विश्व स्तर पर अपना नाम कर रहे हैं इसके लिए चीन सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, हम फ्रांस और डेनमार्क से भी यह उदाहरण ले सकते हैं। यही विचार करते हुए माननीय कुलपति जी प्रो० (डॉ०) पी० के० भारती जी के संरक्षण में इस शोध पत्रिका को प्रकाशित करने का लक्ष्य बना। माननीय कुलपति जी ने इसमें हर प्रकार से सहयोग दिया और हमारा आत्म बल बढ़ाया। हमारी इस शोध पत्रिका का उद्देश्य हिंदी भाषा में प्रकाशित शोधपत्रों को एक मंच प्रदान करना है, ताकि हमारे शोधकर्ताओं और विद्वानों के महत्वपूर्ण कार्यों को व्यापक पाठकों तक पहुँचाया जा सके। यह पत्रिका विभिन्न विषयों पर आधारित शोध कार्यों को संकलित करती है, जिनमें कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, चिकित्सा, और कानून जैसे क्षेत्र शामिल हैं। हिंदी में प्रकाशित यह शोध पत्रिका न केवल हिंदी भाषी समुदाय को अपने शोध कार्यों को प्रकाशित करने का अवसर प्रदान करेगी, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक और भाषाई धरोहर को भी संजोए रखेगी। इस पत्रिका के माध्यम से, हम चाहते हैं कि शोधकर्ता अपनी दृष्टि और विचारों को साझा करें और एक संवाद स्थापित करें, जो न केवल ज्ञान के विस्तार में सहायक हो, बल्कि समाज की प्रगति में भी योगदान दे।

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अपने विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर पी० के० भारती जी की बहुत–बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मेरी योजना को साकार स्वरूप देने के लिए हर संभव सहयोग किया। माननीय प्रति कुलपति प्रोफेसर सतीश कुमार शर्मा, कुलसचिव प्रोफेसर एस० पी० पांडेय तथा अन्य गणमान्य संकाय सदस्यों ने भी इसमें विशेष सहयोग दिया। इसके साथ ही मैं प्रोफेसर उमापति दीक्षित जी, अध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा की भी बहुत आभारी हूँ जो समय–समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव हमें देते रहे हैं। डॉ० अखिलेश कुमार मिश्रा (प्रशासनिक अधिकारी), डॉ० जयंती प्रसाद नौटियाल जी, प्रो० विभा अग्निहोत्री, प्रो० सत्या मिश्रा जी के बहुमूल्य सुझावों से इस पत्रिका को एक आकार देने में सफलता मिली। अतः मैं आप सभी का आभार अभिव्यक्त करती हूँ। मैं प्रकाशक प्रो० वीरेंद्र पाल सिंह जी की बहुत–बहुत आभारी हूँ जिन्होंने दिन–रात एक करके इस प्रकाशन कार्य और उससे संबंधित अन्य औपचारिकताओं को समय पर पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैं उन विद्वानों की भी बहुत–बहुत आभारी हूँ जिन्होंने हिंदी भाषा में प्रपत्र देने में हमारा पूर्ण सहयोग किया।

अंत में मैं अपनी सह–संपादकीय टीम को आभार अव्यक्त करते हुए आपको यह आश्वासन देती हूँ कि हमारी टीम एक समृद्ध और गुणात्मक सामग्री प्रस्तुत करने के लिए प्रतिबद्ध है हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग और योगदान हमारे इस कार्य को सफल बनाने में सहायक सिद्ध होगा। यह पत्रिका निश्चित ही नवीन शोधार्थियों और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

आपकी
डॉ० शोभा त्रिपाठी
प्रधान संपादक

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 3–6

ग्लोकल दृष्टिकोण से शिक्षा का सार

अर्चना*
गुरदीप पंवार**

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में "ग्लोकल" दृष्टिकोण (ग्लोबल + लोकल) महत्वपूर्ण हो गया है। यह दृष्टिकोण वैश्विक ज्ञान और स्थानीय संस्कृति का सम्मिलन है, जो शिक्षा को अधिक प्रभावी और समृद्ध बनाता है।

ग्लोकल दृष्टिकोण का परिचय

ग्लोकल दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य वैश्विक ज्ञान को स्थानीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ संयोजित करना है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षण सामग्री और पद्धतियाँ ऐसी होनी चाहिए जो वैश्विक मानकों के साथ तालमेल बिठा सकें, लेकिन साथ ही स्थानीय संस्कृति, भाषा, और परंपराओं का भी सम्मान करें। (शर्मा, ए० 2020).

वैश्विक शिक्षा का महत्व

वैश्विक दृष्टिकोण से शिक्षा व्यक्ति को व्यापक दृष्टिकोण और ज्ञान प्रदान करती है। यह छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, विचारधाराओं, और तकनीकी विकास से अवगत

---

*अर्चना, सहायक प्रोफेसर, शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह, उत्तर प्रदेश
**गुरदीप पंवार, सहायक प्रोफेसर, पैरामेडिकल विभाग, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश

कराती है। वैश्विक शिक्षा से व्यक्ति में सहिष्णुता, समग्र दृष्टिकोण, और समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित होती है। (कुमार, एस० 2018).

स्थानीय शिक्षा का महत्व

स्थानीय शिक्षा स्थानीय भाषाओं, संस्कृतियों, और परंपराओं का संरक्षण करती है। यह छात्रों को अपने समुदाय और परिवेश के प्रति जागरूक बनाती है। स्थानीय शिक्षा से समाज में एकता और सामूहिकता की भावना मजबूत होती है, और स्थानीय समस्याओं का प्रभावी समाधान निकलता है।

ग्लोकल दृष्टिकोण के लाभ

सांस्कृतिक संवर्धन

ग्लोकल दृष्टिकोण से शिक्षा में सांस्कृतिक संवर्धन होता है। यह दृष्टिकोण छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे वे अपनी संस्कृति के साथ–साथ अन्य संस्कृतियों का भी सम्मान करना सीखते हैं।

वैश्विक नागरिकता

ग्लोकल दृष्टिकोण से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र वैश्विक नागरिक बनते हैं। वे वैश्विक मुद्दों के प्रति जागरूक होते हैं और उनमें वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए काम करने की भावना विकसित होती है (कुमार, वी० 2018)।

समग्र विकास

ग्लोकल दृष्टिकोण से शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास में सहायक होती है। यह शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक विकास के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर भी बल देती है।

ग्लोकल शिक्षा की चुनौतियाँ

पाठ्यक्रम की संरचना

ग्लोकल दृष्टिकोण को अपनाने के लिए शिक्षा के पाठ्यक्रम को पुनः संरचित करने की आवश्यकता होती है। यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है क्योंकि इसमें विभिन्न संस्कृतियों और विचारधाराओं को संतुलित करना होता है (राय, एस० 2020)।

शिक्षक प्रशिक्षण

ग्लोकल दृष्टिकोण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। उन्हें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, और शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान होना चाहिए (मिश्रा, डी० 2019)।

संसाधनों की उपलब्धता

ग्लोकल दृष्टिकोण को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। इसमें शैक्षिक सामग्री, तकनीकी साधन, और वित्तीय संसाधन शामिल हैं (सेन, टी० 2021)।

ग्लोकल दृष्टिकोण का उदाहरण

फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली

फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली को ग्लोकल दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यहाँ शिक्षा प्रणाली में वैश्विक मानकों का पालन किया जाता है, लेकिन स्थानीय संस्कृति, भाषा, और आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाता है (गुप्ता, पी० 2019)।

भारत में ग्लोकल शिक्षा की पहल

भारत में भी ग्लोकल दृष्टिकोण को अपनाने के लिए विभिन्न पहल की जा रही हैं। कुछ संस्थान और विश्वविद्यालय ग्लोकल दृष्टिकोण के तहत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जहाँ वैश्विक और स्थानीय दोनों प्रकार की शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाता है। (जोशी, एम० 2017).

निष्कर्ष

ग्लोकल दृष्टिकोण से शिक्षा एक संतुलित और समग्र शिक्षा प्रणाली प्रदान करती है, जो वैश्विक ज्ञान और स्थानीय संस्कृति का सम्मिलन है। यह दृष्टिकोण छात्रों को व्यापक दृष्टिकोण और समग्र विकास की दिशा में अग्रसर करता है। ग्लोकल शिक्षा से न केवल व्यक्ति का विकास होता है, बल्कि समाज और राष्ट्र का भी समग्र विकास संभव होता है।

इस दृष्टिकोण को अपनाने के लिए शिक्षा प्रणाली में आवश्यक परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी और सशक्त हो सके। ग्लोकल

दृष्टिकोण से शिक्षा न केवल छात्रों को बेहतर नागरिक बनाती है, बल्कि उन्हें वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, एस० (2018). "वैश्विक शिक्षा का महत्व और स्थानीय शिक्षा की भूमिका". भारतीय शिक्षा पत्रिका, खंड 34, अंक 2, पृष्ठ 123–134.

शर्मा, ए० (2020). "ग्लोकल दृष्टिकोणः एक अध्ययन". अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा समीक्षा, खंड 22, अंक 1, पृष्ठ 45–59.

गुप्ता, पी० (2019). "फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली में ग्लोकल दृष्टिकोण का प्रभाव". शिक्षा और समाज, खंड 15, अंक 3, पृष्ठ 101–115.

जोशी, एम० (2017). "भारत में ग्लोकल शिक्षा की पहलः एक विश्लेषण". राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान, खंड 11, अंक 4, पृष्ठ 67–82.

दास, आर० (2021). "शिक्षा में ग्लोकल दृष्टिकोण का महत्व". शैक्षिक दृष्टिकोण, खंड 29, अंक 2, पृष्ठ 93–107.

कुमार, वी० (2018). "वैश्विक नागरिकता और शिक्षा". समाज और शिक्षा अध्ययन, खंड 7, अंक 1, पृष्ठ 55–69.

राय, एस० (2020). "ग्लोकल शिक्षाः चुनौतियाँ और समाधान". शिक्षा की नई दिशा, खंड 18, अंक 3, पृष्ठ 89–103.

मिश्रा, डी० (2019). "ग्लोकल दृष्टिकोण और शिक्षक प्रशिक्षण". शिक्षण कला और विज्ञान, खंड 12, अंक 2, पृष्ठ 78–92.

सेन, टी० (2021). "संसाधनों की उपलब्धता और ग्लोकल शिक्षा". अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा जर्नल, खंड 25, अंक 4, पृष्ठ 112–126.

सिंह, ए० (2022). "भारत में ग्लोकल दृष्टिकोणः एक समीक्षात्मक अध्ययन". शिक्षा और विकास पत्रिका, खंड 16, अंक 1, पृष्ठ 43–57.

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 7–12

मानवाधिकारों का आलोचनात्मक विश्लेषण

वंदना उप्रेती*

सारांश

मानव बुद्धिमान व विवेकपूर्ण प्राणी है और इसी कारण इसको कुछ ऐसे मूल अधिकार प्राप्त रहते हैं जिसे सामान्यतया मानव अधिकार कहा जाता है। चूँकि ये अधिकार उनके अस्तित्व के कारण उनसे सम्बन्धित रहते हैं अतः वे उनमें जन्म से ही निहित रहते हैं। इस प्रकार, मानव अधिकार सभी व्यक्तियों के लिये होते हैं चाहे उनका मूल वंश, धर्म, लिंग तथा राष्ट्रीयता कुछ भी हो। ये अधिकार सभी व्यक्तियों के लिये आवश्यक हैं क्योंकि ये उनकी गरिमा एवं स्वतंत्रता के अनुरूप है तथा शारीरिक, नैतिक, सामाजिक और भौतिक कल्याण के लिये सहायक होते हैं।

कीवर्डः मानवाधिकार, मौलिक अधिकार, जबरन श्रम, लिंग भेदभाव, अनैतिक तस्करी आदि।

मूल अधिकारों को मानवाधिकारों के रूप में शामिल करते हैं क्योंकि उन अधिकारों के बिना वर्तमान समाज में कोई भी व्यक्ति अस्तित्व में नहीं रह सकता। भारत जैसे सबसे बड़े लोकतांत्रिक समाज में मानवाधिकारों को हमारे संविधान में मौलिक अधिकारों और कुछ अन्य संबंधित अनुच्छेदों द्वारा प्रबल किया गया है। उन अनुच्छेदों के आधार पर हम कुछ कानून बनाते हैं जिन्हें हाल के दिनों में शामिल किया गया है जैसे कि जबरन श्रम, लिंग भेदभाव, अनैतिक तस्करी, और कुछ अन्य क्षेत्र। हस्ताक्षरकर्ता होने के नाते भारत मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम नामक एक अधिनियम बनाता है। बात यह है कि पूरा अध्ययन मानवाधिकार उल्लंघन और उससे संबंधित सामग्री पर आधारित विभिन्न लेखों, पत्रिकाओं, पुस्तकों और कुछ अन्य संबंधित सामग्रियों पर आधारित सैद्धांतिक विश्लेषण पर आधारित है। इस संबंध में अनिवार्यताएं भारत के संविधान में निहित मूल अधिकारों पर निर्भर करती हैं। मौलिक अधिकार हमारे जीवन को बनाए रखने

*प्रोफेसर, एन.एस.एन. पी.जी. कॉलेज, लखनऊ मो.– 7905078941

के लिए बहुत आवश्यक घटक बन गए हैं। यह न केवल हमारे संविधान में निर्दिष्ट है, बल्कि यूडीएचआर, आईसीसीपीआर और विभिन्न सम्मेलनों या प्रोटोकॉल में भी इसका उल्लेख किया गया है। इस प्रकाश में भारत में नागरिक की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए भारत विभिन्न महत्वपूर्ण कदम उठाता है। यूडीएचआर अपनी स्वयं की एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, हालाँकि इससे पहले वर्ष 1920 में आईएलओ ने श्रमिकों के अधिकारों पर सम्मेलनों की शुरुआत की थी जैसे कि जबरन श्रम के उन्मूलन और विवादों को हल करने के लिए यूनियनों और संगठनों का गठन करना और अधिकाँश देशों ने इस संबंध में कानून बनाए।

अध्ययन के उद्देश्य और लक्ष्य

यह अध्ययन मानव अधिकारों के घोर उल्लंघन पर आधारित विभिन्न मुद्दों पर एक आलोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस संबंध में निम्नलिखित उद्देश्यों पर विचार किया गया है

1. भारत में मानवाधिकारों के संरक्षण की स्थापना के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. भारत में मानवाधिकारों पर शिक्षा के अधिकार और अन्य प्रासंगिक कानूनों के लिए संवैधानिक ढांचे का अध्ययन करना।
3. भारत में व्यक्तियों के खिलाफ मानवाधिकारों के उल्लंघन की रक्षा के लिए विभिन्न सरकारी दृष्टिकोणों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

पूरा काम सैद्धांतिक शोध अध्ययन पर आधारित है। वर्णनात्मक विश्लेषण भारत में मानवाधिकारों से संबंधित विचारों का मूल्याँकन और विश्लेषण करने के लिए उपयोग किया जाने वाला प्रमुख उपकरण है।

साहित्य की समीक्षा

भारत के संविधान में मानवाधिकार पर एक संक्षिप्त व्याख्यान में सम्मानित वक्ता ने विभिन्न कानूनों के कार्यान्वयन द्वारा सामाजिक व्यवस्था के ढाँचे के बारे में प्रकाश डालने की कोशिश की है जिसके बिना सुव्यवस्थित सामाजिक जीवन संभव नहीं होगा। सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के विभिन्न दार्शनिकों का मानना है कि राज्य के निर्माण का उद्देश्य व्यक्तियों के अधिकारों को बनाए रखना और उनकी रक्षा करना है। अरस्तू के अनुसार, राज्य जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से अस्तित्व में आया और साथ ही अच्छे जीवन के लिए जारी है, लॉक का मानना था कि राज्य का उद्देश्य व्यक्ति के विकास

में बाधा डालने वाली बाधाओं को दूर करना है। इस प्रकार, राज्य के अस्तित्व को व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता की सुरक्षा के साथ पहचाना जाता है जो राज्य का मुख्य उद्देश्य है। समाज में समरसता के लिए व्यक्ति की गरिमा की रक्षा आवश्यक है, क्योंकि इसके उल्लघन से विशेष रूप से व्यक्ति पर और सामान्य रूप से समाज पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ अधिकारों का हकदार है जो मानव अस्तित्व में निहित हैं। ऐसे अधिकारों का लिंग, नस्ल, जाति, जातीयता, धर्म आदि के आधार पर उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। इन्हें मानवाधिकार कहा जाता है। मानवाधिकारों को मूल अधिकार, मौलिक अधिकार, प्राकृतिक अधिकार या अंतर्निहित अधिकार भी कहा जाता है। मानवाधिकार की अवधारणा कोई नई घटना नहीं यह विकास के विभिन्न चरणों से गुजरा है और वर्तमान समय की अवधारणा बनने में लम्बा समय लगा है। इन अधिकारों को सभी प्राचीन समाजों में स्थान प्राप्त था, हालाँकि इन्हें अलग–अलग नामों से संदर्भित किया जाता था, उन अधिकारों में नागरिक अधिकार, स्वतंत्रता और सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकार भी शामिल है। शोधकर्ता ने यह भी उल्लेख किया कि मानवाधिकारो की सुरक्षा एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास और वृद्धि के लिए आवश्यक है यह एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मुद्दा है और मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय साधन स्थापित किए गए हैं।

भारत में मानवाधिकार ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य इस लेख में शोधकर्त्ता ने मानवाधिकारों के इतिहास पर प्रकाश डाला है जो प्रारंभिक मानव के विकास और विकास के समकालीन है। मानवाधिकारों की अवधारणा जैसा कि आज समझा जाता है, सदियों पहले विकसित हुई है। शोधकर्त्ता ने यह भी बताया कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से मानवाधिकारों की अवधारणा, यह देखा जाएगा कि यह न तो पूरी तरह से पश्चिमी है और न ही आधुनिक है, बल्कि यह उन मूल्यों का क्रिस्टलीकरण है जो मानव जाति की साझी विरासत हैं। उनके अनुसार कौटिल्य ने अपने प्रसिद्ध और अमर कार्य अर्थशास्त्र में युद्धबंदियों के मानवाधिकारों को परिभाषित और वर्णित किया है। प्राचीन काल में मानवाधिकारों को नागरिक अधिकार, राजनीतिक अधिकार, व्यक्तिगत अधिकार, कानूनी अधिकार, प्राकृतिक या दैवीय अधिकार, आर्थिक और सामाजिक अधिकार के रूप में सुधारित किया गया था। मानव अधिकारों की अवधारणा सबसे पहले प्राचीन ग्रीस और रोम में परिलक्षित हुई, जहाँ यह ग्रीक स्टोइकिज्म के पूर्व आधुनिक प्राकृतिक कानून सिद्धांत से निकटता से जुड़ी हुई थी। ईश्वरीय कानून और स्वतंत्रता का ग्रीक विचार और रोमन कानून का अभ्यास आज के मानवाधिकारों के विचारों के केंद्र में हैं। उनके अनुसार 18वीं शताब्दी के दौरान, तथाकथित ज्ञानोदय के युग में, मानवीय तर्क का बढ़ता हुआ विश्वास और निश्चित रूप से, मानवीय मामलों की पूर्णता ने इसे और अधिक व्यापक बना दिया। उसी समय इंग्लैंड में जॉन लॉक, फ्रांस में मॉटेस्क्यू वोल्टेयर और जीन जैक्स रूसो और अन्य लोगों ने प्राकृ

तिक कानून की श्रेष्ठत्ता साबित करने की कोशिश की। प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत ने अंग्रेजी, फ्रांसीसी और अमेरिकी क्रांतियों को प्रभावित किया। शोधकर्त्ता ने इंग्लैंड की शानदार क्रांति 1688 और उसके परिणामस्वरूप 1689 के अधिकार विधेयक के अन्य जीवंत उदाहरणों का भी उल्लेख किया है, साथ ही क्रांतिकारी आंदोलन की लहर के लिए तर्क प्रदान किया जिसने पश्चिम को प्रभावित किया, विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका और फ्रांस में। पेंसिल्वेनिया घोषणा (1776) अमेरिकी घोषणा (1787) फ्रांसीसी घोषणा (1789) जैसे कुछ ऐतिहासिक ग्रंथों ने समकालीन सामाजिक–राजनीतिक स्थितियों के बौद्धिक परिवेश को प्रतिबिंबित किया, जिससे राजनीतिक निरंकुशता के खिलाफ संघर्ष शुरू हुआ। एक प्रमुख मानवाधिकार विद्वान मौरिस क्रैन्स्टन के शब्दों में, यह स्पष्ट है कि ये संघर्ष इसलिए हुए क्योंकि निरंकुशता ने पुरुषों को अपने अधिकारों का दावा करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो उन्हें अस्वीकार कर दिए गए थे। । वास्तव में, हेनरी डेविड थोरो पहले दार्शनिक थे जिन्होंने अपने ग्रंथ में मानव अधिकार् शब्द का प्रयोग किया। महात्मा गाँधी ने कहारू एक का सम्मान, पूरे ब्रह्मांड पर समान रूप से लागू होता है। सभी मानव जाति सार रूप में एक जैसी है, इसलिए जो एक के लिए संभव है वह सभी के लिए संभव है। द्वितीय विश्व युद्ध की भयावहता ने अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में आधुनिक मानवाधिकार आंदोलन के जन्म और मान्यता को जन्म दिया। 1941 में राष्ट्रपति रूजवेल्ट की चार स्वतंत्रताओं भाषण और अभिव्यक्ति, विश्वास, भय और अभाव से मुक्ति को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य मानकों के रूप में घोषित करना, साथ ही एनजीओ के कार्य इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण विकास थे। लेकिन यह 1945 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना और मानवाधिकारों की प्रतिबद्धता के लिए बाद की अंतर्राष्ट्रीय सार्वभौमिक घोषणा (यूडीएचआर) थी।

1. गरीबी की चुनौतीः मानव अधिकार ईश्वर की सभी संतानों के लिए हैं, चाहे वे गरीब हों या अमीर और किसी भी व्यक्ति की त्वचा का रंग कुछ भी हो। आज, लाखों लोग स्थानिक गरीबी के कारण अभाव, अपमान और बर्बादी से पीड़ित हैं। इसके कई कारण हैं, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली का प्रदर्शन एक और मूल कारण है। जातीयता, विश्वास और मूल्य प्रणाली में अंतर कुछ स्थितियों में सहायक कारक हो सकते हैं। गरीबी में कमी के लिए मानवाधिकार दृष्टिकोण एक साधारण विश्वास पर आधारित है

2. महिलाओं के लिए न्याय और सशक्तिकरण की चुनौतियाँः दुनिया के कई हिस्सों में महिलाओं के खिलाफ किए जाने वाले अन्याय मानवीय विवेक को झकझोर देने वाले हैं। दुनिया के भविष्य के रणनीतिक विश्लेषक हमें बताते हैं कि जब तक हम महिलाओं को सशक्त नहीं बनाते और उन्हें न्याय नहीं देते, तब तक संघर्ष, अविकसितता और अन्याय की समस्याओं पर कोई असर पड़ने की संभावना नहीं है।

3. लोकतंत्र और कानून के शासन की चुनौतियाँः मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा गर्व से घोषणा करती है कि लोगों की इच्छा सरकारों के लोग शासन की प्रक्रियाओं में सार्थक और समान रूप से भाग लेने में सक्षम हैं, वे समाज है जिनके विकास, गैर भेदभाव और न्याय की बेहतर संभावना है।

4. नए खतरों की चुनौतियाँः आतंकवाद और जैव प्रौद्योगिकी आतंकवादी मानवाधिकारों पर गंभीर हमले करते हैं और दुनिया के कुछ हिस्सों में आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष का इस्तेमाल मानवाधिकारों के हनन के लिए किया जा रहा है। इस क्षेत्र में जाचे जाने वाले महत्वपूर्ण मुद्दे है? आतंकवाद से लड़ने जिसकी सुरक्षा परिषद ने माँग की है

5 वैश्विक स्तर पर लोगों की यात्रा की चुनौतियाँः आज की दुनिया में, लोग वैश्विक स्तर पर यात्रा कर रहे हैं चाहे वे शरणार्थी हो, विस्थापित व्यक्ति हों या आर्थिक प्रवासी। लोगों की सुरक्षा के लिए एक वैश्विक व्यवस्था है।

6. असमानता की चुनौतियाँः जातीय, नस्लीय, लैंगिक, सामाजिक और अन्य असमानताएँ दुनिया में व्यापक है। इस उप–आयोग को मूल रूप से भेदभाव की रोकथाम और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर उप आयोग नाम दिया गया था। आप दुनिया में असमानता पर कैसे ध्यान केंद्रित रखेंगे और डरबन सम्मेलन के बाद आप क्या भूमिका निभाएँगे? नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन पर समिति और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव के उन्मूलन पर समिति के साथ आपका क्या संबंध है या होना चाहिए।

निष्कर्ष

अपने संबोधन में महासचिव गुटेरेश ने मानवाधिकार से जुड़े सभी मुद्दों पर संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने में परिषद की अहम भूमिका को रेखांकित किया. युवाओं, मूल निवासियों, प्रवासियों और शरणार्थियों का विशेष रूप से जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि परिषद के दरवाजों के बाहर बहुत सी आवाजें अपने अधिकार माँग रही हैं मानवाधिकारों के नजरिए से अहम कई अन्य क्षेत्रों में हुई उल्लेखनीय प्रगति पर जानकारी साझा करते हुए यूएन महासचिव ने कहा, एक अरब से ज्यादा लोगों को एक पीढ़ी में ही अत्यधिक गरीबी से बाहर लाने में सफलता मिली है. दो अरब से अधिक लोग अब बेहतर साफ–सफाई में रह रहे हैं और ढाई अरब लोगों के पास पीने का स्वच्छ पानी है। साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर में 60 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आई है।

लेकिन चुनौतियों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए महासचिव गुटेरेश ने जोर देकर कहा कि लैंगिक असमानता अब भी बनी हुई है। महिलाओं और लड़कियों को अब भी हर दिन असुरक्षा, हिंसा और मानवाधिकारों के हनन का सामना करना पड़ता है. उन्होंने कहा

कि कई अदृश्य बाधाएँ उनके रास्ते में आती हैं. आर्थिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में खाई में की पाटने में दो सौ साल का समय लगेगा. मैं ऐसी दुनिया को स्वीकार नहीं कर सकता जो मेरी पोतियों को कहे कि आर्थिक समानता हासिल करने के लिए उनकी पोतियों की पोतियों को हमारी दुनिया प्रतीक्षा नहीं कर सकती।

मानव अधिकार को समाज में व्यक्तियों के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास के लिए आवश्यक होने के कारण निश्चित रूप से संरक्षित किया जाना चाहिए और सभी व्यक्तियों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए। संरक्षण की आवश्यकता राज्यों की सरकारों द्वारा मनुष्यों के क्रिया–कलापों पर नियंत्रण में वृद्धि के कारण उत्पन्न हुई है, जिसे किसी भी तरह वांछनीय नहीं माना जा सकता। मनुष्य की ओर से उनके अधिकारों के सम्बन्ध में संचेतना भी राज्यों द्वारा संरक्षण को आवश्यक बना दिया है। यह महसूस किया गया है कि सभी विधियों का कार्य, चाहे वे राष्ट्रीय विधि के नियम हों या दुनिया भर में मानवाधिकारों के लिए हुए संघर्षों और उनमें मिली सफलताओं ने ही हमें बदलाव लाने में विश्वास रखने और उस दिशा में प्रयास करना मानवाधिकार हमें प्रेरित करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

हनुम, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानून में मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा की स्थिति।

अनंत कालसे (2016) 'मानवाधिकार' पर एक संक्षिप्त व्याख्यान भारत का संविधान'।

अमरतीश कौर (2017) भारत में मानवाधिकारों का संरक्षण एक समीक्षा, जामिया लॉ जर्नल, 21।

राजीव धवन, संघर्ष के रूप में कानून भारत में सार्वजनिक हित कानून, इंडियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल लॉ (खड 36, 1994) 307–317।

सुनील देष्टा एवं किरण देष्टा। ''जीवन के अधिकार का दर्शन, कठोरता से लचीलेपन की ओर एक आंदोलन'' सिविल और सैन्य कानून जर्नल, वॉल्यूम 31: 3. 123. (जुलाई सितम्बर। 1995) मानवाधिकार पर वाचा कानून और समसामयिक समस्याएँ, 14 (3), 413–429।

डेविडसन, जे. एस. (1989)। नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के पहले वैकल्पिक प्रोटोकॉल के तहत मानवाधिकार समिति की प्रक्रिया और अभ्यास। कैंटरबरी एल. रेव., 4, 337.।

हेफेमैन, एल. (1997)। मानव अधिकारों पर यूरोपीय कन्वेंशन और नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के तहत व्यक्तिगत याचिका प्रक्रियाओं का एक तुलनात्मक दृश्य। मानवाधिकार त्रैमासिक, 19(1), 78–112.।

क्विगली, जे. (1993). आपराधिक कानून और मानवाधिकाररू नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के संयुक्त राज्य अमेरिका के अनुसमर्थन के निहितार्थ। हार्व. गुंजन। आरटीएस. जे., 6, 59।

लॉकवुड, जे० ई० (1948)। मानवाधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध और घोषणा का मसौदा। अमेरिकन जर्नल ऑफ इंटेमेशनल लॉ, 42(2), 401–405।

बुर्जेथल, टी० (1988)। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून और संस्थाएँ, उपलब्धियाँ और संभावनाएँ वॉश एल. रेव., 63, 1.।

चिंकिन, सी० (1998)। अंतर्राष्ट्रीय कानून और मानवाधिकार मानवाधिकार पचास वर्षः एक पुनर्मूल्याँकन, 105, 118–9।

क्लेन, ई० (1999) 'नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के तहत व्यक्तिगत क्षतिपूर्ति दावेरू मानवाधिकार समिति का अभ्यास' राज्य उत्तरदायित्व और व्यक्ति में पृ. 27–41)।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 13–16

भारत में हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव एवं विकास

रीना पंत*

सारांश

जिस प्रकार ज्ञान प्राप्ति की उत्कंठा एवं चिन्तन ने भाषा को जन्म दिया, ठीक उसी प्रकार समाज में एक–दूसरे की कुशलक्षेम जानने की इच्छाशक्ति ने पत्रों के प्रकाशन को बढ़ावा दिया। पत्रकारिता जनसेवा का माध्यम है। इससे मानव जीवन की विविधताएँ एवं नित्यप्रति होने वाली घटनाओं के विषय में पता चलता है। पत्रकारिता मानवीय संवेदना का दर्पण है, जिसमें समाज एवं देश की घटनाएँ एवं सूचनाएँ प्रतिबिम्बित होती हैं। संक्षिप्त में कहा जाए तो ''किसी विचार अथवा संदेश को अधिकांशतः एवं सुदूर जन–जन तक किसी माध्यम द्वारा प्रसारित करना एवं समय तथा समाज के सन्दर्भ मे सजग रहकर जनमानस में दायित्वबोध उत्पन्न कराना एवं समाज में घटित होने वाली दैनिक घटनाओं तथा उनसे सम्बन्धित विचारों से नागरिकों को अवगत कराने की कला ही पत्रकारिता है''। पत्रकारिता को आँग्ल भाषा में जर्नलिज्म कहा जाता है, जिसका आशय है 'दैनिक' अर्थात् जिसमें दैनिक कार्यों एवं सरकारी बैठकों का विवरण होता है। ऐसा माना जाता है कि पत्रकारिता मानव चेतना, भाषा एवं सच्चे बयान की सम्मिलित संस्तुति है। सच्चाई + चेतना + भाषा + विधिवत् संप्रेषण = पत्रकारिता। सच्चाई व्यक्त करने के साहस के बिना पत्रकारिता असम्भव है। बिना चेतना के पत्रकारिता जन्म नहीं ले सकती है। भाषा के बिना पत्रकारिता की कल्पना करना व्यर्थ है। विधिवत् संप्रेषण अथवा संचार अर्थात् किसी जानकारी, भाव या विचार को दूसरे तक पहुँचाना एवं दूसरे के भाव या विचार की जानकारी प्राप्त न हो तो पत्रकारिता को अंजाम तक नहीं पहुँचाया जा सकता है।

प्रस्तावना

पत्रकारिता का जन्म और विकास बेहद रोचक रहा है। मानवीय जीवन में पत्रकारिता का बड़ा ही महत्व रहा है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीय पत्रकार देश की स्वाधीनता के लिए संघर्षरत् रहे और राष्ट्रीयता का प्रचार–प्रसार करना अपना परम कर्तव्य मानते थे। प्रारम्भ से ही हिन्दी पत्रकारिता अपने उच्च आदर्शों के लिए जानी जाती रही है एवं इसके लिए हमेशा तत्पर भी रही है। पत्रकारिता समाज का प्रतिबिम्ब है जो समाज में तथा जीवन में होने वाली घटनाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है।

*रीना पंत, शोध छात्रा (हिंदी), ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान पत्रकारिता का योगदान अविस्मरणीय रहा है। भारतीय पत्रकारिता एक ऐसा विशाल एवं आत्म–प्रेरित संस्थान है, जिसका उद्‌भव तथा विकास देश की कल्पना, संघर्षों एवं विचारों से गहरा सम्बन्ध रखता है। स्वतन्त्रता से पूर्व पत्रकारिता का मूल लक्ष्य देश की आजादी के लिये जनमानस को प्रोत्साहित करना था। स्वतन्त्रता के बाद पत्रकारिता का लक्ष्य देश के निर्माण और समाज में एकता स्थापित करना तथा आर्थिक, सामाजिक विकास में जनता की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना है। यह तभी सम्भव होगा जब खबरों में पारदर्शिता और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता होगी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी पत्रकारिता ने अपने विस्तार में वृद्धि करने के साथ–साथ भारतीय राजनीतिक, सांस्कृतिक, समाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में पत्रकारिता का उद्‌भव एवं विकास

उद्‌भव का अर्थ उत्पत्ति, प्रादुर्भाव, उपज, जन्म अथवा आरम्भ होता है। भारत में सर्वप्रथम लार्ड विलियम बेंटिक के नेतृत्व में प्रेस की स्थापना की गयी। 29 जनवरी सन् 1780 ई0 मे 'जेम्स ऑगस्ट हिक्की' द्वारा 'हिक्की गजट' नामक आँग्ल भाषा में साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया गया, जिसे कलकत्ता जर्नल एडवरटाईजर अथवा बंगाल गजट के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत में प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र ने ही पत्रकारिता की सही भूमिका की ओर संकेत किया था। इस पत्र द्वारा हिक्की ने पत्रकारिता की उज्जवल परम्परा की प्रथम ईंट रखी थी। इस पत्र के प्रकाशन के पश्चात् भारतीयों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए एक नवचेतना जागृत हुई एवं वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए उग्र हो उठे। 'हिक्की गजट' से प्रभावित होकर भारत में भारतीय पत्रकारिता को प्रारम्भ करने वाले राष्ट्रीय नव–जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय थे। उन्होंने सन् 1816 में बंगाल गजट नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। यह भारत का प्रथम समाचार पत्र था एवं आँग्ल भाषा में प्रकाशित किया जाता था, जिसके संपादक श्री गंगाधर भट्‌टाचार्य थे। सन् 1821 में संवाद कौमुदी, जिसका मुख्य उद्देश्य सती प्रथा का अन्त एवं स्त्री शिक्षा का प्रसार करना था एवं सन् 1825 में मिरात–उल–अखबार नामक उर्दू पत्र का प्रकाशन किया। इसके बाद तो जैसे भारतीयों में आजादी पाने की लहर सी दौड़ गयी एवं 30 मई सन् 1826 में पं0 जुगलकिशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ता से भारत का प्रथम हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र 'उदंड मार्तण्ड' प्रकाशित किया गया, जो कि हर मंगलवार को प्रकाशित किया जाता था। सीमित पाठकों, सरकारी सहायता के अभाव एवं आर्थिक संकट के चलते 04 दिसम्बर सन् 1827 को यह पत्र हमेशा के लिए अस्त हो गया। इस पत्र के अन्तिम अंक में संपादक द्वारा अंतिम पंक्ति लिखी गयी :–

''आज दिवस लौं उग चुक्यौं मार्तण्ड उदन्त,
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।''

'उदंड मार्तण्ड' के उपरान्त 10 मई सन् 1829 में राजा राममोहन राय द्वारा कलकत्ता से 'बंगदूत', सन् 1845 में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द द्वारा उत्तर प्रदेश से 'बनारस अखबार', सन् 1846 में कलकत्ता से 'इण्डियनसन', सन् 1848 में इन्दौर से 'मालवा अखबार', सन् 1850 में 'सुधाकर', सन् 1852 में 'पयामे आजादी' एवं 'बुद्धिप्रकाश' आदि समाचार पत्र प्रकाशित किये गये, जिन्होंने भारतीय समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया।

सन् 1857 के विद्रोह के समय समाचार पत्र जनता की भानवाओं को प्रतिबिम्बित कर रहे थे एवं उस समय भारतीय पत्रकारों के सम्मुख दो कठोर मोर्चे थे। एक ओर देशवासियों की मानसिक खिन्नता तथा दूसरी ओर सरकारी दमन–नीति। इस संक्रांति ने भारतीय पत्रकारों को झकझोर कर रख दिया और उनके भीतर एक नई क्रांति का जागरण हुआ। भारतीय पत्रकारिता को अपनी प्रथम यात्रा के चरण में ही अनेक यातनाओं एवं कठिनाइयों से जूझना पड़ा परन्तु उस समय के पत्रकारों के अपने देश को आजाद कराने के दृढ़ निश्चय के सामने सरकार भी लाचार हो गयी और उन्हें उनके मार्ग से डिगा न सकी।

सन् 1857 की क्रान्ति से लेकर सन् 1947, भारत की आजादी तक भारतीय पत्रकारों ने अनेक समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का सम्पादन किया, जिन सभी का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनमानस में स्वतन्त्रता की भावना को जागृत करना था।

उस युग की कुछ पंक्तियाँ आज भी याद की जाती हैं। पं0 दशरथ प्रसाद द्विवेदी द्वारा स्वदेश नामक पत्र में रचित पंक्ति है :–

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

श्री माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा 'कर्मवीर' नामक पत्रिका में लिखा गया है :–

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।।

डॉ. इकबाल की निम्नलिखित पंक्तियाँ सार्थकता प्राप्त करती हैं :–

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं इसके यह गुलिस्ताँ हमारा।।
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा।।

कुछ बात है जो हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।।

निष्कर्ष

हिन्दी पत्रकारिता की यात्रा भारतीय राष्ट्रीयता के उद्भव एवं विकास से सम्बद्ध है। हिन्दी के सभी पत्र ऋग्वेद के 'यतेमहि स्वराज्ये' (हम स्वराज्य के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे) के उद्घोषक रहे हैं। अन्याय, अज्ञान, उत्पीड़न के संहारक पत्रों ने पाठको को स्वतन्त्रता का पथ दिखलाया एवं उन्हें हमेशा आगे बढ़ते रहने का मंत्र दिया। हिन्दी पत्रकारिता का जन्म पराधीन काल की जटिल चुनौतियों एवं विपरीत परिस्थितियों के बीच हुआ। उस समय के पत्रकार स्वयं के स्वार्थ के लिए पत्रकारिता से नहीं जुड़े, उनके उच्च आदर्शों ने उन्हें पत्रकारिता की ओर अग्रसारित किया। सन् 1920 से 1947 का युग हिन्दी पत्रकारिता के विकास का क्रान्ति–काल युग माना जाता है। यह वह युग था, जब स्वतन्त्रता आन्दोलन उच्च से उच्चतम् स्तर पर था। यह क्रान्ति–काल युग हिन्दी–पत्रकारिता का स्मरणीय युग है। पत्रकारिता का कार्य सिर्फ समाज को आईना दिखाना ही नहीं बल्कि समाज में जागरूकता लाना भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

गुप्ता, आर0के0 (2012) हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास एवं विकास, नेहा पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर, पृ. 19।

चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद (2017) हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, पृ. 295।

जैन, संजीव कुमार पत्रकारिताः सिद्धांत एवं स्वरूप, भोपालः कैलाश पुस्तक सदन, पृ. 93।

तिवारी, अर्जुन (2023) हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन पृ. 211, 225, 371।

जैन, रमेश (2019) हिन्दी पत्रकारिताः इतिहास एवं संरचना, प्वॉइंटर पब्लिशर्स, पृ. 65।

मिश्र, कृष्ण बिहारी हिन्दी पत्रकारिताः जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण–भूमि, कलकत्ताः भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 17–22

रामचरित मानस का सार्वभौमिक संदेश

ज्ञान धनुकचंद*

रामचरित मानस का विश्व साहित्य में एक अद्वितीय स्थान है और इसका संदेश सार्वभौमिक और शाश्वत है। यह अमर महाकाव्य एक आदर्श जीवन के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा है, सामाजिक व्यवस्था की बेहतर समझ के लिए एक मानक और राज्य के अच्छे शासन के लिए एक मजबूत सलाह है। यद्यपि इसे हजारों साल पहले लिखा गया था तथापि मानस का संदेश आज भी आकर्षक, दिलचस्प, फलदायी और प्रासंगिक है। यह कहना गलत है कि मानस केवल हिंदुओं के लिए है। मानस में "हिंदू" शब्द का एक बार भी उल्लेख नहीं है। इसका संदेश पूरी मानवता को संबोधित है। यह पूरी दुनिया का है। इसने राष्ट्रीयता, नस्ल, धर्म, जाति, पंथ, रंग और भाषा की बाधाओं को पार कर लिया है। मानस ने सभी समुदायों के लोगों को जीवन के सभी पहलुओं में एक उच्च स्तर तक उठाया है। कवि और लेखक रामायण की कहानी को विभिन्न भाषाओं में बार–बार लिखने से थकते नहीं हैं। रामायण गैर–सांप्रदायिक है; यह एकता, शांति, प्रेम, दान, सहिष्णुता और निःस्वार्थ कर्म का उपदेश देती है। रामायण ने दुनिया भर के लोगों के मन और विचारों को प्रभावित करके आकार दिया है। पहले से ही, दुनिया की एक चौथाई से अधिक आबादी रामायण की शिक्षाओं से प्रभावित हो चुकी है। भविष्य में भी इसका प्रभाव समाप्त होने के कोई संकेत नहीं हैं। वैश्वीकरण के दौर में शांति, प्रगति, समृद्धि और एकता के लिए रामायण का योगदान अनदेखा नहीं किया जा सकता। रामायण जीवन के तरीकों, शांति, प्रेम, सहिष्णुता, भाईचारे और बुजुर्गों, आचार्यों और महिलाओं के प्रति सम्मान को दर्शाती है। इसका संदेश सार्वभौमिक है। रामायण मानवता के कल्याण के लिए है। श्री

---

*ज्ञान धनुक चंद एम.एस.के. (हिन्दू रत्न), पूर्व मुख्य शिक्षा अधिकारी, शिक्षा मंत्रालय, मॉरीशस सरकार।

राम, महाकाव्य के नायक, दूसरों के लिए जीते थे। जैसा कहा जाता है "जो दूसरों के लिए जीता है वह हमेशा के लिए जीवित रहता है।" इस प्रकार, श्री राम और रामायण अमर हैं। आधुनिक युग में नैतिक मूल्यों का पतन हम सभी के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। इसलिए, रामायण में निहित मूल्यों को प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। रामायण मानवता को श्री राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान और अन्य के अच्छे गुणों को आत्मसात करने का मार्ग दिखाती है। श्री राम, धर्म के प्रतीक; सीता, पवित्रता और पतिव्रता की प्रतीक; लक्ष्मण, निष्ठा, भक्ति, आज्ञाकारिता और सेवा का सच्चा चित्र; भरत, त्याग की मूर्ति, हनुमान, शक्ति, सेवा, बुद्धि, विनम्रता, भक्ति, वक्तृत्व और ब्रह्मचर्य की मूर्ति; और विभीषण और सुग्रीव सच्चे मित्र के रूप में– ये सभी रामायण के महान चरित्र दूसरों के लिए शाश्वत प्रेरणा के स्रोत हैं। वास्तव में, रामायण सर्वोच्च आदर्शों का दर्पण है। इस टूटे हुए रिश्तों के युग में, रामायण ईमानदारी, पवित्रता, प्रेम, आपसी समझ, सत्य, परोपकार और करुणा पर जोर दे रही है। ये सभी गुण व्यक्ति के आभूषण हैं। इस प्रकार, कोई भी इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकता कि रामायण का संदेश सार्वभौमिक है। हर कोई जीवन में समस्याओं का सामना करता है। कुछ के लिए, समस्याएं बाधाएं होती हैं और वे उन्हें दूर करने के लिए ईमानदार प्रयास नहीं करते, जबकि अन्य सफलता प्राप्त करने के लिए धर्म से हटकर अनुचित साधनों को अपनाना पसंद करते हैं। कुछ लोग समस्याओं का सामना करने के बजाय भाग जाते हैं। जीवन में बहुत कम लोग समस्याओं को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं, साहसपूर्वक उनका सामना करते हैं, सख्ती से धर्म का पालन करते हैं और दुनिया के लिए आदर्श बन जाते हैं। मानस के महान चरित्र राम पथप्रदर्शक और अनुकरणीय हैं। श्री कृष्ण ने भगवद गीता में अध्याय 3 श्लोक 21 में सही कहा है। वे कहते हैं:

"स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते" अर्थात "जो कुछ भी एक महान व्यक्ति करता है, वह अन्य पुरुष भी करते हैं। जो भी मानक वह स्थापित करता है, उसका अनुसरण दुनिया करती है।"

आधुनिक समाज में कई उपदेशक हैं लेकिन यह दुख की बात है कि वे जो उपदेश देते हैं उसे स्वयं नहीं मानते। राम उपदेश देते हैं और उसका पालन भी करते हैं। वे निःस्वार्थ उद्देश्य के बिना दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। उनके सभी कार्य शास्त्रों के अनुसार हैं। सत्यं वद, धर्म चर, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव। अर्थात सत्य बोलो, धर्म का पालन करो और माता, पिता और गुरु को भगवान के रूप में मानो, ये सभी आवश्यक गुण हैं जिन्हें श्री राम और सीता ने अपने जीवन में अपनाया। यही कारण है कि श्री राम और सीता हजारों साल बाद भी सम्मानित और पूजनीय हैं। आधुनिक समाज में टूटे हुए घरों की संख्या बढ़ रही है जिसमें माता–पिता तलाकशुदा या अलग हो गए हैं। इन दिनों एकल माता–पिता वाले बच्चे बहुत आम हैं। अक्सर लड़के

और लड़कियां माता–पिता से दूर रहना चाहते हैं। कभी–कभी माता–पिता को अपने बड़े हो चुके बच्चों से मिलने के लिए अपॉइंटमेंट लेनी पड़ती है। अधिकतर समय बच्चे अपने मोबाइल फोन, एसएमएस, टेलीविजन, दोस्तों, पार्टियों आदि में व्यस्त रहते हैं। ऐसे परिवार के सदस्यों को रामायण को पढ़ने और बार–बार पढ़ने की नितांत आवश्यकता है। हमें रामायण में पति और पत्नी, पिता और पुत्र, बड़े और छोटे भाइयों, बहू और सास के बीच प्रेम की सराहना करनी चाहिए। राजपरिवार के सभी सदस्यों ने शांति और सद्भाव में रहने के लिए अपने स्वार्थ का त्याग किया। राजा दशरथ ने अपने जीवन के मूल्य पर दो वरदान दिए। अयोध्या के वास्तविक उत्तराधिकारी श्री राम ने सिंहासन छोड़कर चौदह वर्षों तक वनवासी के रूप में जीवन व्यतीत करना स्वीकार किया। सीता और लक्ष्मण महल में आराम से रह सकते थे लेकिन उन्होंने श्री राम की सेवा के लिए वन में उनका साथ दिया। भरत अयोध्या के राजा बन सकते थे लेकिन उन्होंने एक छोटे से गाँव में तपस्वी के रूप में रहना पसंद किया। निश्चित रूप से, यदि रामायण के संदेशों का पालन किया जाए तो आधुनिक समाज की पारिवारिक समस्याओं के सभी विवाद समाप्त हो जाएंगे। श्री राम का मिशन केवल उनके वीरतापूर्ण कार्यों को दिखाना ही नहीं था बल्कि प्रेम से घृणा को जीतना भी था। वन में, उन्होंने ऋषियों को राक्षसों के अत्याचारों से बचाया। अपने मधुर शब्दों से उन्होंने कैकेयी का हृदय जीत लिया जो उनके वनवास के लिए कारण थी। श्री राम को दिव्य गुणों के धारक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन्हें सभी नैतिक मानकों का पालन करने वाला कहा जाता है (मर्यादा पुरुषोत्तम)। उन्हें एक आदर्श पुरुष के रूप में माना जाता है। उन्होंने शांति और सहिष्णुता का प्रचार किया, उनका संदेश अधर्म के खिलाफ लड़ने का था न कि युद्ध के लिए युद्ध लड़ने का। उन्होंने रावण के साथ युद्ध से बचने के लिए बहुत प्रयास किए। हनुमान, अंगद, विभीषण, माल्यवान और यहाँ तक कि रावण की पत्नी मंदोदरी ने भी युद्ध के खिलाफ आह्वान किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। सभी ने शांति और सीता की वापसी के लिए अनुरोध किया लेकिन रावण के अहंकार के कारण बड़ी तबाही हुई। इस प्रकार, रामायण की जोरदार पुकार शांति के लिए है। रामायण में, नायक के सभी कार्य शांति, प्रेम और एकता के उद्देश्य से हैं। उन्होंने निषादराज (वन प्रमुख) को एक प्यार करने वाले मित्र के रूप में माना और शबरी, एक निम्न जाति की महिला, के आतिथ्य को स्वीकार किया, ताकि दुनिया को यह दिखाया जा सके कि जाति, पंथ और रंग के भेदभाव नहीं होने चाहिए।

किष्किंधा और लंका को बाली और रावण से मुक्त कराने के बाद, वे स्वयं दोनों देशों के शासक बन सकते थे या अपने भाई लक्ष्मण को राजा नियुक्त कर सकते थे लेकिन उन्होंने बाली और रावण के छोटे भाइयों सुग्रीव और विभीषण को सिंहासन सौंपने का अच्छा उदाहरण पेश किया। श्री कृष्ण भी कंस के वध के बाद मथुरा के शासक या जरासंध की मृत्यु के बाद मगध, एक समृद्ध राज्य के शासक बन सकते थे। श्री राम और

श्री कृष्ण दोनों ने उन सिंहासनों पर बैठने से इनकार कर दिया जिन्हें उन्होंने युद्ध में जीता था। क्या यह आधुनिक शासकों के लिए संदेश नहीं है जो सिंहासन हड़पने और अपने क्षेत्रों का विस्तार करने के लिए लड़ रहे हैं? कुछ देशों में मानव अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है, अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव को प्रोत्साहित किया जाता है और महिलाओं के अधिकारों से वंचित किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में एकता, शांति और न्याय को बढ़ लोकतंत्र है। राम–राज्य में लोग चिंताओं, तनावों, दुखों और कष्टों से मुक्त थे। लोग खुशहाल और स्वस्थ थे। वे 100 साल की पूरी आयु जीते थे। समय से पहले मृत्यु का अस्तित्व नहीं था। हर जगह शांति और सद्भाव बना रहता था। कोई विद्रोह नहीं था। शासक अपने प्रजा की देखभाल करते थे। यद्यपि सरकार का रूप राजतंत्र था, फिर भी जनमत को बहुत महत्व दिया जाता था। राजा हमेशा मंत्रिपरिषद से परामर्श करते थे। जनता का भला करना राजा का प्रमुख कर्तव्य था। देश में नफरत, ईर्ष्या, शत्रुता, अन्याय, असमानता, शोषण, अत्याचार, अपराध और हिंसा का कोई स्थान नहीं था। वर्तमान में, मनुष्यों ने आधुनिकता के नाम पर नैतिकता का गला घोंट दिया है। 'अधर्म' हर जगह व्याप्त है। धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, टूटे हुए वादे, झूठे बयान चारों ओर बढ़ रहे हैं। यह सलाह दी जाती है कि सभी राजनीतिज्ञ जो पहले से ही शासक हैं और वे जो शासक बनने की आकांक्षा रखते हैं, रामायण का गहन अध्ययन करें और जनता के हित में मूल्यों और कल्याणकारी गतिविधियों को लागू करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि रामायण एक न्यायपूर्ण, समृद्ध, आदर्श और स्थायी राज्य बनाने के लिए ठोस सुझाव प्रदान करती है।

हमारी शिक्षा प्रणाली परीक्षा–उन्मुख है और नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता है। क्या यह उच्च समय नहीं है कि नैतिक मूल्यों पर अधिक जोर दिया जाए ताकि आधुनिक मनुष्य जो स्वार्थ से प्रेरित होते हैं, सही मार्ग पर चल सकें? चूंकि रामायण का विषय नैतिकता, आदर्श और आदर्श पात्रों से भरा हुआ है, इसलिए यह अच्छा होगा यदि संबंधित अधिकारी इसे स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए ईमानदारी से प्रयास करें।

यह सोचना गलत है कि रामायण और गीता केवल संतों, ऋषियों और वृद्ध लोगों के लिए है। कुछ माता–पिता अपने बच्चों को सेकुलर पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें रामायण, गीता और उपनिषदों को पढ़ने से हतोत्साहित करते हैं, इस डर से कि इन धार्मिक पुस्तकों के ज्ञान के माध्यम से वे घर छोड़कर सन्यासी बन जाएंगे।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि रामायण के संदेश के माध्यम से वास्तविक राष्ट्रीय एकता संभव है। विभिन्न भाषाओं, रिवाजों और परंपराओं के बावजूद, रामायण ने

भारत में राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संपत्ति और शक्ति के साथ, राष्ट्रीय एकता कठिन है। यू० एस० एस० आर०, एक महाशक्ति, अपनी सैन्य शक्ति के बावजूद एकीकृत नहीं रह सका।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने दुनिया को एक वैश्विक गाँव बना दिया है। दूरियाँ कम हो गई हैं, लेकिन लोगों और देशों के बीच दिल की अंदरूनी दूरी समाप्त नहीं हुई है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति के अंदर निहित धार्मिक भावना को जगाया जाए। इसलिए, आध्यात्मिक प्रगति के लिए रामायण का अध्ययन अनिवार्य है। रामायण हर किसी के जीवन को शुद्ध और परिष्कृत करती है और यह एक धन्य शांति–स्थापक है।

जैसे अग्नि जलाने की क्षमता रखती है, वैसे ही रामायण का अध्ययन क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, शत्रुता, अशांति, हिंसा, तलाक और अन्य सामाजिक बुराइयों को मिटाने में सक्षम है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी हिंदू धर्म को झटके लगे हैं, रामायण ने हिंदू धर्म को बचाया है, अतीत की महिमा को पुनर्जीवित करने की आशा दी है और नए जीवन की सांस दी है।

रामायण का दूसरा संदेश बुराई की शक्तियों के खिलाफ लड़ने और दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर स्थान बनाने का है। त्रेता युग और द्वापर युग में, श्री राम और श्री कृष्ण ने बुरे कर्म करने वालों का विनाश किया। कलियुग में, बुरे कर्म करने वालों ने आतंकवादियों, धार्मिक कट्टरपंथियों, ड्रग–तस्करों, काला बाजारियों, भ्रष्ट अधिकारियों, बेईमान व्यापारियों और महिलाओं और बच्चों के शोषण करने वालों के रूप में फिर से सिर उठाया है। क्या हमें रामायण से यह संदेश नहीं मिलता कि हम सभी मिलकर इन छिपे हुए राक्षसों को हराने के लिए एकजुट हों जो हमारे सभ्य समाज में तबाही मचा रहे हैं। पुलिस और जेलों ने इन्हें रोकने में असमर्थता दिखाई है। रामायण का संदेश पहले से कहीं अधिक आवश्यक है ताकि बुरे कर्म करने वालों को परिवर्तित किया जा सके।

मुझे यकीन है कि रामायण का संदेश दुनिया के लोगों को उठाएगा, उनके संचित पापों को धो देगा जैसे उगता सूरज सुबह की ओस की बूंदों को मिटा देता है। मैं कामना करता हूँ कि रामायण संप्रदायवाद को मिटा दे और भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति विकसित करे। रामायण को सार्वभौमिक रूप से संपूर्ण मानवता के लिए एक खजाने के रूप में मान्यता प्राप्त है। सही कहा गया है कि जब तक हिमालय खड़ा है और गंगा पश्थ्वी पर बहती है, रामायण मानवता का मार्गदर्शन, प्रेरणा और प्रभाव देने के लिए जीवित रहेगी।

शोध पत्रिका मंगाने हेतु आवेदन पत्र

(APPLICATION FORM FOR SUBSCRIPTION)

प्रति
प्रधान सम्पादक 'ग्लोकल दृष्टि'
ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग
मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

महोदय/महोदया,

मैं आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका 'ग्लोकल दृष्टि' को वर्ष.....के लिये व्यक्तिगत/ संस्था हेतु नियमित रुप से मंगाने का/की इच्छुक हूँ। अतः मैं नकद/बैंक ड्राफ्ट द्वारा एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष के लिये अंकन रु0 .....की राशि जमा कर रहा/रही हूँ।

भवदीय
नाम व हस्ताक्षर

पूरा नाम (Full Name in Block Letters)
पत्राचार का पता (Mailing Address)
.....
दूरभाष संख्या (Telephone No.) .....

ई–मेल पता (E-mail address)
.....
भुगतान का विवरण (Transaction Details)
.....

मूल्य दर: व्यक्तिगतः रु0 500 प्रति वर्ष संस्थागतः रु0 800 प्रति वर्ष

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
प्रो. शोभा त्रिपाठी,
प्रधान सम्पादक, ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग,
मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121, shobha.tripathi@theglocaluniversity.in

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 23–29

मॉरीशसीय संदर्भ भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध

अंजू घरभरन*

हिंद महासागर में बिंदु मात्र दिखने वाला टापू मॉरीशस, विश्व में चमकते सितारे की पहचान बना चुका है। इस पहचान को आकार अथवा मूर्त रूप देने में हम भारतीय संस्कृति की विशेष भूमिका पाते हैं। मॉरीशस समाज में भारतीय भाषाएँ, धर्म, राजनीति, भोजन, कला, परिधान एवं संस्कारों के साथ जीवन जीने की शैली के सामायोजित ताने–बाने की सुंदर बनावट भी देते हैं।

दास प्रथा की समाप्ति से पहले ही मॉरीशस की धरती पर कुछ मज़दूरों को भारत से लाया गया था। यह एक प्रयोग के रूप में प्रारम्भ हुआ था। भारत में अंग्रेजो का राज और उपनिवेशी काल था जब इस देश में1834 से 1923 तक कोई साढ़े चार लाख से अधिक मज़दूरों को एक एग्रीमेंट के अंतर्गत लाया गया था, जिन्हें अग्रीमेंट का अर्थ क्या है, शब्द को बोलना तक नहीं आता था और यह गलत उच्चारण से ही जन्मा था शब्द "गिरमिटिया" मज़दूर, जिन्हें कुली भी कहा जाता था। भारत के विभिन्न राज्यों एवं प्रान्तों से पहले इनको कलकत्ता के डिपो में एकत्रित किया जाता था फिर समुद्री यात्रा कर वो जहाजी भाई हिन्द महासागर को पार कर इस छोटे से टापू पर पहुँचाये जाते थे। कोड़ों की बौछार, मानसिक यातनाओं के शिकार और न्यूनतम सुविधाओं से भी इन्हें वंचित रखा जाता था। जी तोड़ मेहनत के बाद अनेक जटिल समस्याओं को झेलते हुए और भूखे पेट रहकर भी इन मज़दूरों के बुलंद इरादे और धैर्य की घुट्टी ने ही इन्हें इस देश को मानचित्र पर ही नहीं, आज की पीढ़ी को उनके पूर्वजों की संज्ञा एवं अद्भुत पहचान दी। जिस कुली घाट पर उनके मजबूर कदम पड़े थे, काल चक्र ने इन भोलेभाले मज़दूरों के अथक प्रयासों की याद में श्रद्धांजलि रूप में उसे आज विश्व विरासत के रूप

*अंजू घरभरन, आकाशवाणी, मॉरीशस, anjumonga@hotmail.com

में अप्रवासी घाट के नाम से जानते है। इस विश्वविरासत में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी, मंत्री दिवंगत श्रीमती सुषमा स्वराज और भारत की उच्चतम पदासीन राष्ट्रपति सम्माननीय श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी के दौरे ने इस स्थान श्रद्धा सुमन अर्पित कर सम्मनित किया है। स्थानीय लोगों का भारत देश से गर्भनाल के रिश्ते का विश्वास और गहरा किया साथ ही गौरांवित भी किया है।

मॉरीशस की आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है पर यहाँ क्रियोल एवं फ्रेंच भी अपना वर्चस्व बनाये हुए है। भोजपुरी, हिंदी, तमिल, तेलेगु, गुजराती, मराठी, बंगाली, उर्दू जैसी भारतीय भाषाओं का सुंदर परिदृश्य अनेकता में एकता दर्शाता है। इन भाषाओं को सुरक्षित करने और उनके उन्नयन हेतु स्थानीय संस्थाएं, शैक्षिक कार्यक्रम और गाँवों–शहरों की बेठकाओं का विशेष योगदान है। जिनका पीढ़ी दर पीढ़ी भाषाई विरासत का निरंतर प्रवाह सुनिश्चित करना है।

देश में अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक संस्थाओं का भारतीय संस्कृति के संरक्षण में बहुत योगदान है। जैसे होली से पंद्रह दिन पहले ही चौताल ठोकना, होलिका दहन, रामायण पाठ के साथ साथ टोलियों में प्रतियोगिताओं का आयोजन सनातन धर्म टेम्पल्स फेडरेशन द्वारा किया जाता है, आर्य सभा, आर्य रविवेद प्राचारिणी सभा आदि संस्थाओं द्वारा मंत्र पाठ प्रतियोगिता एवं धार्मिक ग्रंथों, वेद, उपनिषद आदि का ज्ञान देश भर को भारतीय संस्कृति से जुड़े रहने के अवसर प्रदान करते हैं। रामायण, हनुमान चालीसा आदि के लिए रामायण सेंटर जैसी संस्थाएं खूब सक्रियता से सब को जोड़ने के अथक प्रयास करते हैं।

प्रवासी भारतीयों द्वारा लाया गया हिंदू धर्म प्रमुख रूप में उभरा जिसके कारण हिंदू मंदिर – शिवालय पूरे टापू में एक सनातन विचारधारा के परिदृश्य को बनाये हुए हैं। बिहार में कालीमाई की विशेष पूजा होती है।

यहाँ भी हर गाँव के प्रारंभ में या उसके दूसरे छोर पर कालीमाई सात पिंडी सहित स्थापित पाते हैं। इनमें से कुछ आज सुंदर मंदिर का रूप लिए भी देखे जाते हैं। कृषि प्रधान देश होते हुए फसल की कटनी का पहला गन्ना काली माई को चढ़ाया जाता है। हिन्दू घरों में महावीर स्वामी अर्थात बजरंगबली का चबूतरा पाया जाता है। जिसपर लाल झंडिया भी फहराई जाती हैं। स्वामी दयानंद के अनुयाई भी आर्य समाज का बढ़–चढ़ कर प्रचार करते एवं ओम के झंडे भी खूब फहराए जाते हैं। इस वर्ष 22 जनवरी को हम सब ने अयोध्या में बने मंदिर में रामलला की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा की पूजा के लाइव प्रसारण का अद्भुत आंनद लिया। इतना ही नहीं पूरे मॉरीशस टापू में भगवा झंडे लिये जुलूस भी निकाले गए और दीपोत्सव भी सम्पन्न हुआ। यहाँ सब लोग हिंदू त्यौहार मकर संक्रांति, होली, दीवाली, रक्षाबंदन, महाशिवरात्रि, दुर्गापूजा, रामनवमी, गणेश चतुर्थी

के साथ–साथ अन्य भारतीय त्यौहार जैसे थाईपुसम कैवेदी, पोंगल, उगादि, ईद, गुड़ीपाड़वा, वर्षापीरप्पू आदि बहुत श्रद्धा एवं अपने–अपने रीति रिवाजों के साथ मनाये जाते हैं। शुद्ध मंत्र उच्चारण एवं प्रार्थनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिसके लिए भारत से विशेषज्ञ और गुरु एवं पंडितों को आमंत्रित किया जाता है। भारत से धार्मिक अनुष्ठानों हेतु पूजा सामग्री एवं नैवेद्य का समय–समय पर उचित मात्रा में आयात होता है।

गंगातलाब यहाँ की धर्म एवं आस्था का सब से बड़ा और सशक्त प्रतीक है। जहाँ देश–विदेश से लोग अवश्य वहाँ के मंदिरों का दौरा, तालाब में जलांजलि के साथ मंगल महादेव की 108 फुट ऊंची मूर्ति के दर्शन कर अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं। इसमें भारत से गंगोत्री का जल लाकर डाला गया था। भारत में बहती पवित्र गंगा जो भगवान शिव की जटाओं से धरती पर उद्धार हेतु आई, तो उसी आस्था और विश्वास को गंगातालाब के जल में मिला कर सबके कल्याण की कामनाएं की गई थीं।

महाशिवरात्रि पर खूब सजे हुए कांवर कंधों पर लेकर गंगातलाब तक पद यात्रा कर जल लाते हैं और चार पहर की पूजा से पूर्व भक्त अपने भोलेनाथ को जल अर्पण करते हैं। भक्तों में युवा वर्ग की विशेष भूमिका सहित संख्या सराहनीय है। इस समय देश–विदेश के शिव भक्त शिवरात्रि पर्व की धूमधाम में सम्मिलित होते हैं।

देश के सभी प्रान्तों में कहीं रामायण पाठ तो कहीं साई भक्ति के कार्यक्रम होते हैं। आर्यसमाजी हवन करते हैं तो कबीरपंथी अपने अनुष्ठान करते हैं। मंदिर, कोविल, गुरुद्वारा, मस्जिद, गिरजाघर सभी पन्त प्रेम की शिक्षा और रंगो की रंगोली के साथ इंद्रधनुष रूपी संस्कारों और परम्पराओं के साथ संस्कृतियों का निर्वाह करते हैं। होली, दीवाली पर हिंदू लड्डू ,गुजिये बाँटते हैं तो ईद पर मुसलमान भाई सेवइयां, बिरयानी बाँटते हैं। गणेश चतुर्थी पर मोदक बनते हैं तो दुर्गा नवमी पर खीर–पूरी और बजरंबली को प्रसन्न करने के लिए रोट बनाये जाते हैं। श्रावण मास के महत्व से भी देश अछूता नहीं है।

भारतीय मसाले जैसे जीरा, हींग, हल्दी, करी पत्ता आदि का मॉरीशस में भरपूर प्रयोग होता है तो दूसरी ओर प्रसव के उपरांत महिलाओं को अजवायन का पानी सौठ के लड्डू और कसार आदि जैसी पारम्परिक चीज़ें भी दी जाती हैं। जच्चा–बच्चा की तेल मालिश भी तो भारतीय परम्परा का ही हिस्सा है। उस पर शरीर को स्वस्थ रखने हेतु हल्दी दूध को कैसे भुलाया जा सकता है। कोविद काल में भी गिलोई अदरक हल्दी के काढ़े का भी खूब सेवन किया गया। साथ ही छोटी–मोटी चोट पर हल्दी–चुने से इलाज तो मानो शर्तिया और स्थानीय दादी, नानी का नुस्खा है। यह सब भारत का सदियों पुराना आयुर्वेद ही तो है जो यहाँ भी रचा बसा हुआ है।

AUM
MAKALIMA
SABHA

मसालों की बात हो तो व्यंजनों को कैसे छोड़ सकते हैं। "गातो पीमा" नाम का पकोड़ा जो सब से महशूर है, जो दाल से बनाया जाता है शराब के साथ चखना से लेकर ब्रेड के साथ नाश्ता हो या कहीं भी स्नैक के रूप में सभी पृष्ठभूमि के मॉरीशसवासियों द्वारा पसंद किया जाता है। दाल–पीठा, दूध–पीठी, दाल–पूरी, समोसा, आलू, बेगन के पकोड़े भी तरह–तरह की चटनी के साथ खूब चलते हैं। अब तो पानी–पूरी भी खूब मिलती है। डोसा, इडली, सांबर, छोले–भटूरे, और भारतीय प्रांतों की थाली जैसे राजस्थानी, पंजाबी थाली आदि भी रेस्टोरेंट में भारतीय खान पान को बढ़ावे के साथ अपना स्थाई स्थान और लोकप्रियता भी बनाये हुए है।

भारतीय संगीत, नृत्य, रंगमंच मॉरीशस की संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रेमियों को कर्ण प्रिय है तो भोजपुरी गीत तो पारम्परिक गीत गवाई के लिए तो अनेक स्थान पर विशेष प्रशिक्षण हेतु कक्षाएं भी हैं। हिन्दू परिवारों में विवाह के दो दिन पूर्व ही (वर–वधु) दोनों ओर खूब ढोलक, मंजीरा, लोटा, चम्मच आदि के साथ पारम्परिक भोजपुरी प्रार्थना एवं गीत, हिंदी फिल्मी गीत और स्थानीय सेगा पूरे धमाल के साथ विधिवत गीत–गवाई के रूप में मनाया जाता है। यह गीत–गवाई आज एक मॉरीशसीय अमूर्त धरोहर भी है।

नाटक की बात करे तो पंचतंत्र की कहानियाँ नैतिक मूल्यों पर आधारित, रामायण से प्रेरित कथाओं की अनुगूंज इन्हें भारतीय दायरे में ही रखती हैं। भारतीय संस्कृति से जुड़े नुक्कड़ नाटक, एकांकी आदि को स्थानीय बेठकाओं में पाठ्यक्रम से हटकर हिंदी दिवस, वार्षिक उत्सव तथा अन्य विशेष गतिविधियों में भी खूब बढ़ावा दिया जाता है।

12 मार्च को मॉरीशस अपना राष्ट्रीय दिवस मनाता है। 1968 में स्वतंत्र हुआ और उसके 24 वर्ष उपरांत 1992 में हमने गणतंत्रता का स्वाद चखा। यह तिथि भी तो गांधी जी द्वारा डांडी यात्रा निकाली जाने वाली तिथि से ही मेल खाती है। स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दू समाज बेठकाओं तथा सांस्कृतिक भवनों में 1947 से 68 तक भारतीय तिरंगा ही फहराते थे। आज भी स्वराज भवन, लालमाटी में भारतीय उच्चायुक्त की उपस्थिति में तिरंगे को फहरा कर उसकी शान में गीत आदि गाते हुए भव्य आयोजन भारतीयता पर गर्व की अनुभूति ही करवाता है।

देश के अनेक मंचों पर कार्यक्रम दीपप्रज्वलन से प्रारंभ तो कहीं श्लोक य प्रार्थना से ही भारतीय संस्कृति का ही तो निर्वाह दर्शाते हैं। कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी नृत्य प्रस्तुतियाँ यहाँ के सांस्कृतिक केंद्र और संस्थानों में सिखाये जाते हैं। भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा दे शैक्षिक पहल के साथ संरक्षित भी करते हैं। भारतीय परिधान सहित यह प्रस्तुतियाँ दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देतीं हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत भी आध्यात्मिक जुड़ाव और एक विशेष जादुई शक्ति एवं पूर्वी सुगंध लिए रहता है।

मॉरीशस के बुनियादी विकास क्षेत्र में 'मेट्रो एक्सप्रेस' के लिए भारत के सहयोग ने एक बार फिर एक बड़ी संख्या के भारतीय लोगों को अनेक कार्यक्षत्रों में जोड़ा। इससे एक बार फिर स्वतः ही आये भारतीय कार्यकर्तों के साथ वहाँ की भाषा, संस्कृति, खान–पान और भी अनेक चीजों से भारतीयता में वृद्धि लाये। स्थानीय इमारतों और केंद्र, स्थलों में भारतीय विभूतियों के नाम देना भी संबंधों को प्रगाढ़ करने के साथ भारतीयता की जड़ों को एक अटूट विश्वास से संजोता है। स्वामी विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान, रबिन्द्रनाथ टैगोर इंस्टीट्यूट, जवाहरलाल नेहरू अस्पताल, अटल बिहारी वाजपेयी टॉवर और महात्मा गांधी मेट्रो स्टेशन आदि नाम निसंदेह भारत मॉरीशस सम्बन्धों को विश्व में भारत और मॉरीशस के संबंधों की निकटता को दर्शाता है। मॉरीशसीय हिन्दू परिवार अपनी संतान के नाम में भी विशेष ध्यान देते हुए और उनके अर्थ की गहराई को जानकर ही भारतीय संस्कृति का निर्वाह करते हैं जैसे रघुनंदन, महादेव, नीलकंठ, शंखनाद, भीरगुनाथ, रामनरेश, प्रभा, संध्या, यजना, पूजा, आशा, साक्षी, सुरभि, प्रकृति आदि।

स्थानीय रेडियो और दूरदर्शन सभी भाषाओं में कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। सभी भारतीय भाषाओं के अलग चैनल हैं। हिंदी सिनेमा एवं धारावाहिक भी भारतीय संस्कृति से जोड़े रखने का एक प्रमुख माध्यम है। प्रोद्योगिकी और अंतरजाल ने इन सब को और आकृष्ट कर सशक्त किया है।

पर्यटन ने भी भारतीय संस्कृति को करीब से देखने, समझने एवं जीने का ज़रिया दिया है। मॉरीशस से हर वर्ष अनेक टोलियाँ भारत यात्रा के लिए जाती हैं। कोई चार धाम, कोई मानसरोवर, शिव भक्त 12 ज्योतिरलिंग, कृष्ण में आस्था रखने वाले मथुरा–वृंदावन और दुर्गा के भक्त वैष्णोदेवी की यात्रा कर अपनी आस्था को मज़बूती देते हैं। भारत भूमि पर चरण रखने से पूर्व उस मिट्टी को नमन कर भारतीय संस्कृति पर अपने सनातनी विश्वास को और पुख्ता करते हैं। आर्य समाज और आचार्य शिक्षा और भारतीय संस्कृति के गहन अध्य्यन हेतु भी भारत की ओर ही रुख करते हैं। प्रत्येक हिंदू परिवार के सदस्यों की दिली इच्छा रहती है कि अपने जीवनकाल में वह एक बार भारत माता के दर्शन अवश्य करें।

मॉरीशस में भारतीय वस्त्र और फैशन का भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। स्थानीय लोग अक्सर भारतीय रूप में शादियों, उत्सवों और समारोहों में एक से बढ़ कर एक भारतीय वस्त्र पहनते हैं। कुछ तो यश चोपड़ा की फिल्मों जैसे "बिग फैट वेडिंग" करना चाहते हैं और कोई "बीच वेडिंग" की अवधरणा कर विवाह के लिए भारत से सारी खरीदारी करते हैं। डिज़ाइनर वस्त्रों के साथ मेल खाते आभूषण न हों तो कौन यहाँ किसी कार्यक्रम में जाता है और वो भी युवा पीढ़ी। शादी के लिए चार से पाँच दिन के

सभी अवसरों के लिए वस्त्र जैसे हल्दी के दिन पीले, मेहंदी के लिए हरा, शादी के लिए तो हर दुल्हन का अलग ही सपना होता है कोई लाल, कोई मेहरून तो कोई गुलाबी रंग का चुनाव करती हैं। दूल्हे भी शादी के लिए शेरवानी, सुंदर पगड़ी, गीत गवाई के लिए डिज़ाइनर या लखनवी कुर्ता पजामा और चौथारी के लिए पेंट सूट पर हजारों की राशि ख़र्चते हैं। विवाह के आभूषणों में भी दूल्हा–दुल्हन की अंगूठी और मंगल सूत्र आवश्यक ज़ेवर होते हैं। दुल्हन के लिए कंगन, हार, बालियां आदि भी रहते हैं। सगाई के समय भी लड़का–लड़की एक दूसरे को अंगूठी पहनते हैं। कोई सोने की तो कोई हीरे की, कुछ तो कीमती मोती, पुखराज, नीलम आदि की भी बनवाते हैं। एक बात यहाँ पर बहुत ही सराहनीय है कि शादी की साज सजा में तो लोग अब बहुत खर्च करते हैं लेकिन भोजन पारम्परिक "सेत कारी" सात तरह की सब्ज़ियाँ और पूरी के साथ ही मेहमानों का सत्कार किया जाता है। कोई कुछ कम तो कोई कुछ ज़्यादा ताम–झाम के साथ।

विवाह से एक दिन पूर्व माटी कोढ़ाई, हल्दी विधि हवन के उपरांत सेंधा घास आदि के साथ लगाई जाती है। अगले दिन फेरों के साथ विवाह संस्कार सम्पन्न किया जाता है फिर विदाई के उपरांत उसके अगले दिन बारातियों के साथ दुल्हन का पग फेरे की रस्म होती है। आज भी माँ अपनी बेटी को विवाह के उपरांत विदा करते समय खोंईछा देतीं हैं, आँचल में एक रुमाल रख जीरा, धान, हल्दी की गाँठ, टिकली, सिंदूर, छोटा–आईना, एक कंघा और चूड़ियाँ आदि के सतहपहले सवा रुपया डाला जाता था जोजो समय के बदलाव से सवा सौ और अधिक धन राशि में बदल चुका है, बाँध कर देती है। जिसे आजकल पोटली पर्स में देने का रिवाज पूरा किया जाता है। बेटी के साथ उसकी छोटी बहन या बेटी की कोई सखी–सहेली लोकनी के रूप में उसके साथ ससुराल जाती है। भारतीय संस्कारों और धार्मिक विधि विधान से ही सब कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

ऐसे ही बाल–गोपाल का जन्म हो, या घर में लक्ष्मी जन्म ले तब नामकरण संस्कार, मुंडन संस्कार तथा अन्य संस्कारों से भारतीय धर्म की अनेकों धारों को प्रतिष्ठित करते हुए, अपने–अपने धार्मिक अभ्यासों और उनके तत्वों को अपनाते हुए भारतीय संस्कृति का परिवेश बोध पाते हैं। इन सभी के संयोजन से मॉरीशस, भारत से दूर एक अत्यंत विविध और समश्द्ध भारतीय संस्कृति लिए हिंद महासागर से घिरा और अपने राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक अपना चौरंगा झंडा लिये अपनी अलग पहचान बनाये उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर है। जय मॉरीशस!! जय भारत !!

बेटी बचाओ बेटी पढाओ

की योजना के प्रति ग्लोकल विश्वविद्यालय पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

ग्लोकल विश्वविद्यालय में सुकन्या योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष 200 मेधावी निर्धन छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

हमारी वैबसाइटः **glocaluniversity.edu.in**

हेल्पलाइन नंबरः

+91-9311632008; +91-9311650087

अधिक जानकारी के लिये लिखें:

query@theglocaluniversity.in

ग्लोकल विश्वविद्यालय,
दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 31–34

भारत में मीडिया का संवैधानिक अधिकार और स्वतंत्रताः एक सामाजिक–कानूनी अध्ययन

उमर जहाँ*
आतीका बानो**

सारांश

पत्रकारिता, जिसे अक्सर चौथा स्तंभ कहा जाता है, एक लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह समाज में लोकतांत्रिक और सामाजिक कर्तव्यों के बारे में जागरूकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और जनता के लिए एक निगरानीकर्ता के रूप में कार्य करती है। हालांकि मीडिया को बिना किसी प्रतिबंध के कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता नहीं है। किसी भी अन्य पेशे की तरह पत्रकारिता भी एक कानूनी ढांचे द्वारा बंधित है, जो मुख्य रूप से भारतीय संविधान से व्युत्पन्न है। संविधान के तहत नागरिकों, जिसमें मीडिया भी शामिल है, को प्रदान किए गए सबसे महत्वपूर्ण अधिकारों में से एक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है।

भारत के संविधान की प्रस्तावना नागरिकों के लिए विचार, अभिव्यक्ति और विश्वास की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने का संकल्प करती है। भारतीय संविधान का तृतीय भाग मौलिक अधिकारों से संबंधित है। संविधान में अनुच्छेद 19, 20, 21 और 22 में स्वतंत्रता का अधिकार शामिल है, जो संविधान के निर्माताओं द्वारा महत्वपूर्ण माने गए व्यक्तिगत अधिकारों की गारंटी देता है। अनुच्छेद 19 में स्वतंत्रता का अधिकार छह मौलिक स्वतंत्रताओं में से एक के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है।

मीडिया की स्वतंत्रता की अवधारणा लोकतंत्र में स्वतंत्र मीडिया एक आवश्यक एजेंसी है। यह जनमत का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है, जो सरकार की लोकतांत्रिक प्रणाली

---

*उमर जहाँ, रिसर्च स्कालर, ग्लोकल लॉ स्कूल ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर
**आतीका बानो, सहायक प्रोफेसर, ग्लोकल लॉ स्कूल ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

को स्पंदित और सशक्त बनाता है। और इसके अनुसरण में मीडिया की स्वतंत्रता भारत के संवैधानिक ढांचे में दृढ़ता से स्थापित है और इसकी गारंटी है। डॉ. अंबेडकर के द्वारा तैयार मसौदे में प्रस्तावित किया गया था कि सार्वजनिक व्यवस्था और नैतिकता के विचारों को छोड़कर, भाषण, प्रेस, संघ और सभा की स्वतंत्रता को कम करने वाला कोई कानून नहीं बनाया जाएगा।

संविधान सभा के विचार–विमर्श

संविधान सभा के विचार–विमर्श में इस बात पर काफी बहस हुई थी कि क्या मीडिया की स्वतंत्रता का स्पष्ट रूप से अनुच्छेद 19 (1) (ए) के रूप में शामिल किए जाने वाले अनुच्छेद में उल्लेख किया जाना चाहिए। प्रथम प्रेस आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यापक रूप से कहा गया है कि स्वतंत्रता, विशेष रूप से समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की स्वतंत्रता एक ऐसी प्रजाति है, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी शामिल है।

भारतीय न्यायालयों द्वारा व्याख्या

भारतीय न्यायालयों ने बार–बार यह पुष्टि की है कि मीडिया के अधिकार भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी में निहित हैं। एक महत्वपूर्ण मामले, सकाल पेपर प्राइवेट लिमिटेड बनाम यूनियन ऑफ इंडिया, में सुप्रीम कोर्ट ने समाचार पत्र (मूल्य और पृष्ठ) अधिनियम, 1956 की वैधता को चुनौती दी और इसे असंवैधानिक करार दिया। बेनेट कोलमैन बनाम भारत संघ के मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि समाचार पत्रों को अपने पृष्ठों और उनके प्रसार को निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाना चाहिए। एक्सप्रेस न्यूजपेपर्स बनाम यूनियन ऑफ इंडिया मामले में, वर्किंग जर्नलिस्ट्स (सेवा की शर्तें) और विविध प्रावधान अधिनियम, 1955 को इस आधार पर चुनौती दी गई कि इसके प्रावधान अनुच्छेद 19(1) (ए) का उल्लंघन करते हैं।

निष्कर्ष

मीडिया की स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है। भारतीय संविधान और न्यायालयों ने समय–समय पर इस स्वतंत्रता की पुष्टि और रक्षा की है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि मीडिया स्वतंत्र और निष्पक्ष रहे, ताकि यह समाज के हित में अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके। भारत में मीडिया की स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकार एक समृद्ध लोकतंत्र की नींव रखते हैं, जो हर नागरिक को अपने विचारों और रायों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अलेक्जेंडर, एस.एल. (2003). न्यायालयों को कवर करनारू पत्रकारों के लिए एक पुस्तिका। दूसरा संस्करण। मैरीलैंडरू रोवमैन और लिटिलफील्ड प्रकाशक।

2. बसखी, पी.एम., (1985) प्रेस कानूनः एक परिचय, बीटीआरएफआई प्रकाशन।

3. बसु, डी.डी., प्रेस का कानून, वाधवा प्रकाशक (2002)

4. बर्न्स, वाई. (1990)। मीडिया कानून। केप टाउन, बटरवर्थ प्रकाशक।

5. दीवान, माधवी गोराडिया। (2006) मीडिया कानून के पहलू। ईस्टर्न बुक कंपनी पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ

6. गीज़, एल (2007) कानून और मीडियारू एक असहज रिश्ते का भविष्य (लंदनः रूटलेज–कैवेंडिश)।

7. गुप्ता, बी.आर. (संपादक)। (2006) जेके लॉज़ (वॉल्यूम 11, 14, 16, 18, 20, 22) जे के लॉ रिपोर्टर (पी) लिमिटेड, जेएंडके द्वारा प्रकाशित

8. कुंद्रा, एस. (2005). मीडिया कानून और भारतीय संविधान. अनमोल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड; नई दिल्ली.

9. मुद्गल, राहुल (2009). पत्रकारिता और कानून. सरूप बुक पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली 10. नीलामलर, एम. (2010). मीडिया कानून और नैतिकता. पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड–नई दिल्ली.

11. पांडे, के.एस. भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई. एकेडमिक फाउंडेशन, दिल्ली (1991).

12. शिप्रा, कुमारी. (2008). भारतीय कानून और प्रेस. ओमेगा पब्लिशर्स

13. बेनेट कोलमैन एंड कंपनी बनाम भारत संघ (एआईआर 1973 एससी 106)

14. बश्ज भूषण बनाम दिल्ली राज्य (एआईआर 1950 एससी 129)

15. एक्सप्रेस न्यूजपेपर्स (पी) बनाम भारत संघ (एआईआर 1958 एससी 578)

16. इंडियन एक्सप्रेस न्यूजपेपर्स बनाम भारत संघ ((1985) 1 एससीसी 641).

17. एमएसएम शर्मा बनाम कृष्णा सिन्हा (एआईआर 1959 एससी 395),

18. मेनका गांधी बनाम भारत संघ (एआईआर 1978 एससी 597).

19. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय बनाम क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (1995 2 एससीसी 161)

20. प्रभु दत्त बनाम भारत संघ (एआईआर 1982 एससी 6)

21. प्रिंटर्स (मैसूर) लिमिटेड, बनाम असिस्टेंट। वाणिज्यिक कर अधिकारी (1994) 93 बिक्री कर मामले (1994) 2 एससीसी 434)

22. सकाल पेपर्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम भारत संघ (एआईआर 1962 एससी 305)

23. टाटा प्रेस लिमिटेड बनाम महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड ((1995) 5 एससीसी 139)।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 35–38

परिवार न्यायालयों की स्थापना : एक समग्र विश्लेषण

नूरे मुनव्वर*
आतिका बानो**

परिवार न्यायालय अधिनियम, 1984 के तहत भारत में परिवार न्यायालयों की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य एक बहु–विषयक दृष्टिकोण का उपयोग करके पारिवारिक समस्याओं का समाधान करना है। यह शोध पत्र परिवार न्यायालयों की स्थापना, उद्देश्य और कार्यप्रणाली का विश्लेषण करता है, जो विवाह, संपत्ति विवाद, अभिरक्षा, और भरण–पोषण के मुद्दों पर केंद्रित है। इस पत्र में परिवार न्यायालयों की भूमिका और उनके सामाजिक और कानूनी प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

परिवार न्यायालयों की स्थापना

परिवार न्यायालय अधिनियम, 1984 की धारा 3 के अनुसार, राज्य सरकार उच्च न्यायालय से परामर्श के बाद और अधिसूचना द्वारा परिवार न्यायालय की स्थापना करती है। यह अधिनियम शहरों या कस्बों में परिवार न्यायालयों की स्थापना को अनिवार्य करता है, जहां की जनसंख्या दस लाख से अधिक है और अन्य क्षेत्रों में भी आवश्यकतानुसार परिवार न्यायालयों की स्थापना की जा सकती है।

उद्देश्य और कार्य

परिवार न्यायालयों का उद्देश्य निम्नलिखित हैः

---

*नूरे मुनव्वर, ग्लोकल लॉ स्कूल ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर
**अतीका बानो, आतीका बानो, सहायक प्रोफेसर, ग्लोकल लॉ स्कूल ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

सुलह को प्रोत्साहनः पारिवारिक विवादों के सौहार्दपूर्ण समाधान को प्रोत्साहित करना।

त्वरित समाधानः पारिवारिक विवादों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करना।

बहु–विषयक दृष्टिकोणः सामाजिक कार्यकर्ताओं, परामर्शदाताओं और अन्य पेशेवरों की विशेषज्ञता का उपयोग करना।

कानूनी और गैर–कानूनी सहायताः एक समग्र मंच प्रदान करना जहां सभी पारिवारिक मुद्दों का समाधान हो सके।

अधिकार क्षेत्र और मामलों का निपटारा

भारत में परिवार न्यायालय निम्नलिखित मामलों का निपटारा करते हैंः

वैवाहिक राहतः विवाह की शून्यता, न्यायिक पृथक्करण, तलाक, वैवाहिक अधिकारों की पुर्नस्थापना, विवाह की वैधता और वैवाहिक स्थिति की घोषणा।

संपत्ति विवादः पति–पत्नी की संपत्ति से संबंधित मामले और किसी व्यक्ति की वैधता की घोषणा।

अभिरक्षा और संरक्षकताः किसी व्यक्ति की संरक्षकता या किसी नाबालिग की अभिरक्षा।

भरण–पोषणः जिसमें आपराधिक प्रक्रिया संहिता के तहत कार्यवाही शामिल है।

विशेष न्यायिक वातावरण की आवश्यकता

पारिवारिक विवादों को पारंपरिक अदालतों के सामान्य दृष्टिकोण से अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। पारिवारिक कानून में मानवीय संबंध शामिल होते हैं जो एक विशिष्ट न्यायिक वातावरण की मांग करते हैं।

सहायक सेवाओं का समावेश

पारिवारिक विवादों में अक्सर बच्चे और युवा शामिल होते हैं, जिसके लिए अदालत को सामाजिक कार्यकर्ताओं, परामर्शदाताओं, आध्यात्मिक नेताओं और विभिन्न सामाजिक एजेंसियों की सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है। ये सहायक सेवाएं पारिवारिक विवादों के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सरल प्रक्रिया और कानूनी ढांचा

परिवार न्यायालय अधिनियम पारिवारिक विवादों के त्वरित समाधान की आवश्यकता पर जोर देता है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम का कठोरता से पालन नहीं किया जाता और प्रक्रिया को सरल बनाते हुए अनौपचारिक तरीके से मामलों का निपटारा किया जाता है। अधिनियम में कानूनी प्रैक्टिशनरों को संलग्न करने पर प्रतिबंध है और अपील केवल उच्च न्यायालय के डिवीजन बेंच में ही की जा सकती है।

चुनौतियाँ और सिफारिशें

हालांकि परिवार न्यायालयों ने पारिवारिक विवादों को संबोधित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, कुछ चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं:

जागरूकता की कमी: कई लोग परिवार न्यायालयों की उपस्थिति और लाभों से अनजान हैं।

संसाधनों की कमी: प्रशिक्षित पेशेवरों और सहायक सेवाओं की सीमित उपलब्धता।

सांस्कृतिक बाधाएँ: सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक प्रथाएं अक्सर परिवार न्यायालयों के प्रभावी कामकाज में बाधा डालती हैं।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें की जाती हैं:

जागरूकता अभियान: लोगों को परिवार न्यायालयों की भूमिका और लाभों के बारे में शिक्षित करने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाना।

क्षमता निर्माण: अधिक पेशेवरों को प्रशिक्षण देना और उनकी नियुक्ति करना।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता: सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील प्रथाओं को लागू करना ताकि परिवार न्यायालयों का प्रभावी संचालन सुनिश्चित किया जा सके।

निष्कर्ष

भारत में परिवार न्यायालय एक विशेष, बहु–विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से पारिवारिक विवादों को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सुलह को प्रोत्साहित करके, त्वरित समाधान सुनिश्चित करके और व्यापक समर्थन प्रदान करके, ये अदालतें परिवारों के कल्याण और समाज की समग्र सद्भावना में योगदान करती हैं। परिवार न्यायालय अधिनियम, 1984 के तहत परिवार न्यायालयों की स्थापना पारिवारिक

विवादों की विशिष्ट प्रकृति को पहचानने और उन्हें देखभाल और संवेदनशीलता के साथ संबोधित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

फैमिली कोर्ट्स अधिनियम, 1984, धारा 3.

विधि और न्याय मंत्रालय, 'फैमिली कोर्ट्स अधिनियम, 1984', भारत सरकार, 1984.

जी.बी. रेड्डी, 'फैमिली लॉ', गोगिया लॉ एजेंसी, हैदराबाद, 2017.

भारत विधि आयोग, 'फैमिली कोर्ट्स पर रिपोर्ट, भारत सरकार, 1984.

राष्ट्रीय महिला आयोग, 'फैमिली कोर्ट्स की भूमिका और कार्य', एनसीडब्ल्यू रिपोर्ट्स, 2015.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, 'फैमिली कोर्ट्स के लिए दिशा–निर्देश', भारत सरकार, 1990.

दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973, अध्याय 9.

फैमिली कोर्ट्स (न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए अन्य योग्यता) नियम, 1984.

बॉम्बे उच्च न्यायालय, 'फैमिली कोर्ट्स अधिनियम पर निर्णय', 1985.

रंजीत चोबरा बनाम सविता चोबरा, एआईआर 1991 एससी 1234.

हिंदू अल्पसंख्यक और संरक्षकता अधिनियम, 1956.

मुस्लिम महिला (तलाक पर अधिकारों की सुरक्षा) अधिनियम, 1986.

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, 'भारत में फैमिली कोर्ट्स,' एनएएलएसए प्रकाशन, 2016.

भारत सरकार, 'भारत में फैमिली कोर्ट्स का डेटा,' विधि और न्याय मंत्रालय, 2016.

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 39–43

''पॉक्सो केस'' व आपस में उलझते देश के कई कानून

ओजस्कर पाण्डेय*

सहमति से सेक्स की उम्र क्या हो भारत में इस पर एक लंबी बहस चल रही है। समय–समय पर सहमति से सेक्स की न्यूनतम उम्र को घटाने पर विचार की भी गुजारिश की गई है। अदालतें, सरकार से बार–बार कह रही हैं कि सहमति से यौन संबंध से जुड़े कानून पर सोचें। दरअसल भारत में सहमति से सेक्स की आयु दिल्ली गैंगरैप के बाद जारी बलात्कार विरोधी अध्यादेश में इसे बढ़ाकर 18 साल कर दी गई थी। इस बदलाव के बाद से किशोरावस्था में सहमति के यौन संबंध बनाने वाले नौजवान अपराधी होने का सामना कर रहे हैं। बाल अधिकारों पर यूनाइटेड नेशन कन्वेंशन के अनुच्छेद 34 पर व्याख्या करते हुए जस्टिस वर्मा कमेटी की रिपोर्ट ने सिफारिश की थी कि पॉक्सो एक्ट के तहत सहमति की उम्र 16 से कम कर देनी चाहिए। कहा गया था कि पॉक्सो ऐक्ट का उद्देश्य बच्चों को यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार से बचाना है न कि दो व्यक्तियों के बीच सहमति से सेक्स को अपराधीकरण करना है अगर उन दोनों की उम्र 18 साल से कम की है। लगातार इस विषय में चर्चा चलती आ रही है। बीते वर्ष नवंबर में कर्नाटक हाई कोर्ट द्वारा भारत के विधि आयोग से इस मामले में हस्तक्षेप की माँग की जा चुकी है। इतना ही नहीं भारतीय मुख्य न्यायधीश डी० वाई० चंद्रचूड भी सहमति से यौन संबंध बनाने की उम्र के विषय में विचार करने के लिए संसद से अपील कर चुके हैं। हाल ही में मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की ओर से आपसी सहमति से यौन संबंध बनाने की उम्र 18 से 16 करने की बात की गई है। सेक्शुअल रिलेशन बनाने और शादी की उम्र से लेकर रेप जैसे गंभीर मामले पर इन कानूनों में आपसी तालमेल नहीं है। दरअसल इज्ज़त के नाम पर भारतीय समाज में ख़ासतौर पर लड़कियों की यौनिकता को नियंत्रित किया जाता है। ऐसे किशोर लड़के–लड़कियों की सहमति से बने संबंधों में लड़के को आरोपी बना देने के कई मामले

---

*पूर्व अध्यक्ष,बाल कल्याण समिति, रायबरेली, संप्रति–लोकपाल, (मनरेगा). अमेठी

सामने आ चुके हैं। किशोर अवस्था में लड़का और लड़की के एक–दूसरे के प्रति आकर्षण और उसके बाद सहमति से यौन संबंध बनाए। लेकिन जहाँ लड़की की उम्र 17 साल या 18 से थोड़ी कम है और लड़के की पूरी 18 भी है तो लड़के पर कठोर धाराओं पर तहत कार्रवाई होती है। हाल ही में मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार से सहमति से सेक्स की उम्र घटाने की वकालत करते हुए कहा है कि क्रिमिनल लॉ एक्ट (2013) में संशोधन ने समाज के ताने–बाने को बिगाड़ दिया है जिसका परिणाम किशोर लड़के भुगत रहे हैं।

इस तरह की घटनाओं ने देश के 9 कानून आपस में उलझते नजर आ रहे हैं। इसके मुताबिक 18 साल से कम उम्र के लड़के–लड़कियाँ नाबालिग हैं और उनसे सेक्शुअल रिलेशन बनाना अपराध है, फिर भले ही उन्होंने आपसी सहमति से संबंध क्यों न बनाए हों।

इंडियन पीनल कोड (1860) के तहत शारीरिक संबंध बनाने की सहमति देने के लिए कानूनी तौर पर तय उम्र 18 साल है। इससे कम उम्र की लड़की से संबंध बनाना रेप है, भले ही संबंध बनाने में लड़की की सहमति हो। जब तक लड़के की उम्र 21 साल (21 पूरा होने और 22वां साल लगने) और लड़की की उम्र 18 साल पूरे न हो जाएँ (18 पूरा होने और 19वां साल लगने), तब तक कानून की नजर में उन्हें बच्चा ही माना जाएगा। इंडियन पीनल कोड (1860) की धारा 375 रेप से संबंधित है। इस सेक्शन के अपवाद–2 के मुताबिक 15 साल से अधिक उम्र की पत्नी से संबंध बनाना रेप नहीं है। इन कानूनों के तहत लड़का 21 साल पूरे करने और लड़की 18 साल पूरे करने पर ही शादी कर सकते हैं, इससे पहले नहीं। अलग–अलग धर्म के कपल को शादी के लिए लड़के का 21 और लड़की को 18 साल का होना जरूरी है। लेकिन, पहले से शादीशुदा कपल इस एक्ट के तहत मैरिज रजिस्ट्रेशन कराना चाहें तो लड़के के साथ लड़की भी 21 साल की होनी चाहिए। इस कानून में लड़के–लड़की की उम्र साफ नहीं है। लेकिन प्यूबर्टी हासिल करने यानी पीरियड्स शुरू होने के बाद 14–15 साल की उम्र में लड़की की शादी हो सकती है। इस कानून के मुताबिक 18 साल से कम उम्र के बच्चे नाबालिग हैं। लेकिन, बेहद गंभीर अपराध करने वाले 16 से 18 साल तक के किशोर को बालिग भी माना जा सकता है। सभी धर्मों की लड़कियों के लिए शादी की उम्र 18 से 21 साल करने के लिए सरकार ने 2021 में यह बिल लोकसभा में पेश किया। फिलहाल यह बिल संसद की स्थायी समिति के पास है। उपरोक्त कानून कभी एक–दूसरे को काटते, कहीं मामला उलझाते और कहीं राहत की वजह बनते हैं। ऐसे में कैसे एक मत होगें समझ में नहीं आता। इंडियन पीनल कोड (1860) के सेक्शन 375 के मुताबिक 18 साल से कम उम्र की लड़की से संबंध बनाना रेप है। लेकिन, 375 के अपवाद–2 के मुताबिक 15 साल से अधिक उम्र की पत्नी से संबंध बनाना रेप नहीं है। जबकि यह पॉक्सो एक्ट (2012) और बाल विवाह निषेध (2006) अधिनियम का उल्लंघन है।

सुप्रीम कोर्ट भी धारा 375 के अपवाद पर अलग–अलग फैसले दे चुका है। 2017 में कोर्ट ने कहा कि 18 साल से कम उम्र की पत्नी से संबंध बनाना रेप माना जाएगा। मगर दूसरे केस में केरल हाईकोर्ट ने नाबालिग पत्नी से संबंध बनाने वाले पति को सजा सुनाई, तो इसी केस में सुप्रीम कोर्ट ने धारा 375 के अपवाद के आधार पर यह कहा कि जब पति–पत्नी के बीच संबंध बने, पत्नी की उम्र 15 साल से ज्यादा थी। इसलिए पति को बरी कर दिया गया।

बाल विवाह निषेध अधिनियम (2015) में 21 साल तक के लड़के और 18 साल तक की लड़की को नाबालिग कहा गया है। वहीं पॉक्सो एक्ट में 18 साल तक सभी नागरिक बच्चे हैं। दूसरी ओर जुवेनाइल जस्टिस एक्ट के तहत गंभीर अपराध करने वाले 16 से 18 साल के किशोरों को भी वयस्क माना जा सकता है। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डी० वाई० चंद्रचूड़ भी टीनेएजर्स के बीच सहमति से बने रोमांटिक रिश्तों को 'पॉक्सो एक्ट' के दायरे में शामिल करने पर चिंता जता चुके हैं। उनसे पहले दिल्ली हाईकोर्ट, पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट और मद्रास हाईकोर्ट समेत पूर्व जज सहमति से शारीरिक संबंध बनाने की उम्र घटाकर 16 साल करने पर विचार करने का सुझाव दे चुके हैं।

डाटा से जानकारी मिलती है कि पाक्सो के हर चौथे केस में लव कनेक्शन होता दिख रहा है। 2016 से 2020 के बीच असम, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में पॉक्सो के 7064 मामलों में अदालतों ने फैसले दिए। 24.3 प्रतिशत मामले रोमांटिक रिलेशनशिप से जुड़े मिले हैं। 87.9 प्रतिशत मामलों में लड़कियों ने आरोपी लड़कों के साथ रोमांटिक रिलेशनशिप की बात स्वीकार की है। 64.9 प्रतिशत मामलों में लड़कियाँ परिवार की धमकी–मारपीट और जबरदस्ती शादी करने की वजह से घर छोड़कर पार्टनर के साथ चली गई थी। इसके अतिरिक्त बालिग होने से पहले ही बालिकाएँ इंटिमेट हो रहे हैं। जिसमें 39 प्रतिशत लड़कियाँ 18 साल से पहले ही संबंध बना चुकी होती है। 23 प्रतिशत लड़कियों की शादी 18 वर्ष की उम्र से पहले कर दी जाती है। 17.7 प्रतिशत लड़कों की शादी 21 साल की उम्र से पहले हो जाती है। 6.8 प्रतिशत लड़कियाँ 19 साल की उम्र से पहले माँ बन जाती है।

भारत में पॉक्सो एक्ट 2012 से पहले यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन राइट्स ऑफ चाइल्ड के अनुसार बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रतिबंध था। दुनिया के कई देशों में सहमति से सेक्स की उम्र 16 वर्ष है। फिलीपींस में यह 12 वर्ष है। दुनिया के सभी देशों में सहमति की सबसे कम उम्र नाइजीरिया में 11 साल है। यूरोप के अधिकतर देशों में 14 से 16 वर्ष सहमति की उम्र है। अभी हाल में यौन अपराधों से जुड़े कानून में बदलाव करते हुए जापान में सहमति से सेक्स की उम्र 13 से बढ़ाकर 16 की गई है। गौरतलब है कि दुनिया भर में सहमति से सेक्स की उम्र को लेकर अलग–अलग राय है। भारत में पहले यह उम्र

16 ही थी। अब 18 साल के बाद से नौजवान लड़कों पर इसका बुरा असर देखने को मिल रहा है। नौजवान लड़के अपराधी बनाकर जेलों में डाले जा रहे हैं। भारत जैसे देश में जहाँ सेक्स बहुत ही टैबू विषय है उस पर खुलकर चर्चा नहीं होती है। वहाँ किशोरों पर नैतिकता के आधार पर पहरेदारी और किशोरावस्था में यौन संपर्कों को व्यापता से देखने की आवश्यकता है। 14 जुलाई 2023 को एक केस की सुनवाई के दौरान बॉम्बे हाई कोर्ट ने देश में सेक्स के लिए सहमति की उम्र कम करने पर सोचने के लिए कहा है। अदालत ने उदाहरण देते हुए कहा है कि कई अन्य देशों में सहमति की उम्र 14 से 16 साल के बीच है। अदालत ने तर्क देते हुए कहा है कि वर्तमान की 18 साल की उम्र वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक है। सहमति से नाबालिगों के संबंधों के लिए उन्हें सजा देना उनके हित में नहीं होगा। जस्टिस भारती डांगरे की सिंगल जज बेंच ने कहा है कि पॉक्सो ऐक्ट विपरीत सेक्स प्रति स्वाभाविक भावनाओं को नहीं रोक सकता है ख़ासकर किशोरों में बॉयोलोजिकली और मनोवैज्ञानिक बदलावों के कारण। अदालत ने कहा है कि एक नाबालिग लड़के को एक नाबालिग लड़की के साथ संबंध बनाने के लिए दंड देना बच्चे के सर्वोत्तम हित के ख़िलाफ होगा।

इस संबंध में मेरा व्यक्तिगत मानना है कि सहमति को केवल 'हाँ' या 'ना' की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि ये भी समझना चाहिए कि हाँ कहने के बाद उसका नतीजा क्या होगा। विशेषकर तब जब भारत में 18 साल से कम उम्र वाले शख्स को बालिग ही नहीं माना जाता है। भारत में इंडियन मेजोरिटी एक्ट, 1875 के अनुसार 18 साल के युवा व्यस्क या बालिग माने गए हैं और इसके साथ ही उन्हें कई अधिकार भी दिए गए हैं।

अगर 'सहमति की उम्र' को घटाया जाता है तो इससे यौन अपराधों से बच्चों के सरंक्षण के लिए बने क़ानून (पॉक्सो) के प्रावधानों और नाबालिग से जुड़े अन्य क़ानूनों पर भी असर होगा।

यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण के लिए पॉक्सो एक्ट 2012 लाया गया था। इसमें 18 साल से कम उम्र के व्यक्ति को 'बच्चा' परिभाषित किया गया है और अगर 18 साल से कम उम्र के साथ सहमति से भी संबंध बनाए जाते हैं तो वो अपराध की श्रेणी में आता है।

पॉक्सो एक्ट के तहत 18 साल से कम उम्र के लोगों के बीच सभी प्रकार के यौन कृत्य अपराध हैं। भले ही नाबालिगों के बीच सहमति हो। कानून की धारणा ये है कि 18 साल से कम उम्र के लोगों के बीच कानूनी अर्थ में कोई सहमति नहीं होती है। ऐसे मामले किशोरों पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा किए गए शोध को देखते हुए विधायिका को इस मामले पर विचार करना चाहिए। यदि उम्र घटाया जाता है तो इससे लड़कियों पर होने

वाले शारीरिक असर जैसे वो गर्भवती हो जाती हैं तो उसके बाद आने वाली तकलीफों, मानसिक प्रभाव को देखा जाना चाहिए। वहीं अगर बच्चा हो जाता है तो वो नाजायज कहलाएगा और फिर उसका सामाजिक असर भी होता है।

भारत में यौन अपराध से नाबालिगों को बचाने के लिए पाक्सो अधिनियम, 2012 पहले से लागू है। इस कानून में यह परिभाषित है कि 18 साल से कम उम्र के बच्चे की सहमति महत्वहीन होती है। ऐसे में यदि लड़की संबंध बनाने के लिए सहमति देती भी है, तो उसे वैध नहीं समझा जाएगा और जो पुरुष संबंध बनाता है उसे यौन उत्पीड़न का दोषी माना जाएगा। इस संबंध में मैं भी मद्रास हाई कोर्ट ने अपने फैसले के पक्ष में हूँ। मद्रास हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा है कि अगर नाबालिग लड़की किसी नाबालिग के साथ प्यार में भी सहमति से संबंध में जाती हैं तो भी पॉक्सो कानून के तहत लड़के के खिलाफ मामला बनता है।

टिप्पणीः यह लेखक के अपने विचार हैं।

शोध पत्रिका मंगाने हेतु आवेदन पत्र

(APPLICATION FORM FOR SUBSCRIPTION)

प्रति

प्रधान सम्पादक 'ग्लोकल दृष्टि'

ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग

मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

महोदय/महोदया,

मैं आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका 'ग्लोकल दृष्टि' को वर्ष.....के लिये व्यक्तिगत/ संस्था हेतु नियमित रुप से मंगाने का/की इच्छुक हूँ। अतः मैं नकद/बैंक ड्राफ्ट द्वारा एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष के लिये अंकन रु0 .....की राशि जमा कर रहा/रही हूँ।

भवदीय

नाम व हस्ताक्षर

पूरा नाम (Full Name in Block Letters)

पत्राचार का पता (Mailing Address)

.....

दूरभाष संख्या (Telephone No.) .....

ई–मेल पता (E-mail address)

.....

भुगतान का विवरण (Transaction Details)

.....

मूल्य दर: व्यक्तिगतः रु0 500 प्रति वर्ष संस्थागतः रु0 800 प्रति वर्ष

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

प्रो. शोभा त्रिपाठी,

प्रधान सम्पादक, ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग,

मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121, shobha.tripathi@theglocaluniversity.in

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 45–48

लोकसभा और राज्य विधान सभा के लिए निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन

कविता गोस्वामी*

सारांश

यह परिसीमन तकनीकों की बड़ी श्रृंखला द्वारा दिखाया गया है, जिनमें से कई अत्यधिक प्रभावी हैं। यदि वर्तमान प्रथाएं पहले से ही उन आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती हैं तो उन्हें निर्धारित करना महत्वपूर्ण है। इस तरह परिसीमन प्रक्रिया का उद्देश्य इन मानकों को प्राप्त करना हो सकता है। निष्पक्षता समानता प्रतिनिधित्व गैर–भेदभाव और पारदर्शिता के आवश्यक मूल्यों को उन सभी मानदड़ों को रेखांकित करना चाहिए महले ही उन्हें स्थापित और विकासशील दोनों लोकतंत्रों पर लागू होने के लिए अनुकुल होने की आवश्यकता हो। एक निष्पक्ष सीमा प्राधिकरण और एक खुली और पारदर्शी प्रक्रिया के लिए आवश्यकताओं को पूरा करना एक ऐसी प्रक्रिया को वैधता और विश्वसनीयता देता है जिसके महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव हो सकते हैं।

सीमा परिसीमन अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत मानक और सर्वोत्तम अभ्यास

भारत में परिसीमन आयोग विभिन्न विधायी निकायों के चुनावों के लिए निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का सीमांकन करके उचित प्रतिनिधित्व और राजनीतिक शक्ति का समान वितरण सुनिश्चित करके सोकतांत्रिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रत्येक जनगणना के बाद निर्वाचन क्षेत्रों को पुनर्वितरित करने के लिए संविधान द्वारा परिसीमन आयोग की स्थापना की गई थी। उसका प्राथमिक उद्देश्य जनसांख्यिकीय परिवर्तन जनसंख्या बदलाव को संबोधित करना और आनुपातिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना है। राजनीतिक परिदृश्य प राजनीतिक परिदृश्य प्रतिनिधित्व और लोकतांत्रिक प्रणाली के कामकाज पर इसके प्रभाव के कारण आयोग की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती

*कविता गोस्वामी, शोधार्थी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–मो० न० 8429455712

है। हालाँकि वर्तमान परिसीमन आयोग की स्थापना 2001 की जनगणना के बाद. 2002 के परिसीमन अधिनियम के तहत की गई थी। इस अधिनियम का उद्देश्य एक व्यक्ति एक वोट और समान प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को बनाए रखना था। परिसीमन आयोग की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और यह भारत के चुनाव आयोग के सहयोग से काम करता है। सीमांकन एक राजनीतिक–प्रशासनिक अभ्यास है जो स्वाभाविक रूप से संवेदनशील है और इसके लिए सावधानीपूर्वक दृष्टिकोण की आवश्यकता है क्योंकि यह राजनीतिक और सामाजिक दोनों मुद्दे से संबंधित है।

अनुसंधान के उद्देश्य

परिसीमन आयोग के एतिहासिक विकास का विश्लेषण करना

अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए सीटों के आरक्षण के माध्यम से समावेशिता बढ़ाने में आयोग की भूमिका का आकलन करना।

परिकल्पना

आयोग की स्वतंत्रता और निष्पक्षता की भूमिका का परीक्षण करना।

निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन और पुनः समायोजन के प्रभाव का परीक्षण करना।

आयोग की कार्यप्रणाली की पारदर्शिता की जाँच करना।

अनुसंधान प्रश्न

परिसीमन आयोग किस प्रकार चुनावी सीमाओं के सीमांकन के माध्यम से न्यायसंगत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करता है? समावेशिता को बढ़ावा देने में अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित सीटें कितनी प्रभावी रही है?

अनुसंधान क्रियाविधि

अनुसंधान क्रियाविधि में ऐतिहासिक वर्णनात्मक तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक विधियो का प्रयोग किया गया है।

उपसहांर

निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं को खुले और पारदर्शी तरीके से स्थापित किया जाना चाहिए, जिसमें परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। परिसीमन प्रक्रिया की अखंडता में जनता का विश्वास पारदर्शिता पर निर्भर

करता है। यदि हितधारकों के पास प्रक्रिया की बारीकी से जांच करने की क्षमता है, तो वे परिणाम को स्वीकार करने की अधिक संभावना रखते हैं—विशेष रूप से यदि प्रक्रिया के परिणाम परिसीमन के संदर्भ में यथासंभव राजनीतिक रूप से आरोप लगाए जाते हैं। इसे पूरा करने के लिए उन्हें सीमा प्राधिकरण के निर्णयों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और उनमें भाग होने में सक्षम होने की आवश्यकता है। सबसे पारदर्शी परिसीमन प्रक्रिया को संभव बनाते समय ध्यान में रखने के लिए कई चीजें हैं निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं के बारे में उनकी प्रतिक्रिया और चिंताओं को प्राप्त करने के लिए प्रक्रिया के दौरान हितधारकों से परामर्श किया जाना चाहिए। सीमाओं के अतिम आवंटन के संबंध में किए गए निर्णयों को समझाया जाना चाहिए, खासकर यदि आपत्तियां उठाई गई है। जिस विधि का उपयोग किया जाएगा और विशेष रूप से चुनावी जिले की सीमाओं को खींचने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदण्ड़ों की पहचान की जानी चाहिए और ड्राडंग चरण शुरू होने से पहले सार्वजनिक किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

जेन्सेनियस. एफ० आर० (2013)। क्या परिसीमन आयोग मुसलमानों के लिए अनुचित था? भारतीय राजनीति में अध्ययन 1(2), 213—229।

सिंह, सी० पी० (2000)। भारत में निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन की एक सदी राजनीतिक भूगोल, 19(4), 517—5321।

वर्मा ए० के० (2002)। भारत के परिसीमन अभ्यास में मुद्दे और समस्याए। राजनीति विज्ञान का भारतीय जीनल, 371—388।

कुमार ए० (2013)। परिसीमन से निपटनाः नई चुनावी रणनीतियाँ। भारतीय राजनीति में उभरते रुझानों में (पीपी 29—61) रूटलेज इंडिया।

पॉलिटिकल सांइस 24 (2), 129—147 मैकमिलन. ए० (2000) परिसीमन, लोकतंत्र और संवैधानिक रोक की समाप्ति। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 1271—1276।

सिंह, वी० और अशेष ए० (2020), चुनावी सीमाओं को फिर से तैयार करना, परिसीमन के रहस्यों को उजागर करना। कुमार ए. और श्रीवास्तव के सीमा रेखाएं और मतपत्रः भारत में परिसीमन चुनावी गतिशीलता और आरक्षण की खोज भारत। निर्वाचन आयोग। (1967)। संसदीय एवं विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन आदेश. 1966।

अदिति (2015)। चुनावी सुधार की राजनीति भारत में परिसीमन गतिरोध। एसओएएस एलजे. 2. 46 कुमार, एस० (2003) चौथा परिसीमन आयोग पुराने और नए मुद्दे। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक 1111—1113।

आ एन० (1963) निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमनरू कुछ प्रभावी मानदंडों के लिए एक दलील। द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस 24(2), 129–147।

मैकमिलन, ए० (2000) परिसीमन लोकतंत्र और सवैंधानिक रोक की समाप्ति। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 1271–1276।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 49–54

भारत में डिजिटल लाइब्रेरी की विशेषताएँ

शालू विश्वकर्मा*

सूचना प्रबंधन और प्रसार की गतिशील परिदृश्य में डिजिटल पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक ज्ञान भंडारों को तकनीकी रूप से उन्नत में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका सुलभ और समावेशी प्लेटफार्म। प्रस्तुत शोधपत्र डिजिटल पुस्तकालयों की विशेषता के दायरे की खोज करता है। भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत वाला देश है। अध्ययन में इस बात पर गहनता से चर्चा की गई है बहुआयामी पहलू जो डिजिटल पुस्तकालय की कार्य क्षमता और प्रभाव को परिभाषित करते हैं उनकी भूमिका पर सूचना तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने, सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित करने सहयोगात्मक अनुसंधान को बढ़ावा देने और आजीवन सीखने की सुविधा प्रदान करना। विश्लेषण में तकनीकी प्रगति उपयोगकर्ता–केंद्रित शामिल है डिजाइन, सामग्री विविधता और नीति ढांचे, चुनौतियों और अंतर्दृष्टि प्रदान करना। भारतीय संदर्भ में डिजिटल पुस्तकालयों के विकास को आकार देने वाले अवसर।

परिचय

आज के समय में सूचना और ज्ञान प्राप्त करने के लिए पारंपरिक पुस्तकालय एकमात्र विकल्प नहीं रह गए हैं। बढ़ती दुनिया आज की डिजिटल पीढ़ी में प्रौद्योगिकी और उन्नति का उदय विज्ञान और अन्य क्षेत्र डिजिटल तरीके से हमारे लिए लाइब्रेरी लाना संभव बनाते हैं। ई–लाइब्रेरी या इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी ने हम सभी के लिए सूचना और ज्ञान तक पहुँचाने का तरीका बदल दिया है। इससे जानकारी खोजने और पुनः प्राप्त करना अधिक त्वरित, आसान और सुविधाजनक हो गया है। हमारे लिए इलेक्ट्रॉनिक

*शालू विश्वकर्मा (डिप्टी लाइब्रेरियन), केन्द्रीय पुस्तकालय, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर–247121 – shalu@theglocaluniversity.in

पुस्तकालय या ई–पुस्तकालय का महत्व अतिरंजित नहीं किया जा सकता है। हमें कहीं से भी कभी भी सूचना और ज्ञान प्राप्त करने के लिए बस एक क्लिक की जरूरत होती है। ई–लाइब्रेरी में संसाधनों की कोई सीमा नहीं है हमारे लिए बहुत सारे संसाधन एक क्लिक पर उपलब्ध है। ई–लाइब्रेरी संसाधनों का खजाना प्रदान करती है। जो छात्रों और अन्य लोगों की मदद कर सकती है जो पढ़ना पसंद करते हैं और अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहते हैं उनके ज्ञान और कौशल को बढ़ावा मिलेगा और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा मिलेगा। छात्र डिजिटल सामग्री का भी उपयोग कर सकते हैं फोन और लैपटॉप के माध्यम से इंटरनेट के माध्यम से जो पारंपरिक पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं हो सकता है उन्हें प्रदान करना अपने अध्ययन के क्षेत्र में नवीनतम जानकारी और शोध तक पहुँच, जबकि पारंपरिक पुस्तकालयों की सीमाएँ होती है और संसाधन सीमित होते हैं। इन सब के अलावा इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी महंगी किताबें खरीदने की जरूरत को खत्म करके छात्रों के पैसे को बचाने में मदद कर सकती हैं। पाठ्य पुस्तक और संदर्भ सामग्री डिजिटल युग में बहुत सारे संसाधन उपलब्ध है और हमारी जरूरत के अनुसार हम जानकारी को प्रिंट संग्रहित और प्राप्त कर सकते हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी का उद्देश्य

डिजिटल लाइब्रेरी (ई–लाइब्रेरी या इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी) डिजिटल संसाधनों का एक संग्रह है जो सभी के लिए सुलभ है। सभी उपयोगकर्ता इंटरनेट के माध्यम से पुस्तकों, लेखों, पत्रिकाओं, शोध पत्र मल्टीमीडिया के रूप में प्राप्त कर सकते है एवं अन्य प्रकार की सामग्री जो सभी के लिए आसानी से उपलब्ध हैं उन्हें प्राप्त कर सकते हैं। डिजिटल लाइब्रेरी का उद्देश्य है उपयोगकर्ता को सूचना और ज्ञान की व्यापक श्रृंखला तक त्वरित आसान और अधिक सुविधाजनक पहचान प्रदान करना कहीं भी और कभी भी। डिजिटल लाइब्रेरी लागत प्रभावशीलता, स्थान–बचत और जैसे लाभ भी प्रदान करती है। कुछ क्लिक में जल्दी और कुशलता से जानकारी खोजने में प्राप्त करने की क्षमता वे विशेष रूप से उपयोगी है उन छात्रों शोधकर्ताओं और पेशेवरों के लिए जो पढ़ना पसंद करते हैं और अपने ज्ञान और कौशल को व्यापक बनाना चाहते हैं और जिन्हें अपने काम के लिए अधिकतम जानकारियों की आवश्यकता होती है।

डिजिटल लाइब्रेरी के प्रकार

डिजिटल लाइब्रेरी के तीन प्रकार हैं: –

1. शैक्षणिक डिजिटल पुस्तकालय

यह पुस्तकालय मूलतः संस्थानों, विद्यालयों के लिए हैं और यह एकेडमिक अनुसंधान को समर्थन देते हैं। इनमें आमतौर पर पत्रिकाओं, शोध पत्रों और अनेकों विद्वानों की पुस्तकें उपलब्ध होती हैं।

2. सार्वजनिक डिजिटल पुस्तकालय

यह डिजिटल लाइब्रेरी जनता की सेवा करती है और आम जनता के लिए संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती हैं। इनमें शामिल हैं ई – पुस्तकें, ऑडियोबुक और ऑनलाइन पत्रिकाएँ जैसे संसाधन।

3. विशिष्ट डिजिटल पुस्तकालय

यह विशेष डिजिटल लाइब्रेरी है जो किसी विशेष विषय या विषय क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करती हैं। उदाहरण में मेडिकल शामिल है डिजिटल पुस्तकालय, कानूनी डिजिटल पुस्तकालय और कला के लिए डिजिटल पुस्तकालय।

4. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय

यह डिजिटल लाइब्रेरी है जो सरकारों एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा उपयोगकर्ताओं तक पहुँच प्रदान करने के लिए बनाई जाती है। उदाहरण में लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस और यूरोपिय डिजिटल लाइब्रेरी शामिल है।

5. कॉर्पोरेट डिजिटल लाइब्रेरी

यह पुस्तकालय की सबसे महत्वपूर्ण प्रकारों में से एक है। जिन्हें विशेष रूप से संगठनों द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए बनाया जाता है। ग्राहकों के लिए उपयोगी जानकारी और उनमें प्रशिक्षण सामग्री तकनीकी दस्तावेज और विपणन सामग्री जैसे संसाधन शामिल होते हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी की विशेषताएँ

डिजिटल पुस्तकालय की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैः –

1. डिजिटल संसाधनों तक पहुँच

डिजिटल पुस्तकालय उपयोगकर्ता को विशेष संसाधनों की एक विस्तश्त श्रृंखला तक पहुँच प्रदान करते हैं। जैसे की ई–पुस्तकें, ऑडियोबुक, वीडियो, चित्र, शोध पत्र और शैक्षिक पत्रिकाएँ।

2. उपलब्धता

डिजिटल लाइब्रेरी उपयोगकर्ता के 24/7 उपलब्ध है। जिससे उन्हें कहीं से भी संसाधनों तक सुविधाजनक पहुँच मिलती है और किसी भी समय वह सूचना प्राप्त कर सकते हैं।

3. खोज और पुनः प्राप्ति

डिजिटल पुस्तकालय उपयोगकर्ता को शक्तिशाली खोज उपकरण प्रदान करते हैं और उन्हें संसाधनों को आसानी से खोजने में सक्षम बनाते हैं।

4. दूरस्थ पहुंच

उपयोगकर्ता अपने व्यक्तिगत उपकरण जैसे कंप्यूटर टेबलेट या स्मार्टफोन का उपयोग करके दूर से ही डिजिटल लाइब्रेरी तक पहुंच सकते हैं।

5. लागत प्रभावी

डिजिटल पुस्तकालय अक्सर पारंपरिक पुस्तकालय की तुलना में अधिक लागत प्रभावी होते हैं। क्योंकि वह भौतिक पुस्तकालय की आवश्यकता को समाप्त कर देते हैं।

6. निजीकरण

डिजिटल लाइब्रेरी उपयोगकर्ता को व्यक्तिगत खाता बनाकर अपनी खोज को सहेज कर अपने अनुभव को अनुकूलित करने की अनुमति देता है। इतिहास को अपडेट करना और नए संसाधनों के लिए अलर्ट सेट करना भी उपलब्ध होता है।

7. संरक्षण

डिजिटल पुस्तकालय दुर्लभ या बहुमूल्य सामग्रीयों को डिजिटलीकृत करके सांस्कृतिक विरासत और सूचना के संरक्षण में सक्षम बनाते हैं।

छात्रों के लिए डिजिटल लाइब्रेरी का महत्व

1. यह उपयोगकर्ता के आधुनिक जानकारी प्रदान करता है

डिजिटल लाइब्रेरी उपयोगकर्ता को नवीनतम संसाधनों तक पहुंच प्रदान करती है। डिजिटल संसाधनों को नियमित रूप से अपडेट किया जाता है और पाठक अपनी रुचि के क्षेत्र में नवीनतम शोध और विकास से अवगत रह सकते हैं।

2. कोई निश्चित समय सीमा नहीं

डिजिटल पुस्तकालय में कोई निश्चित या कठोर समय सीमा नहीं होती। जिससे उपयोगकर्ता को किसी भी समय और किसी भी स्थान से संसाधनों तक पहुंच प्रदान हो

जाती है। यह लचीलापन उपयोगकर्ताओं के लिए अपनी गति से अध्ययन या अनुसंधान करने के लिए आसान बनाता है।

3. यह संसाधनों और ज्ञान को संरक्षित करता हैं

डिजिटल लाइब्रेरी भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों और ज्ञान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दुर्लभ या नाजुक सामग्री के लिए डिजिटल लाइब्रेरी यह सुनिश्चित करती है कि वह संसाधन शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए उपलब्ध हों। इस प्रकार विश्व भर में सांस्कृतिक विरासत और बौद्धिक संपदा के संरक्षण में योगदान दिया जा रहा है।

4.यह आसानी से उपलब्ध है

डिजिटल पुस्तकालय उपयोगकर्ता के लिए आसानी से उपलब्ध है। क्योंकि वह अपनी व्यक्तिगत डेटा का उपयोग करके दूरस्थ रूप से संसाधन तक पहुंच सकते हैं। यह भौतिक पुस्तकालय में जाने की आवश्यकता को समाप्त करती है जिससे उनका समय और प्रयास बचता है। साथ ही यह सुनिश्चित करता है कि उन्हें कहीं से भी और किसी भी समय डिजिटल संसाधनों के विशाल श्रृंखला तक पहुंच प्राप्त हो सके।

5. वास्तविक समय में बातचीत में सुधार करना

डिजिटल लाइब्रेरी सहयोग, चर्चा और सांझाकरण की सुविधा प्रदान करके उपयोगकर्ता के बीच वास्तविक समय पर बातचीत को सक्षम बनाती है। ऑनलाइन फोरम, चैट रूम और अन्य इंटरएक्टिव टूल के उपयोग से उपयोगकर्ता एक दूसरे से जुड़ सकते हैं एक दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं विचारों का आदान प्रदान कर सकते हैं और सार्थक चर्चा में भाग ले सकते हैं जिससे उनका सीखने का अनुभव बेहतर होता है।

6. स्वचालित लाइब्रेरी प्रबंधन

डिजिटल पुस्तकालय स्वचालित पुस्तकालय प्रबंधन प्रणालीयों का उपयोग करते हैं। जो कुशल संगठन भंडारण और अन्य कार्यों में मदद करते। यह सिस्टम नियमित कार्यों जैसे कैटालॉगिंग इंडेक्सिग और स्वचालित करते हैं संग्रह करना जिससे पुस्तकालय कर्मचारियों को उपयोगकर्ता सहायता और संग्रह जैसे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्वतंत्रता मिलती है।

7. उपलब्धता

डिजिटल लाइब्रेरी उपयोगकर्ताओं के लिए 24/7 उपलब्ध है। जिससे लाइब्रेरी के खुलने के समय के बारे में चिंता करने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। यह किसी

भी समय और किसी भी स्थान से डिजिटल संसाधनों तक पहुँच सकते हैं। जिससे उनके लिए अध्ययन करना संचालन करना सुविधाजनक हो जाता है। जब भी उन्हें आवश्यकता हो जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

8. पर्यावरणीय स्थिरता

डिजिटल पुस्तकालय कागज और अन्य संसाधनों के उपयोग को कम करके पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान देते हैं। जो की पारंपरिक पुस्तकालय में संभव नहीं हो सकता।

निष्कर्ष

आज की डिजिटल पीढ़ी में प्रौद्योगिकी के उद्धव ने हमारे लिए डिजिटल रूप में पुस्तकालय लाना संभव बना दिया है। ई–लाइब्रेरी या इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी ने हम सभी के लिए सूचना और ज्ञान तक पहुँचाने का तरीका बदल दिया है और जानकारी खोजने प्राप्त करना तेज आसान और अधिक सुविधाजनक बन गया है। ई–लाइब्रेरी संसाधनों का खजाना प्रदान करती है जो उन छात्रों और अन्य लोगों की मदद करती है जो पढ़ना पसंद करते हैं और अपने ज्ञान और कौशल को व्यापक बनाना चाहते हैं और अपनी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. इंडिया. नेशनल पोलिसी ऑन ऐजुकेशन (1986). नई दिल्लीः मिनिस्ट्री ऑफ हयूमन रीसोर्स एडं डेवलेपमेंटः डिपार्टमेंट ऑफ ऐजुकेशन.

2. लाइब्रेरी रीसोर्स एडं देयर रोल इन ऐजुकेशन (2011, अक्टूबर 04). रीट्रिवड जनवरी 22, 2021, फ्राम osarome.blogspot.com : http://osarome.blogspot.com/2011/10/library-resources-and-their-role-in.html

3. मोरिस, टी०, एडं एम० जे० एडं पेरिट, पी० (2003, दिसम्बर 1). ए हायर स्टेन्डर्डः मेनी स्टेटे हेव रीसेन्टली रीवाइज्ड देयर सरटीफिकेशंस रिक्वायरमेंटस फार दी स्कूल लाईब्रेरियन. स्कूल लाइब्रेरी जर्नल.

4. Shodhganga.inflibnet.ac.in (एन. डी.) रीट्रिवड जनवरी 20, 2021 फ्राम इंटरनेट सोर्सःhttp://shodhganga.inflibnet.ac.in/ ट्रीनेस, एस० (2018, सितम्बर 13).

5. एजुकेशन इन इंडिया. रीट्रिवड जनवरी 25, 2021, फ्राम wenr.wes.org:http://wenr.wes.org/2018/09/education-in-india.

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 55–60

लाल रक्त कोशिका विकारों पर एक शोध पत्र

अर्चना*

सारांशः

लाल रक्त कोशिका विकार शरीर में रक्त कोशिकाओं की सामान्य कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं। ये विकार विभिन्न कारणों से उत्पन्न हो सकते हैं जिनमें अनुवांशिक, आहारिक और पर्यावरणीय कारक शामिल हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य लाल रक्त कोशिका विकारों के विभिन्न प्रकारों, उनके कारणों, लक्षणों और उपचार विधियों पर विस्तृत अध्ययन करना है। इसके साथ ही इस क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और उन्नत चिकित्सा तकनीकों पर भी प्रकाश डाला जाएगा। इस शोध पत्र में एनीमिया, थैलेसीमिया, सिकल सेल एनीमिया जैसे प्रमुख लाल रक्त कोशिका विकारों का विश्लेषण किया गया है।

लाल रक्त कोशिकाएँ शरीर में ऑक्सीजन का परिवहन करती हैं और उनके विकार शरीर के सामान्य कार्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं। लाल रक्त कोशिका विकारों का समय पर निदान और सही उपचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध पत्र में हम लाल रक्त कोशिका विकारों के विभिन्न प्रकारों का विश्लेषण करेंगे और उनके उपचार में हो रहे नवाचारों पर चर्चा करेंगे।

लाल रक्त कोशिका विकारों के प्रकार

एनीमियाः एनीमिया की विभिन्न प्रकारें होती हैं जिनमें से प्रत्येक का कारण और उपचार भिन्न हो सकता है। सामान्यतः, एनीमिया का मुख्य कारण शरीर में लौह तत्व की कमी होता है जिसे आयरन डिफिशिएंसी एनीमिया कहते हैं। इसके अलावा विटामिन बी12 की कमी से भी एनीमिया हो सकता है जिसे पर्निशियस एनीमिया कहते हैं। कुछ मामलों में रक्त का अत्यधिक नुकसान (जैसे– चोट, शल्य चिकित्सा, या मासिक धर्म) भी एनीमिया का कारण बन सकता है (शर्मा, पी० एवं गुप्ता, आर० 2017)।

---

*सहायक प्रोफेसर, शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह, उत्तर प्रदेश

एनीमिया के प्रकार

1. आयरन डिफिशिएंसी एनीमियाः यह एनीमिया का सबसे सामान्य प्रकार है। इसके लक्षणों में थकान, कमजोरी, श्वास की कमी और सिरदर्द शामिल हैं। इसका उपचार आयरन सप्लिमेंट्स और आयरन–युक्त आहार द्वारा किया जाता है (अग्रवाल, आर0 2018)।

2. पर्निशियस एनीमियाः यह विटामिन बी12 की कमी के कारण होता है। इसके लक्षणों में शारीरिक कमजोरी, सिरदर्द और तंत्रिका तंत्र की समस्याएँ शामिल हैं। विटामिन बी12 के इंजेक्शन या सप्लिमेंट्स द्वारा इसका उपचार किया जाता है (शुक्ला, आर० 2020)।

3. अप्लास्टिक एनीमियाः यह तब होता है जब शरीर पर्याप्त नई रक्त कोशिकाओं का उत्पादन नहीं कर पाता। इसके कारणों में रसायन, विकिरण, संक्रमण, और आनुवांशिक विकार शामिल हो सकते हैं। उपचार में दवाएँ, रक्त आधान और बोन मैरो ट्रांसप्लांट शामिल हैं। (शर्मा, ए० 2017)।

4. हेमोलिटिक एनीमियाः इसमें लाल रक्त कोशिकाओं का विनाश बहुत तेजी से होता है। इसका कारण संक्रमण, दवाएँ और आनुवांशिक विकार हो सकते हैं। उपचार में स्टेरॉयड, रक्त आधान, और स्प्लेनेक्टॉमी (प्लीहा को हटाना) शामिल हैं(कौर, पी० 2018)।

थैलेसीमिया

थैलेसीमिया एक अनुवांशिक विकार है जिसमें हीमोग्लोबिन के उत्पादन में कमी होती है। यह विकार मुख्यतः भूमध्य सागरीय, अफ्रीकी और एशियाई क्षेत्रों में पाया जाता है। थैलेसीमिया के दो प्रमुख प्रकार होते हैंः अल्फा थैलेसीमिया और बीटा थैलेसीमिया (जैन, एम० 2016)।

थैलेसीमिया के प्रकारः

1. अल्फा थैलेसीमियाः इसमें अल्फा ग्लोबिन चेन के उत्पादन में कमी होती है। इसके उपप्रकारों में थैलेसीमिया माइनर, हेमोग्लोबिन एच रोग और हाइड्रोप्स फेटलिस शामिल हैं।

2. बीटा थैलेसीमियाः इसमें बीटा ग्लोबिन चेन के उत्पादन में कमी होती है। इसके उपप्रकारों में थैलेसीमिया माइनर, थैलेसीमिया इंटरमीडिया और थैलेसीमिया मेजर शामिल हैं। थैलेसीमिया मेजर को कूली एनीमिया भी कहा जाता है।

थैलेसीमिया का उपचारः

• **रक्त आधानः** यह उपचार थैलेसीमिया मेजर के मरीजों के लिए आवश्यक होता है जिसमें नियमित अंतराल पर रक्त आधान किया जाता है।

• **स्टेम सेल ट्रांसप्लांटः** यह उपचार उन मरीजों के लिए है जिनके पास मैचिंग डोनर उपलब्ध हो। इसमें हेमाटोपोइएटिक स्टेम सेल्स का ट्रांसप्लांट किया जाता है (यादव, एस० 2017)।

• **जीन थेरेपीः** यह एक उभरती हुई तकनीक है जिसमें दोषपूर्ण जीन को सही किया जाता है या बदल दिया जाता है। यह उपचार थैलेसीमिया के लिए भविष्य में एक महत्वपूर्ण विकल्प हो सकता है (सिंह, आर० 2015)।

सिकल सेल एनीमिया

सिकल सेल एनीमिया एक आनुवांशिक विकार है जिसमें लाल रक्त कोशिकाएँ अर्धचंद्राकार (सिकल आकार) हो जाती हैं जिससे वे सामान्य रूप से ऑक्सीजन का परिवहन नहीं कर पाती हैं। यह विकार मुख्यतः अफ्रीकी, भारतीय और अरब देशों में पाया जाता है (वर्मा, एस० 2019)।

सिकल सेल एनीमिया के लक्षण

– अत्यधिक दर्द (सिकल सेल क्राइसिस)

– हड्डियों और जोड़ों में सूजन

– संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता

– हड्डियों का नष्ट होना

– दृष्टि समस्याएँ

सिकल सेल एनीमिया का उपचार

• **दर्द निवारक दवाएँः** सिकल सेल क्राइसिस के दौरान दर्द को कम करने के लिए दर्द निवारक दवाएँ दी जाती हैं (गुप्ता, के० 2019)।

• **रक्त आधानः** रक्त आधान सिकल सेल एनीमिया के गंभीर मामलों में आवश्यक होता है (पाण्डेय, एम० 2016)।

• हाइड्रोक्सीयूरियाः यह दवा सिकल सेल क्राइसिस की संख्या को कम करने में मदद करती है (चतुर्वेदी, डी० 2019)।

• **बोन मैरो ट्रांसप्लांटः** यह एकमात्र उपचार है जो सिकल सेल एनीमिया को पूरी तरह ठीक कर सकता है लेकिन इसके लिए मैचिंग डोनर की आवश्यकता होती है (सिंह, जे० 2020)।

नवीनतम शोध और प्रगति

लाल रक्त कोशिका विकारों के उपचार में हो रहे नवाचारों में जीन थेरेपी, स्टेम सेल अनुसंधान और नई दवाओं का विकास शामिल है। हाल के वर्षों में इन विकारों के उपचार में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जिससे मरीजों की जीवन गुणवत्ता में सुधार हुआ है (मिश्रा, ए० 2020)।

निष्कर्ष

लाल रक्त कोशिका विकार गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं लेकिन उचित निदान और उपचार से इन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। इस क्षेत्र में हो रहे नवीनतम नवाचार और शोध चिकित्सा विज्ञान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भविष्य में इन विकारों के उपचार में और भी अधिक उन्नत तकनीकों का विकास होने की संभावना है जिससे मरीजों को और अधिक लाभ होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोड़ा, एस० (2018). "लाल रक्त कोशिका विकारों का परिचय," भारतीय चिकित्सा जर्नल, 10(2), 115–123.।

2. शर्मा, पी4 एवं गुप्ता, आर० (2017). "एनीमियाः कारण और उपचार," भारतीय रक्त बैंकिंग सोसायटी पत्रिका, 22(4), 134–142.।

3. जैन, एम० (2016). "थैलेसीमिया और इसके उपचार," चिकित्सा और स्वास्थ्य विज्ञान, 15(3), 89–95.।

4. वर्मा, एस० (2019). "सिकल सेल एनीमिया के निदान की विधियाँ," भारतीय जैव रसायन पत्रिका, 8(5), 213–220.।

5. मिश्रा, ए० (2020). "लाल रक्त कोशिका विकारों में नवाचार," नवीनतम चिकित्सा अनुसंधान, 12(1), 45–53.।

6. सिंह, आर० (2015). "थैलेसीमिया के लिए जीन थेरेपी," भारतीय जेनेटिक्स जर्नल, 7(4), 321–328.।

7. कौर, पी० (2018). "एनीमिया के लक्षण और रोकथाम," भारतीय स्वास्थ्य पत्रिका, 14(6), 189–197.।

8. चतुर्वेदी, डी० (2019). "सिकल सेल एनीमिया में हाइड्रोक्सीयूरिया का उपयोग," भारतीय चिकित्सा शोध पत्रिका, 11(3), 108–115.।

9. यादव, एस० (2017). "लाल रक्त कोशिका विकारों के उपचार में स्टेम सेल तकनीक," चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान, 9(2), 256–263.।

10. पाण्डेय, एम० (2016). "रक्त आधानः प्रक्रियाएँ और सावधानियाँ," भारतीय रक्त आधान सोसायटी पत्रिका, 19(1), 75–82.।

11. अग्रवाल, आर० (2018). "एनीमिया के लिए आहार संबंधी उपाय," भारतीय पोषण विज्ञान पत्रिका, 13(3), 145–152.।

12. सिंह, जे० (2020). "थैलेसीमिया और बोन मैरो ट्रांसप्लांट," भारतीय हेमेटोलॉजी जर्नल, 10(2), 98–105.।

13. गुप्ता, के० (2019). "सिकल सेल एनीमिया के लिए नवीनतम दवाएँ," चिकित्सा और फार्मेसी पत्रिका, 15(4), 211–218.।

14. शर्मा, ए० (2017). "लाल रक्त कोशिका विकारों का आनुवांशिकी अध्ययन," भारतीय आनुवांशिकी और जैव प्रौद्योगिकी पत्रिका, 6(2), 92–99.।

15. वर्मा, आर० (2016). "एनीमिया का वैश्विक परिप्रेक्ष्य," विश्व स्वास्थ्य संगठन रिपोर्ट, 8(1), 67–74.।

16. कपूर, डी० (2020). "थैलेसीमिया में जीआईबीडी और इसका प्रबंधन," भारतीय चिकित्सा जैव रसायन पत्रिका, 12(3), 145–153.।

17. जोशी, पी० (2018). "एनीमिया की रोकथाम में आयरन सप्लिमेंट्स का उपयोग," भारतीय पोषण और आहारिक पत्रिका, 14(5), 123–130.।

18. यादव, एम० (2017). "सिकल सेल एनीमिया और संक्रमण का संबंध," भारतीय चिकित्सीय अनुसंधान पत्रिका, 11(6), 233–240.।

19. गोयल, एस० (2019). "लाल रक्त कोशिका विकारों में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका," भारतीय जैव प्रौद्योगिकी जर्नल, 9(4), 298–305.।

20. शुक्ला, आर० (2020). "एनीमिया के लिए विटामिन बी12 का महत्व," भारतीय चिकित्सा और पोषण पत्रिका, 16(2), 156–162.।

21. मेहता, ए० (2018). "थैलेसीमिया के लिए नवीनतम चिकित्सा नवाचार," भारतीय चिकित्सा विज्ञान पत्रिका, 18(3), 115–122.।

22. चौहान, के० (2019). "लाल रक्त कोशिका विकारों में डीएनए परीक्षण की भूमिका," भारतीय जैव रसायन और आनुवांशिकी पत्रिका, 7(5), 205–212.।

23. गुप्ता, डी० (2017). "सिकल सेल एनीमिया में दर्द प्रबंधन," भारतीय चिकित्सा अनुसंधान पत्रिका, 13(4), 185–192.।

24. पटेल, जे० (2020). "लाल रक्त कोशिका विकारों में जीन थेरेपी की प्रगति," भारतीय जेनेटिक अनुसंधान पत्रिका, 11(3), 278–285.।

25. कुमार, एस० (2016). "एनीमिया के वैश्विक उपचार दृष्टिकोण," वैश्विक स्वास्थ्य विज्ञान पत्रिका, 8(2), 79–86.।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 61–67

फार्मेसीः स्वास्थ्य सेवा में अनगिनत अवसरों का खुलता द्वार

उमेश कुमार*

सारांश

फार्मेसी एक विविध कैरियर पथ प्रस्तुत करती है जिसमें मरीज की देखभाल और जन स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान किया जाता है साथ ही विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल में। फार्मासिस्ट समुदायी फार्मेसी, अस्पतालों, और नैदानिक स्थितियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो दवाओं का सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित करते हैं फार्मेसी, परामर्श, और औषधि प्रबंधन के माध्यम से। वे दवाइयों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं, नई दवाइयों की खोज को बढ़ावा देते हैं और फार्मास्युटिकल उद्योग में नियामक समुच्चयता सुनिश्चित करते हैं। फार्मासिस्टों के विशेषज्ञता फार्मेसी प्रशासन, शिक्षा, और परामर्श से फैलती है, जहां वे औषधि प्रबंधन प्रणालियों को अनुकूलित करते हैं और भविष्य के पेशेवरों को शिक्षित करते हैं। यह सारांश फार्मेसी की स्वास्थ्य देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका को हाइलाइट करता है, जिसमें इसका व्यापक प्रभाव और विश्व भर में फार्मासिस्टों के लिए विकसित होने वाले अवसरों का जिक्र किया गया है।

शब्दकोशः फार्मेसी, करियर अवसर, स्वास्थ्य सेवा, अनुसंधान और विकास, व्यावसायिक विविधता

फार्मेसी एक दवा का विज्ञान है; इसमें दवाओं का निर्माण, गुणवत्ता नियंत्रण, भंडारण, विक्रय और वितरण शामिल होता है। फार्मासिस्ट विभिन्न स्थानों में प्रैक्टिस करते हैंः जैसे खुदरा फार्मेसी, अस्पताल, समुदाय फार्मेसी, फार्मास्युटिकल उद्योग, और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में। इस पेशे के बारे में अधिकाँश स्रोत फार्मेसिस्ट के बिक्री और वितरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन इस पेशे के महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जनता में कम जानकारी है, जैसे दवा निष्कर्षण, शोधन, निर्माण, औषधि निगरानी, और दवा संबंधी प्रमुख जिम्मेदारियाँ। सामान्य रूप से, दवाओं और दवा संबंधी तकनीकी और सामाजिक गतिविधियाँ एक योग्य फार्मेसिस्ट की जिम्मेदारी होती हैं।

फार्मेसी को वैश्विक रूप से एक प्रतिष्ठित करियर मार्ग माना जाता है जिसने वर्षों से महत्वपूर्ण विकास किया है। जब लोग "फार्मासिस्ट" शब्द सुनते हैं, तो वे अक्सर किसी को बस दवाओं को बोतल में भरने वाले रूप में सोचते हैं। हालाँकि, फार्मासिस्ट की

*उमेश कुमार, प्रोफेसर एंड डीन, स्कूल ऑफ फार्माक्यूटिकल साइंस, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर–247121, उत्तर प्रदेश, भारत, deanpharmacy@theglocaluniversity.in

भूमिका विस्तारित हो रही है और अब वे विभिन्न जिम्मेदारियों का संघटित हिस्सा बन रहे हैं, जो उनके ग्राहकों के साथ संवाद संदर्भ में निर्भर करते हैं।

यह पेशा उत्पादों से रोगी–केंद्रित दृष्टिकोण पर स्थानांतरित हो गया है, जिससे फार्मेसिस्ट अनुशासित खतरनाक दवाओं के घटक होते हैं। उनका काम स्वास्थ्य दलों में सुरक्षित मात्राएँ सुनिश्चित करना है और नुकसानदायक दवा संवादों को रोकना है। इसके अतिरिक्त, फार्मेसिस्ट स्वास्थ्य जाँच, टीकाकरण देने और दवाओं के उपयोग पर मरीजों को मार्गदर्शन भी प्रदान कर सकते हैं।

परंपरागत रूप से खुदरा फार्मेसिस्टों में आधारित रहते हुए, अब फार्मेसिस्टों का अस्पताल, डॉक्टर के कार्यालय, और विशेषीकृत क्लिनिक्स में लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसमें इमर्जेंसी रूम, पेडियाट्रिक विभाग, कैंसर केंद्र, क्रिटिकल केयर इकाइयाँ, और पॉइजन कंट्रोल सेंटर शामिल हैं। वे अक्सर दीर्घकालिक कामकाज करते हैं और लंबी देर खड़े रहते हैं।

शैक्षिक दृष्टिकोण से, आग्रही फार्मेसिस्ट अक्सर कम से कम छह वर्षों की स्नातक (डॉ. ऑफ फार्मेसी) प्रोग्राम पूरा करते हैं, जिसमें पूर्व–पेशेवर अभ्यास शामिल होता है। बहुत से तीन वर्षीय कॉलेज के बाद इन प्रोग्रामों में प्रवेश किया जाता है।

चित्र 1: फार्मेसी में विभिन्न क्षेत्रों में करियर (4)

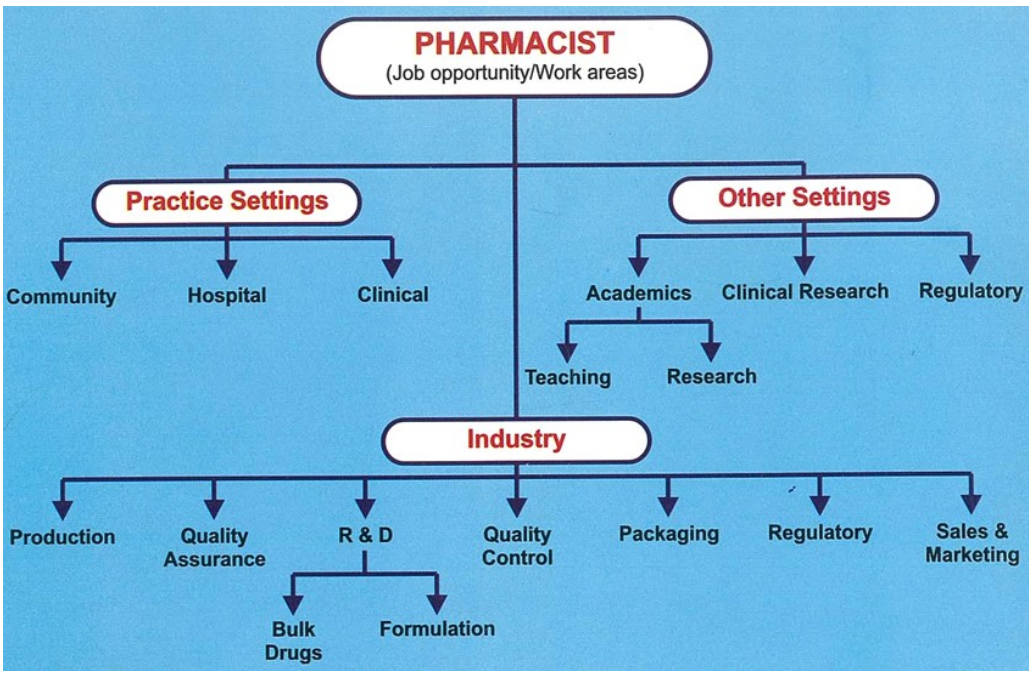

मास्टर्स या डॉक्टरेट जैसे उन्नत डिग्री भी विकल्प हैं, जो दवाईयों के अनुसंधान या शैक्षिक क्षेत्र में करियर के माध्यम से ले जाती हैं। रेजिडेंसी प्रोग्राम और फेलोशिप्स विभिन्न प्रैक्टिस क्षेत्रों में विशेषता प्रदान करती हैं। लाइसेंस प्राप्त फार्मासिस्ट्स के लिए बोर्ड प्रमाणन उन्हें अम्ब्युलेटरी केयर, कार्डियोलॉजी, क्रिटिकल केयर, जीरियाट्रिक्स और अन्य क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए उपलब्ध है। यह उनके क्लिनिकल प्रैक्टिस या अनुसंधान में करियर के प्रास्पेक्ट्स को बढ़ाता है (2–3).

फार्मेसी में करियरः रोजगार के क्षेत्र

फार्मेसी में करियर विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रोजगार के अवसर प्रस्तुत करता है, जो मरीज की देखभाल, सार्वजनिक स्वास्थ्य और विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल सेटिंग्स में योगदान करने के विभिन्न भूमिकाओं को संबोधित करते हैं (5–10).

1. कम्युनिटी फार्मेसीः चेन फार्मेसी, स्वतंत्र आउटलेट्स, और ग्रोसरी स्टोर्स में पाई जाने वाली कम्युनिटी फार्मेसिस्ट्स यहाँ दवाओं का वितरण करते हैं, मरीजों को सलाह देते हैं, अवर–देशी उपचार सुझाव देते हैं, और स्वास्थ्य जाँच करते हैं।

चित्र 2: एक फार्मासिस्ट को मरीज को परामर्श देते हुए दर्शाया गया चित्र

2. **हॉस्पिटल फार्मेसी:** अस्पतालों में, फार्मेसिस्ट्स व्यापक फार्मास्यूटिकल केयर प्रदान करते हैं। वे स्वास्थ्य देखभाल टीमों के साथ सहयोग करके सुरक्षित दवाओं का उपयोग सुनिश्चित करते हैं, ऑर्डर्स की पुष्टि करते हैं, दवा सूचना प्रदान करते हैं, वितरण प्रणालियों का प्रबंधन करते हैं, क्लिनिकल राउंड्स में भाग लेते हैं, और थेरेपी प्रबंधन में योगदान करते हैं।

3. **क्लिनिकल फार्मेसी:** अस्पतालों, क्लिनिकों, और आउटपेशेंट सेटिंग्स में क्लिनिकल फार्मेसिस्ट्स सीधे मरीज की देखभाल करते हैं। वे दवाइयों की समीक्षा करते हैं, थेरेपी की निगरानी करते हैं, दवा का उपयोग मूल्याँकन करते हैं, और फार्मास्यूटिकल रिकमेंडेशंस देते हैं, अक्सर कार्डियोलॉजी, ऑन्कोलॉजी, क्रिटिकल केयर, पेडियाट्रिक्स, जीरियाट्रिक्स, या अम्बुलेटरी केयर जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखते हैं।

4. **लॉन्ग–टर्म केयर संस्थान:** नर्सिंग होम्स जैसी संस्थाओं में फार्मेसिस्ट्स निवासियों के लिए दवाओं के प्रबंधन की निगरानी करते हैं। वे स्वास्थ्य देखभाल टीमों के साथ क़रीबी संबंध बनाते हैं ताकि उपयुक्त दवाओं का उपयोग हो सके, समस्याओं को रोका जा सके, और जीरियाट्रिक्स फार्मासी के मामले में मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।

5. **फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री:** फार्मेसिस्ट्स फार्मास्युटिकल कंपनियों, अनुबंधक अनुसंधान संगठन (CROs), या नियामक संगठनों में काम करते हैं। वे दवा विकास, वैद्यकीय अनुसंधान, सुरक्षा मॉनिटरिंग, चिकित्सा और नियामकीय कार्य, और फार्माकोविजिलेंस में योगदान देते हैं, सुनिश्चित करते हैं कि सुरक्षा और प्रभावकरता मानकों का पालन हो।

6. **फार्मेसी लाभ प्रबंधन:** फार्मेसिस्ट्स फार्मेसी लाभ प्रबंधन कंपनियों (PBMs) में काम करते हैं जो स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के लिए निर्धारित लाभ प्रबंधन करते हैं। वे दवाओं के उपयोग का विश्लेषण करते हैं, फार्मुलरी प्रबंधित करते हैं, लागतों का मूल्याँकन करते हैं, और फार्मेसी लाभ संबंधित चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करते हैं।

7. **शिक्षा और अनुसंधान:** फार्मेसिस्ट्स शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक, अनुसंधानकर्ता, या प्रशासक के रूप में शिक्षा संस्थानों या कॉलेजों में करियर कर सकते हैं। वे शिक्षा देते हैं, फार्मास्यूटिकल विज्ञान में अनुसंधान करते हैं, चिकित्सा अभ्यास में, और दवा खोज में, जिससे क्षेत्र में उन्नतियों में योगदान करते हैं।

8. **सरकारी और नियामक संगठन:** फार्मेसिस्ट्स एफ.डी.ए., सीडीसी, या डब्ल्यूएचओ जैसी सरकारी संगठनों में दवा नियंत्रण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, नीति विकास, दवा सुरक्षा,

और अनुसंधान में भूमिका निभाते हैं, सुनिश्चित करते हैं कि नियामकीय अनुपालन और सार्वजनिक सुरक्षा हो।

9. फार्मेसी इंफॉर्मेटिक्सः फार्मेसिस्ट्स इन्फॉर्मेटिक्स में विशेषज्ञ होते हैं जो स्वास्थ्य संगठनों में काम करते हैं ताकि दवाओं के प्रबंधन प्रणालियों, इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड्स, और डेटा विश्लेषण को अनुकूल बनाया जा सके। वे प्रणालियों को लागू करते हैं, डेटा की सटीकता सुनिश्चित करते हैं, और डेटा पर आधारित निर्णय लेने के लिए अनुशासन प्रदान करते हैं।

10. सलाहकारी और उद्यमिताः कुछ फार्मेसिस्ट्स सलाहकार बनते हैं या अपनी खुद की फर्म शुरू करते हैं, जो दवाओं के प्रबंधन, सुरक्षा, स्वास्थ्य सुधार और फार्मेसी व्यवसाय विकास में विशेषज्ञता प्रदान करते हैं। वे सलाह देते हैं, समीक्षाएँ करते हैं, गुणवत्ता सुनिश्चित करते हैं, और संगठनों को दवाओं से संबंधित प्रक्रियाओं में सुधार करने में सहायता करते हैं।

11. दवाईयती उद्योगः विभिन्न भूमिकाओं में जैसे विनियामक कार्य, दवा सूचना, बिक्री, विपणन, और गुणवत्ता नियंत्रण, फार्मासिस्ट सुनिश्चित करते हैं कि वे संबंधित उद्योग में सुरक्षित दवाओं का प्रयोग करते हैं और स्वास्थ्य पेशेवरों को सूचना प्रदान करते हैं।

12. फार्मेसी प्रशासन और प्रबंधनः नेतश्त्व कौशल वाले फार्मासिस्ट संचालन की अधिकारिता करते हैं, कर्मचारियों का प्रबंधन करते हैं, विनियामक संरचना की सुनिश्चिति करते हैं, नीतियाँ विकसित करते हैं, और रणनीतिक योजना में योगदान करते हैं। उन्हें कार्यप्रवाह, रोगी सुरक्षा, और समग्र फार्मेसी सेवाओं को अनुकूलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है।

13. फार्मेसी शिक्षाः फार्मासिस्ट शिक्षक के रूप में शिक्षा प्राप्त करते हैं, शिक्षा, पाठ्यक्रम विकास, अनुसंधान, और मेंटरशिप के माध्यम से भविष्य के पेशेवरों को रूपांतरण करते हैं। वे फार्मेसी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

14. सलाहकारी और उद्यमिताः दवा प्रबंधन, स्वास्थ्य सलाह, या उद्यमिता में विशेषज्ञ फार्मासिस्ट सलाहकारी फर्म स्थापित कर सकते हैं या स्वतंत्र रूप से काम कर सकते हैं। वे दवाओं की सुरक्षा पर सलाह देते हैं, प्रबंधन रणनीतियाँ विकसित करते हैं, और स्वास्थ्य संगठनों में दवा संबंधी प्रक्रियाओं में सुधार करते हैं।

15. फार्मेसी सूचना और प्रौद्योगिकीः स्वास्थ्य संगठनों में फार्मेसी सूचना में विशेषज्ञ फार्मासिस्ट तकनीक के साथ काम करते हैं। उन्होंने सूचना प्रणालियों, इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ

रिकॉर्ड्स, और दवा प्रौद्योगिकियों को अनुकूलित करने के लिए काम किया है ताकि सुरक्षा, कार्यप्रवाह कुशलता, और डेटा–माध्यमिक निर्णय–निर्माण को समर्थन मिल सके।

निष्कर्ष

फार्मेसी में एक रोजगार एक विविध क्षेत्र के भीतर विभिन्न अवसरों का एक समश्द्ध समूह प्रस्तुत करती है। फार्मेसिस्ट्स समुदायी फार्मेसी, अस्पतालों, और नैदानिक स्थानों में महत्वपूर्ण भूमिकाओं निभाते हैं, सुनिश्चित करते हैं कि दवा का सुरक्षित उपयोग हो, रोगियों की देखभाल करते हैं, और औषधीय अनुसंधान और विकास को आगे बढ़ाते हैं। वे सरकारी एजेंसियों, फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री, और फार्मेसी लाभ प्रबंधन में भूमिका निभाकर सार्वजनिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, सुनिश्चित करते हैं कि नियामकीय अनुपालन हो और औषधीय परिणामों को अनुकूलित किया जाए। इसके अलावा, शिक्षा में फार्मेसिस्ट्स भविष्य के पेशेवरों को आकार देते हैं और अनुसंधान की अग्रणीता करते हैं। फार्मेसी इंफॉर्मेटिक्स और उद्यमिता में विकसित हो रही भूमिकाओं के साथ, फार्मेसिस्ट्स संचार को नवीनतम करते हैं और सलाहकारी के माध्यम से औषधीय प्रक्रियाओं में सुधार करते हैं। समग्र रूप से, फार्मेसी एक गतिशील और आवश्यक पेशा है, जो रोगी की देखभाल, नवाचार, और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में समर्थ है।

घोषणा

प्रकाशन की सहमतिः लागू नहीं।
वित्तीय स्रोतः इस परियोजना के लिए कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली।
नैतिक अनुमोदन और सहमतिः लागू नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंकुर चौधरी, फार्मेसी एस कैरियर, फार्मागाइडलाइन, अप्रैल 16, 2024, https://www.pharmaguideline.com/2021/07/pharmacy-as-a-career.html

2. ब्लैकमर ए० बी०, थामसन ए० म०, जेफरस एम० एन०, ग्लोड ए० ई० थामसन एम०, महायारी एन०, किलिनिकल फार्मेसी एकेडमीक कैरियर ट्राजिसनसः वीउपांइट फ्राम दी फील्ड, क्योर फर्म टेक लर्न, 2018, फरवरी;10(2):121–122. डीओआईः 10.1016/जे.सीपीटील.2017.11.001.ईपीयूबी 2017 दिसम्बर 23. पीएमआईडीः29706263

3. जरब ए० एस०, अल–कुरेम डब्लयू०, मुकाटस टी० एल०, कैरियर चॉवयस ऑफ फार्मेसी एडं फार्म डी अंडरग्रेजुएटः एटीटुड एडं परेफरन्स, हेलियान, 2021 मार 15:7(3):ई06448. डीओआईः 10.1016/जे.हेलियान.2021.ई06448.पीएमआईडीः33786388; पीएमसीआईडीःपीएमसी7988284.

4. फार्मेसी कौंसिल ऑफ इंडिया, उत्तर प्रदेश, ए कैरियर इन फार्मेसी, नवम्बर 2009, https://www.pci.nic.in/Circulars/career.pdf

5. अरबब ए० एच०, एलटआहीर वाईएम, एलसाडीग एफएस, यूसेफ बीए, कैरियर परेफरएंस एडं फेक्टर इनफल्यूनेसिंग करियर चॉवयस अंमग अंडरग्रेजुएट फार्मेसी स्टुडेन्टस एट युनिवर्सटी ऑफ खारटूम, सूडान, फार्मेसी (बासेल). 2022 फरवरी 7;10(1):26.डीओआई:10.3390/फार्मेसी10010026. पीएमआईडीः 35202075; पीएमसीआईडीः पीएमसी8880343.

6. डेहिम एन०, भगता एसबी, वरके एसी, मेटजेन डीएल, वरके डी, मारटीनेज आरजे, गरे केडब्लयू, सिस्टेमाइजेशन ऑफ ए फार्मेसी टेकनिशयन करियर लैडर इन ए मल्टीहोस्पीटल सिस्टम. एक्सप्लोर रेस क्लीन फार्म. 2021 जनवरी 18;2:100036. डीओआईः 10.1016/जे.आरसीएसओपी.2021. 100036. पीएमआईडीः 35481131; पीएमसीआईडीःपीएमसी9031433.

7. स्टीब डीआर, केन जे, हेन्स एसटी. रीकनसीडरीग फार्मेसीः वी नीड टू टर्न करियर रिग्रेट ईनटू करियर ऑप्सन. एम जे फार्म एजुकेशन. 2024 अप्रैल;88(4):100678. डीओआईः10.1016/जे. एजेपीई.2024.100678. ईपीयूबी 2024 मार्च 1. पीएमआईडीः38430985.

8. अलमालकी ओएस, अलकरनी टीए, अलहरदी आरएम, अलगरनी एमए, मोहम्मद इब्राहिम एमआई, ऐसीरी वाईए, फतेलरामन एआई. करियर रीडीनेस अंमग सऊदी फार्मेसी स्टूडेंटसः एक्सपलोरिंग दी नीड फॉर एडं दी इमपैक्ट ऑफ करियर कौंसिलिंग सर्विसेज. एडवी मेड एजुके प्रैक्ट. 2022 अक्टूबर 11;13:1267–1277. डीओआईः 10.2147/ऐएमईपी.एस375929. पीएमआईडीः36254266;पीएमसीआईडीःपीएमसी9569190.

9. सियू ए, ब्लैकमर एबी, थार्नटन एएम, जॉनसन पीएन, निकोलस केआर, हेजमैन टीएम. ओवरवऊ एडं प्रीप्रेरशन गाइड फॉर एकेडमीक करियर इन पेडियेट्रिक फेक्लटी मेंबर. जे पेडियेटर फार्माकोल थर. 2019 मार्च–अप्रैल;24(2):79–89. डीओआईः 10.5863/1551–6776–24.2.79. पीएमआईडीः31019400;पीएमसीआईडी : पीएमसी6478359.

10. राइस एसडी, नेफ एन, वूडाल टी, स्काट एमए, फार्मेसी स्टूडेन्ट एटीयूटस टूवर्ड ए करियर इन ओल्डर एडल्ट केयर, क्र फार्म टेक लर्न. 2022 मई;14(5):626–634. डीओआईः10.1016/जे. सीपीटील.2022.04.012. ईपीयूबी 2022 मई 14. पीएमआईडीः35715104.

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

की योजना के प्रति ग्लोकल विश्वविद्यालय पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

ग्लोकल विश्वविद्यालय में सुकन्या योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष 200 मेधावी निर्धन छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

हमारी वैबसाइटः **glocaluniversity.edu.in**

हेल्पलाइन नंबरः

+91-9311632008; +91-9311650087

अधिक जानकारी के लिये लिखें:

query@theglocaluniversity.in

ग्लोकल विश्वविद्यालय,
दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 69–77

फार्मेसी का इतिहास और विकास

शम्मून अहमद*

सारांश

फ़ार्मेसी को दवाओं की पहचान, चयन, तैयारी, मानकीकरण, संरक्षण और वितरण से संबंधित पेशे के रूप में परिभाषित किया गया है। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें फार्मासिस्ट दवाओं के विशेषज्ञ और स्वास्थ्य टीम के आवश्यक सदस्य होते हैं। प्राचीन काल में, चिकित्सक और सर्जन खुद ही दवाओं की तैयारी करते थे, लेकिन अब फार्मासिस्ट और चिकित्सा विशेषज्ञ अलग–अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। फार्मेसी के विकास में हिप्पोक्रेट्स, अस्कलेपिओस और हाइजिया जैसे योगदानकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, और यह आधुनिक दवाओं और चिकित्सा प्रगति को आकार देने में सहायक रही है।

मुख्य शब्दः फार्मेसी, दवाएँ, मानकीकरण, फार्मासिस्ट, वैश्विक, कानूनी नियंत्रण

फार्मेसीः फार्मेसी को इस प्रकार परिभाषित किया गया हैः

- Identification (पहचान)
- Selection (चयन)
- Preparation (तैयारी)
- Standardization (मानकीकरण)
- Preservation (संरक्षण)
- Dispensing (वितरण)

प्राकृतिक या सिंथेटिक स्रोतों से उपयुक्त दवाओं की पहचान, चयन, तैयारी, मानकीकरण, संरक्षण और वितरण का पेशा है। दवाओं का उद्देश्य निदान, रोकथाम और उपचार करना होता है और यह सार्वजनिक को दवाओं से संबंधित जानकारी प्रदान करता

*शम्मून अहमद, एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल यूनिवर्सिटी फार्मेसी कॉलेज, सहारनपुर–247121 भारत shmmon@theglocaluniversity.in: ORCID ID: https://orcid.org/0000-0003-2120-2413

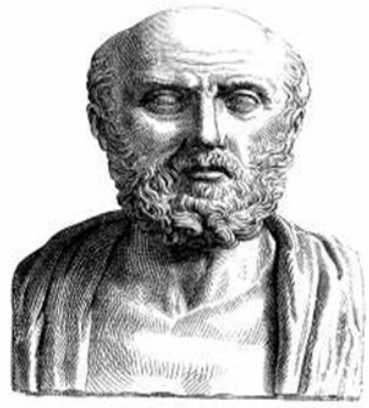

Fig. 1: Hippocrates Father of medicine

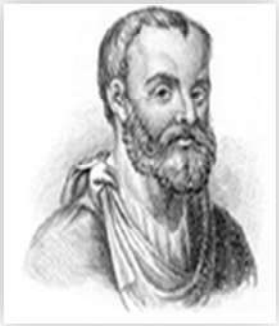

Fig. 2: Galen-father of Pharmacy

Fig. 3: International symbol of medicine

Fig. 4: Professors M. L. Shroff Father of Pharmacy Education India

है। फ़ार्मेसी स्वास्थ्य पेशे का एक अभिन्न हिस्सा है। इस उद्देश्य के लिए, एक फार्मासिस्ट्स इन सभी पहलुओं का ध्यान रखता है क्योंकि उसे इस काम के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाता है। फार्मासिस्ट्स को दवाओं के विशेषज्ञ और स्वास्थ्य टीम के लिए आवश्यक सदस्य माना जाता है। इसके अलावा, जरूरत पड़ने पर फार्मासिस्ट्स आसानी से उपलब्ध होता है और कई बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं पर सलाह दे सकता है (1)।

फ़ार्मेसी की उत्पत्ति और अलग पहचान

प्राचीन काल में, फिजीशियन और सर्जन बागों में रहते थे और आवश्यक मेडिसिनल प्लांट्स की खेती करते थे। उन्हें कुछ नेचरल सब्सटांसस की हीलिंग प्रॉपर्टीज का ज्ञान था, जो समय के साथ बढ़ा। उस समय फिजीशियन और फार्मासिस्ट का कोई अलग पेशा नहीं था; एक फिजीशियन खुद ही अपनी मेडिसिन्स तैयार करता था। हालाँकि, 1963 में ब्रिटिश फार्मास्युटिकल कॉन्फ्रेंस में चर्चा के अनुसार, अब फार्मासिस्ट को दवाओं के विशेषज्ञ के रूप में पहचान है, जबकि एक मेडिकल प्रैक्टिशनर निदान और उपचार में विशेषज्ञ होता है। फार्मासिस्ट्स विभिन्न क्षेत्रों में काम करते हैं और वर्तमान में फार्मेसी का पेशा निम्नलिखित में बँटा हुआ है (2–5):

- अकादमिक फार्मासिस्ट्स
- इंडस्ट्रियल फार्मासिस्ट्स
- हॉस्पिटल फार्मासिस्ट्स
- कम्युनिटी फार्मासिस्ट्स

फार्मेसी में योगदानकर्ता

हिप्पोक्रेट्सः हिप्पोक्रेट्स ऑफ कोस, जिन्हें हिप्पोक्रेट्स II के नाम से भी जाना जाता है, एक ग्रीक चिकित्सक और दार्शनिक थे जो प्राचीन काल के चिकित्सा क्षेत्र के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व माने जाते हैं। उन्हें चिकित्सा के पिता के रूप में जाना जाता है (चित्र 1)।

गॉड अस्कलेपिओस और उनकी बेटी हाइजियाः हाइजिया ग्रीक चिकित्सा के देवता अस्कलेपिओस से जुड़ी हुई हैं, जो ओलंपियन देवता अपोलो के पुत्र हैं। हाइजिया को सबसे आमतौर पर अस्कलेपिओस की बेटी के रूप में जाना जाता है। एक पवित्र साँप के साथ, उन्हें उपचारक माना जाता था, और इनसे अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा प्रतीक की उत्पत्ति हुई।

एबर्स पपीरसः औषधियों का व्यवस्थित वर्गीकरण

डायोस्कोरिडेसः एक रोमन चिकित्सक जिन्होंने जड़ी–बूटियों की एक सूची संकलित की।

गैलेनः पौधों से दवाओं की तैयारी की विधियाँ रिपोर्ट कीं, जिन्हें गैलेनिक्ल्स कहा जाता है। (चित्र 2)

दवाओं के ज्ञान, चिकित्सा प्रगति, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी और पेशेवर विकास के एकत्रित इतिहास ने आधुनिक फार्मेसी और नए जीवन–रक्षक दवाओं को जन्म दिया है, जो सीधे लाखों रोगियों के जीवन को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, इंसुलिन और एंटीबायोटिक्स। सभी दवाएँ फार्मेसी के माध्यम से उपयोगी बनती हैं (6–8)।

फार्मेसी एक्ट–1948 और फार्मास्युटिकल एजुकेशन की उत्पत्ति

20वीं सदी की शुरुआत में, दवाओं या फार्मेसी पेशे पर व्यावहारिक रूप से कोई कानूनी नियंत्रण नहीं था। हालांकि ओपियम एक्ट 1878, पॉयजन एक्ट 1919, और डेंजरस ड्रग्स एक्ट लागू थे, भारत सरकार ने 1928 में ड्रग्स इनक्वायरी कमेटी का गठन किया। 11 अगस्त 1930 को, भारत सरकार ने लेट लेफ्टिनेंट–कर्नल आर० एन० चोपड़ा (Sir Ram Nath Chopra) की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की। इस कमेटी के तीन सदस्य थेः रेव० फ्र० जे० एफ० कैयस, हाफ्किन इंस्टिट्यूट, बॉम्बे में फार्माकोलॉजिस्ट; श्री एच० कूपर (Ph.C., F.C.S.), स्मिथ स्टैनिस्ट्रिट एंड कंपनी, लिमिटेड, कलकत्ता के मैन्युफैक्चरिंग केमिस्ट; और मौलवी अब्दुल मतीन चौधरी (M.L.A.)। इस कमेटी को भारत में फार्मेसी की समस्याओं की जाँच करने और उठाए जाने वाले उपायों की सिफारिश करने का कार्य सौंपा गया। इस कमेटी ने भारत में फार्मेसी की समस्याओं की जाँच की और आवश्यक मेजर्स की सिफारिश की (9–12)।

सिफारिशें

- सेंट्रल और स्टेट स्तर पर फार्मेसी काउंसिल की स्थापना।
- फार्मासिस्ट्स के नाम और पते के साथ एक रजिस्टर बनाए रखना।
- सेंट्रल स्तर पर एक ड्रग कंट्रोल डिपार्टमेंट की स्थापना।
- एक सेंट्रल ड्रग लेबोरेटरी का विकास।

कानून और नियम

- 1937 में इम्पोर्ट ऑफ ड्रग्स बिल पास हुआ।
- 1940 में ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट पारित हुआ।
- 1948 में फार्मेसी एक्ट पास हुआ।
- अन्य महत्वपूर्ण अधिनियमः द ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज एक्ट 1954, मेडिसिनल एंड टॉयलेट प्रिपरेशंस एक्ट 1955, ड्रग्स प्राइस कंट्रोल ऑर्डर 1979, और नारकोटिक ड्रग्स एंड सायकोट्रॉपिक सब्सटांस एक्ट 1985।

भारत में फार्मास्युटिकल एजुकेशन की शुरुआत

- चरक संहिताः आयुर्वेदा का सबसे पुराना टेक्स्ट माना जाता है।
- 13वीं सदी ईस्वी में ग्रीक–अरब मेडिसिन प्रणाली भारत में आई।
- 1842 में, गोवा कॉलेज ऑफ फार्मेसी की स्थापना हुई।
- ब्रिटिश रूल के तहत, मॉडर्न मेडिसिन सिस्टम, जिसे एलोपैथिक सिस्टम कहा जाता है, भारत में आई।
- 1870 में, मद्रास मेडिकल कॉलेज को केमिस्ट्स और ड्रगगिस्ट्स के लिए कैंडिडेट्स की परीक्षा लेने की अनुमति दी गई।
- 1894 में, सेकेंडरी स्कूल लेवल के बाद एक दो वर्षीय फार्मेसी कोर्स पेश किया गया।
- 1948 में, फार्मेसी एक्ट पास हुआ।
- प्रोफेसर महादेवा लाल श्रॉफ, (Fig. 4) जिन्हें भारत में फ़ार्मेसी शिक्षा के जनक के रूप में जाना जाता है। वे फार्मासिस्टों के लिए एक आदर्श बने रहे। भले ही वे फार्मासिस्ट के रूप में प्रशिक्षित नहीं थे, लेकिन उनके ज्ञान, समझ, क्षमता और व्यापक दृष्टिकोण ने न केवल फार्मास्यूटिकल शिक्षा को बल्कि भारत में उद्योग को भी सही दिशा दी।

भारत में फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री

- 1900 से पहले, भारत फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री के लिए यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, और जर्मनी पर निर्भर था।
- 1901 में आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय ने बंगाल केमिकल्स और फार्मास्युटिकल वर्क्स की स्थापना की।
- 1903 में प्रोफेसर टी. के. गुज्जर ने एलेम्बिक केमिकल वर्क्स की स्थापना की।

फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री

भारतीय फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री ने रिमार्केबल ग्रोथ हासिल की है, जिसका श्रेय टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट और बढ़ती ग्लोबलाइजेशन को दिया जाता है। इस इंडस्ट्री के महत्वपूर्ण तथ्य और आंकड़े निम्नलिखित हैं (12–15):

- ग्लोबल स्टैंडिंगः
  - वॉल्यूम के आधार पर विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश।
  - वैल्यू के आधार पर तेरहवाँ देश।
  - भारत डोमेस्टिक रिक्वायरमेंट्स का 95% पूरा करता है।
  - भारत यू० एस० मार्केट को सेवाएँ देने वाले सभी ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग साइट्स का पाँचवाँ हिस्सा।
  - भारत सबसे ज्यादा यूएस–एफडीए मान्यता प्राप्त फार्मा प्लांट्स वाले देश।
- भारत की फाइनेंशियल ग्रोथ (फार्मा सेक्टर में):
  - 2024 तक $65 बिलियन तक पहुंचने की उम्मीद।
  - 2030 तक $130 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान।
  - वर्तमान में $50 बिलियन का मूल्याँकन।
- एक्सपोर्ट्सः
  - भारत 200 से अधिक देशों को एक्सपोर्ट करता है।
  - अफ्रीका की जेनेरिक ड्रग्स की रिक्वायरमेंट का 50% से अधिक सप्लाई।
  - यू० एस० मार्केट की जेनेरिक डिमांड का 40% पूरा करता है।
  - यू० के० की सभी मेडिसिन्स का 25%।
  - ग्लोबल वैक्सीन डिमांड का 60%पूरा करता है।
  - डीपीटी, बीसीजी, और मीजल्स वैक्सीन्स के लीडिंग सप्लायर्स।
  - WHO के वैक्सीन्स का 70% इंडिया से।
- रेवेन्यूः
  - 2021 में $42 बिलियन का अनुमानित मूल्य।
  - डोमेस्टिक फार्मास्युटिकल मार्केट का एस्टीमेटेड टर्नओवर $41 बिलियन (इकोनॉमिक सर्वे 2023)।

- फार्मास्युटिकल एक्सपोर्ट्स रेवेन्यू $25.3 बिलियन (2022–23, फार्मेक्सिल डेटा)।

• ग्लोबल एक्सपोर्ट शेयरः

- भारत वॉल्यूम के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा जेनेरिक मेडिसिन्स का प्रोवाइडर (कुल वैश्विक फार्मास्युटिकल एक्सपोर्ट्स का 20%)।

- भारत वॉल्यूम के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा वैक्सीन सप्लायर (वैश्विक रूप से निर्मित सभी वैक्सीन्स का 60% से अधिक)।

- रेगुलेटेड मार्केट्स में एक्सपोर्ट्स जैसे कि यूएस, यूके, यूरोपीय संघ, और कैनेडा।

- भारत डॉलर वैल्यू के आधार पर ड्रग्स और मेडिसिन्स के एक्सपोर्ट्स में विश्व में तीसरे स्थान पर।

यह स्ट्रॉन्ग ग्रोथ भारत के ग्लोबल फार्मास्युटिकल लैंडस्केप में महत्वपूर्ण स्थिति को दर्शाती है, जो इसकी विशाल मैन्युफैक्चरिंग कैपेसिटीज और व्यापक एक्सपोर्ट नेटवर्क द्वारा संचालित है।

निष्कर्ष

20वीं सदी की शुरुआत में, भारत में दवाओं और फार्मेसी पेशे पर कानूनी नियंत्रण की कमी थी। इसके समाधान के लिए, भारत सरकार ने 1928 में ड्रग्स एनक्वायरी कमेटी का गठन किया और 1930 में एक नई कमेटी बनाई, जिसने फार्मेसी से संबंधित समस्याओं की समीक्षा की और आवश्यक सुधारों की सिफारिश की। इसके परिणामस्वरूप 1948 में फार्मेसी एक्ट पास हुआ, जिससे फार्मेसी पेशे का नियमन सुनिश्चित हुआ। इसके अतिरिक्त, भारतीय फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री ने भी वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण वृद्धि की है, जो तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण की वजह से संभव हो पाई है। भारत अब दवाओं और वैक्सीन्स का प्रमुख वैश्विक आपूर्तिकर्ता है, जो इसकी विशाल मैन्युफैक्चरिंग क्षमता और व्यापक एक्सपोर्ट नेटवर्क को दर्शाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ऐरोजो–नेतो एफसी, दोसी ऐस, फोनसेइका, एफएलडी, तवारेस टीमए, सन्तोष डीएम, पीमेन्टेल डीएमएम, मेसकुता एआर, लेयरा डीपी, जूनियर परसेपेशंस ऑफ फॉर्मेल फार्मेसी लीडरशिप ऑन दी सोशल रोल ऑफ दी प्रोफेशन एडं इटस हिस्टोरिकल ईवोल्यूशंसः ए क्वालीटेटिव स्टडी. एक्सप्लोर रेस क्लीन सोस फार्म 2024 जनवरी

2;13:100405. डीओआई:10.1016/जे.आरसीएसओपी.2023.100405. पीएमआईडी:38283100;पीएमसीआईडी: पीएमसी10820284.

2. इंड़ियन मेडिकल गेजेट, दी रिर्पोट ऑफ दी ड्रग्स इंक्वायरी कमेटी, इंड़िया जनवरी 1932, पेज 29–31

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC5231593/pdf/indmedgaz 72170 -0045.pdf

3. दी ड्रग्स इंक्वायरी कमेटी, इंड़िया, इंड़ियन मेडिकल गेजेट, नवम्बर 1930. पेज 640.

https://pdfs.semanticscholar.org/54c2/791b6ab07cfd3f62cb6915f68942267e3ed7.pdf

4. जूते आर. दी हिस्टोरियोग्राफी ऑफ़ नॉन कन्वेंशनल मेडिसिन इन जर्मनी: ए कानसाइस ओवरविऊ. मेड हिस्ट्री 1999 जुलाई; 43(3):342–58. डीओआई:10.1017/एस002572730006539ऐक्स. पीएमआईडी: 10885128; पीएमसीआईडी:पीएमसी1044149.

5. फूलचर जेएम. कार्ड–फ्रॉम पब्लिकेशंस इन मेडिसिन एंड रिलेटेड फील्ड्स. बुल मेड़ि लीबर एसोसि. 1959 जनवरी;47(1):48–53. पीएमआईडी: 13618700; पीएमसीआईडी:पीएमसी200327.

6. खान एए, जनार्दन आर, किशोर जे, अवस्थी एए, प्रवीण एस, सईद एस, शाहनवाज एम, सेल्वामूर्ति डब्ल्यू. अवेयरनेस एंड यूटिलाइजेशन ऑफ यूनानी मेडिसिन अमोंग दी एडल्ट पापुलेशन फ्रॉम ईस्ट दिल्ली: ए क्रॉस सेक्शनल सर्वे. जे फार्म बायोएलाइड साइंस. 2022 जुलाई–सितंबर; 14(3):157–161. डीओआई:10.4103/जेपीबीएस.जेपीबीएस 229 22. ईपब 2022 सितंम्बर 19. पीएमआईडी:36506729; पीएमसीआईडी: पीएमसी 9728061.

7. एल गमाल एसवाई. ऐनीसिएट इजिप्शियन रूटस इन द मॉडर्न मेडिकल एंड फार्मा फार्मास्यूटिकल सिविलाइजेशन. बुल इंडियन इंस्टीट्यूट हिस्ट मेड हैदराबाद. 1994 जुलाई;24(2):120–6. पीएमआईडी: 11609032.

8. मेटवाले ऐम, जोनेम एमएम, ईशा आईएच, एल्सेहेमआई आईए, मुस्तफा एमएम, अफीफी डब्ल्यूएम, दाऊ डी. ट्रेडिशनल ऐनीसिएंट इजिप्शियन मेडिसिनः ए रिव्यू. सऊदी जे बायोल साइंस. 2021 अक्टूबर;28(10): 5823–5832. डीओआई:10.1016/जे.एसजेबीएस. 2021.06.044. ईपब 2021 जून 19. पीएमआईडी: 34588897; पीएमसीआईडी:पीएमसी8459052.

9. ब्रिटानिका कॉन्साइज एनसाइक्लोपीडिया (2006), सोरानस ऑफ ऐफेसस, एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, ईंक आर्चीइव्ड फ्रॉम दी ओरिजिनल ऑन अक्टूबर 12, 2007, रिट्रीवड दिसंबर 17, 2006.

10. कार्डनेस, डायना (2013), लेट नाट थाई फूड बी कन्फयूजड विद थाई मेडिसनः दी हिप्पोक्रेटिक मिसकोटेशंस, ई–स्पेन जर्नलण

11. चिश्ती, हाकिम (1988), दी ट्रेडिशनल हीलरस हेंडबुक, वरमोन्टः हीलिंग आर्टस प्रैस, आईएसबीएन 978–0–89281–438–1.

12. फिशचेनको, ऐआ; कीमिच, एसडी (1986), "मोडिफिकेशंस ऑफ दी हिप्पोक्रेटिक केपसेपड बेंडेंज", क्लीन किर, 1 (1): 72, पीएमआईडी 3959439.

13. "इंडियन फार्मा इंडस्ट्री लाइक्ली टू ग्रो टू $130 बिलियन इन साइज बाई 2030" दी हिंदू. 2 जून 2023. रिट्रीव्ड 19 सितंबर 2023.

14. "इंडिया'स वैक्सीन मैन्युफैक्चरिंग प्रोसेस" www.investindia.gov.in. रिट्रीवड 19 सितंबर 2023.

15. केबिनेट अप्रूव्स प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम फॉर फार्मास्यूटिकल्स, प्रैस इनफॉरमेशन ब्यूरो ऑफ़ इंडिया, 24 फरवरी 2021.

शोध पत्रिका मंगाने हेतु आवेदन पत्र

(APPLICATION FORM FOR SUBSCRIPTION)

प्रति

प्रधान सम्पादक 'ग्लोकल दृष्टि'

ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग

मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

महोदय/महोदया,

मैं आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका 'ग्लोकल दृष्टि' को वर्ष.....के लिये व्यक्तिगत/ संस्था हेतु नियमित रुप से मंगाने का/की इच्छुक हूँ। अतः मैं नकद/बैंक ड्राफ्ट द्वारा एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष के लिये अंकन रु0 .....की राशि जमा कर रहा/रही हूँ।

भवदीय

नाम व हस्ताक्षर

पूरा नाम (Full Name in Block Letters)

पत्राचार का पता (Mailing Address)

.....

दूरभाष संख्या (Telephone No.) .....

ई–मेल पता (E-mail address)

.....

भुगतान का विवरण (Transaction Details)

.....

मूल्य दर: व्यक्तिगतः रु0 500 प्रति वर्ष संस्थागतः रु0 800 प्रति वर्ष

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

प्रो. शोभा त्रिपाठी,

प्रधान सम्पादक, ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग,

मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121, shobha.tripathi@theglocaluniversity.in

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 79–84

'पॉलीसिथीमियाः एक व्यापक अध्ययन'

गुरदीप पंवार*

सारांश

पॉलीसिथीमिया एक रक्त विकार है जिसमें शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या सामान्य से अधिक हो जाती है। यह विकार विभिन्न कारणों से हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप विभिन्न शारीरिक और जैव रासायनिक प्रभाव होते हैं। इस शोध पत्र में, पॉलीसिथीमिया के प्रकार, इसके कारण, निदान की विधियाँ, उपचार और प्रबंधन के तरीके, और इससे संबंधित जटिलताओं पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

पॉलीसिथीमिया एक चिकित्सा स्थिति है जिसमें शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या में असामान्य वृद्धि होती है। यह विकार विभिन्न कारणों से हो सकता है जिनमें जेनेटिक उत्पत्ति, पर्यावरणीय कारण और अन्य चिकित्सा स्थितियाँ शामिल हैं। पॉलीसिथीमिया को मुख्यतः दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है– प्राथमिक पॉलीसिथीमिया (पॉलीसिथीमिया वेरा) और द्वितीयक पॉलीसिथीमिया।

प्राथमिक पॉलीसिथीमिया जिसे पॉलीसिथीमिया वेरा कहा जाता है, एक दुर्लभ विकार है जो जेक[2] जीन में उत्परिवर्तन के कारण होता है। इस विकार के कारण बोन मैरो में लाल रक्त कोशिकाओं का उत्पादन बढ़ जाता है। दूसरी ओर द्वितीयक पॉलीसिथीमिया तब होती है जब शरीर में ऑक्सीजन की कमी होती है जिससे एरिथ्रोपोइटिन नामक हार्मोन का स्तर बढ़ जाता है और परिणामस्वरूप लाल रक्त कोशिकाओं का उत्पादन बढ़ जाता है।

---

* गुरदीप पंवार, सहायक प्रोफेसर, पैरामेडिकल विभाग, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

• पॉलीसिथीमिया के प्रकार

प्राथमिक पॉलीसिथीमिया (पॉलीसिथीमिया वेरा)

प्राथमिक पॉलीसिथीमिया जिसे पॉलीसिथीमिया वेरा के नाम से भी जाना जाता है, एक क्रोनिक और मायलोप्रोलिफेरेटिव विकार है। यह विकार बोन मैरो में लाल रक्त कोशिकाओं के अत्यधिक उत्पादन के कारण होता है। प्रमुख कारणों में जेक^{2} वी^{617} एफ जीन म्यूटेशन शामिल है, जो लगभग 95% मामलों में पाया जाता है। इस विकार के लक्षणों में थकान, सिरदर्द, खुजली, और दृष्टि समस्याएँ शामिल हैं (शर्मा, एस० के० व गुप्ता, पी० 2020)।

द्वितीयक पॉलीसिथीमिया

द्वितीयक पॉलीसिथीमिया तब होती है जब शरीर में ऑक्सीजन की कमी होती है। इसके मुख्य कारणों में उच्च ऊँचाई पर रहना, पुरानी हृदय और फेफड़े की बीमारियाँ, और अन्य चिकित्सा स्थितियाँ शामिल हैं जो ऑक्सीजन की कमी का कारण बनती हैं। इसके अलावा, कुछ दवाइयों और हार्मोनों का अति प्रयोग भी द्वितीयक पॉलीसिथीमिया का कारण बन सकता है।

• पॉलीसिथीमिया के कारण

पॉलीसिथीमिया के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें जेनेटिक और पर्यावरणीय कारक शामिल हैं।

जेनेटिक कारक

प्राथमिक पॉलीसिथीमिया का मुख्य कारण जेक^{2} वी^{617} एफ जीन म्यूटेशन है। यह उत्परिवर्तन बोन मैरो में लाल रक्त कोशिकाओं के अत्यधिक उत्पादन का कारण बनता है। इसके अलावा, कुछ दुर्लभ मामलों में अन्य जीन म्यूटेशन्स भी पॉलीसिथीमिया का कारण हो सकते हैं (सिंह, वी० 2019)।

पर्यावरणीय कारक

द्वितीयक पॉलीसिथीमिया का मुख्य कारण ऑक्सीजन की कमी है। उच्च ऊँचाई पर रहने वाले लोग जहाँ ऑक्सीजन का स्तर कम होता है, इस विकार से प्रभावित हो सकते हैं। इसके अलावा धूम्रपान और कुछ दवाइयों का अति प्रयोग भी इस विकार का कारण बन सकता है।

• अन्य चिकित्सा स्थितियाँ

कुछ पुरानी बीमारियाँ जैसे कि क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी), हृदय रोग, और स्लीप एपनियाभी पॉलीसिथीमिया का कारण बन सकती हैं। इन स्थितियों में शरीर ऑक्सीजन की कमी की पूर्ति के लिए अधिक लाल रक्त कोशिकाएँ बनाता है।

• नैदानिक लक्षण और परीक्षण

पॉलीसिथीमिया के नैदानिक लक्षण विभिन्न हो सकते हैं और यह व्यक्ति में भिन्न हो सकते हैं (मेहता, एन० 2019)।

नैदानिक लक्षण

पॉलीसिथीमिया के सामान्य लक्षणों में थकान, सिरदर्द, खुजली, दृष्टि समस्याएँ और साँस लेने में कठिनाई शामिल हैं। इसके अलावा कुछ मामलों में रोगी को चक्कर आना, रक्तचाप में वृद्धि और जोड़ों में दर्द हो सकता है (मिश्रा, आर० 2018)।

नैदानिक परीक्षण

पॉलीसिथीमिया के निदान के लिए कई परीक्षण उपलब्ध हैं। इनमें हीमोग्लोबिन और हेमेटोक्रिट स्तर माप जेक[2] जीन परीक्षण, ऑक्सीजन संतशप्ति परीक्षण और बोन मैरो बायोप्सी शामिल हैं। ये परीक्षण पॉलीसिथीमिया के प्रकार और उसकी गंभीरता का निर्धारण करने में मदद करते हैं। (पटेल, एम० (2018). पॉलीसिथीमिया के नैदानिक परीक्षण)

• पॉलीसिथीमिया का उपचार और प्रबंधन

पॉलीसिथीमिया का उपचार और प्रबंधन इस पर निर्भर करता है कि यह विकार कितना गंभीर है और इसके कारण क्या हैं (चंद्रा, आर० व वर्मा, ए० 2021), अथवा (वर्मा, एस० 2019)।

चिकित्सा उपचार

प्राथमिक पॉलीसिथीमिया के उपचार में फैबोटोमि, हाइड्रोक्सीयूरिया और जेक[2] इनहिबिटर्स शामिल हैं। फैबोटोमि एक प्रक्रिया है जिसमें नियमित अंतराल पर रक्त निकाला जाता है ताकि रक्त की गाढ़ापन कम हो सके (गोयल, एम० 2020)।

हाइड्रोक्सीयूरिया एक कीमोथेरेपी दवा है जो बोन मैरो में लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को कम करती है। जेक[2] इनहिबिटर्स जैसे कि रुक्सोलिटिनिबजेक[2] जीन

म्यूटेशन को रोकते हैं और लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को नियंत्रित करते हैं (जोशी, ए० 2019)।

जीवनशैली में बदलाव

पॉलीसिथीमिया के प्रबंधन में जीवनशैली में बदलाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रोगियों को हाइड्रेटेड रहना चाहिए, स्वस्थ आहार का पालन करना चाहिए और धूम्रपान और शराब से बचना चाहिए। इसके अलावा नियमित व्यायाम और वजन नियंत्रण भी महत्वपूर्ण हैं (राठौर, एस० 2020)।

जटिलताएँ और जोखिम

पॉलीसिथीमिया से जुड़े कुछ जटिलताएँ और जोखिम हैं जो रोगियों के लिए गंभीर हो सकते हैं।

थ्रोम्बोसिस

पॉलीसिथीमिया के कारण रक्त गाढ़ा हो जाता है जिससे रक्त के थक्के बनने का खतरा बढ़ जाता है। यह थक्के रक्त वाहिकाओं में अवरोध पैदा कर सकते हैं और थ्रोम्बोसिस का कारण बन सकते हैं।

स्ट्रोक

थ्रोम्बोसिस के कारण मस्तिष्क में रक्त प्रवाह में रुकावट हो सकती है जिससे स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। स्ट्रोक के लक्षणों में अचानक कमजोरी, बोलने में कठिनाई, और संतुलन खोना शामिल है (कपूर, एस० व सिंह, डी० 2021)।

हृदय संबंधी समस्याएँ

पॉलीसिथीमिया के कारण हृदय पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है, जिससे हृदय संबंधी समस्याएँ जैसे कि हृदयाघात हो सकती हैं (राज, पी० व अग्रवाल, डी० 2021)।

• अनुसंधान और विकास

पॉलीसिथीमिया के क्षेत्र में निरंतर अनुसंधान और विकास हो रहा है। नवीनतम अनुसंधान नए जीन म्यूटेशन्स की पहचान, उपचार के नए तरीकों की खोज और रोगियों की जीवन गुणवत्ता में सुधार पर केंद्रित है (गुप्ता, आर० 2018)।

निष्कर्ष

पॉलीसिथीमिया एक गंभीर चिकित्सा स्थिति है जिसे समय पर निदान और उचित उपचार की आवश्यकता होती है। इस शोध पत्र में प्रस्तुत जानकारी से पॉलीसिथीमिया के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है और इससे जुड़े जोखिमों को कम करने के उपाय सुझाए जाते हैं। समय पर निदान, प्रभावी उपचार और जीवनशैली में बदलाव से इस विकार के प्रभाव को कम किया जा सकता है और रोगियों की जीवन गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्रा, आर० (2018). पॉलीसिथीमिया वेराः नैदानिक और चिकित्सीय दृष्टिकोण. भारतीय मेडिकल जर्नल, 45(2), 123–129.।

2. शर्मा, एस० के०, & गुप्ता, पी० (2020). पॉलीसिथीमिया के प्रकार और निदान. मेडिकल रिसर्च रिव्यू, 33(4), 567–573.।

3. सिंह, वी० (2019). पॉलीसिथीमिया वेरा का जेनेटिक अध्ययन. जेनेटिक्स एंड मेडिकल बायोलॉजी, 14(3), 189–196.।

4. चंद्रा, आर०, & वर्मा, ए० (2021). पॉलीसिथीमिया का प्रबंधनः वर्तमान दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेमेटोलॉजी, 27(1), 98–105.।

5. पटेल, एम० (2018). पॉलीसिथीमिया के नैदानिक परीक्षण. मेडिकल डायग्नोस्टिक्स, 9(4), 299–306.।

6. कौल, एस० (2020). पॉलीसिथीमिया वेरा के जेनेटिक उत्परिवर्तन. जेनेटिक रिसर्च, 15(2), 345–352.।

7. जोशी, ए० (2019). पॉलीसिथीमिया का चिकित्सा उपचार. हेल्थकेयर जर्नल, 22(3), 211–218।

8. राज, पी०, & अग्रवाल, डी० (2021). पॉलीसिथीमिया और हृदय रोग. कार्डियोलॉजी टुडे, 35(2), 123–130.।

9. तिवारी, आर० (2018). पॉलीसिथीमियाः नैदानिक और उपचार के दृष्टिकोण. इंडियन मेडिकल जर्नल, 11(3), 77–83.।

10. राठौर, एस० (2020). पॉलीसिथीमिया वेरा के लिए जीवनशैली में बदलाव. लाइफस्टाइल मेडिसिन, 19(4), 455–462.।

11. मेहता, एन० (2019). पॉलीसिथीमिया के लक्षण और निदान. मेडिकल साइंस रिव्यू, 28(2), 144–150.।

12. कुमार, ए०, & सिन्हा, पी० (2021). पॉलीसिथीमिया वेरा का उपचारः एक समकालीन दृष्टिकोण. इंडियन जर्नल ऑफ हेमेटोलॉजी, 16(1), 56–63.।

13. शर्मा, वी० (2018). उच्च ऊँचाई पर पॉलीसिथीमिया. एनवायर्नमेंटल हेल्थ, 13(3), 333–340।

14. गोयल, एम० (2020). पॉलीसिथीमिया के लिए फैबोटोमि उपचार. थेराप्यूटिक जर्नल, 8(4), 221–227.।

15. यादव, ए० (2019). पॉलीसिथीमिया का आनुवांशिक अध्ययन. जेनेटिक साइंस, 17(3), 201–208.।

16. कपूर, एस०, & सिंह, डी० (2021). पॉलीसिथीमिया और स्ट्रोकः एक अध्ययन. न्यूरोलॉजी जर्नल, 29(2), 87–94.।

17. गुप्ता, आर० (2018). पॉलीसिथीमिया का निदानः नवीनतम तकनीकें. मेडिकल इनोवेशन, 12(4), 145–151.।

18. चौहान, ए० (2020). पॉलीसिथीमिया वेराः नैदानिक और उपचार के दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मेडिकल साइंस, 24(2), 99–106.।

19. वर्मा, एस० (2019). पॉलीसिथीमिया का प्रबंधनः वर्तमान दृष्टिकोण. हेल्थकेयर जर्नल, 23(1), 57–64.।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 85–92

चिकित्सा क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artifical Intelligence) का उपयोग और भविष्यवाणी

अंकिता गर्ग*

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) वर्तमान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और उच्च विकास तकनीक है जिसने समाज में गहरा प्रभाव डाला है। इसका उपयोग अब मेडिकल साइंस में भी हो रहा है, जिससे चिकित्सा देखभाल में सुधार हो रहा है और रोगों के निदान और उपचार में वैकल्पिक उपाय प्रदान किए जा रहे हैं। इस अनुसंधान प्रपंच में, हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के चिकित्सा विज्ञान से संबंधित उपयोग पर विस्तार से विचार करेंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मेडिकल साइंस

मेडिकल साइंस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग नए दिशाओं की ओर मोड़ देने में मदद कर रहा है। यह तकनीक वैज्ञानिक अनुसंधान, रोगों के निदान, उपचार, और रोगी की देखभाल में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे न केवल नई चिकित्सा तकनीकों का विकास हो रहा है, बल्कि लोगों की जीवन गुणवत्ता में भी सुधार आया है। आइए, इस अद्वितीय तकनीकी विकास को विस्तार से समझते हैं और इसके प्रभाव को विश्लेषण करते हैं।

---

*अंकिता गर्ग, सहायक प्रोफेसर, स्कूल ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलोजी, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, ankita.garg@theglocaluniversity.in; मो० न० - 9456431914

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की परिभाषा और कार्य

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) वह शाखा है जो कंप्यूटर प्रणालियों को मानव बुद्धि के समान तरीके से सोचने और कार्य करने में सक्षम बनाती है। इसका मुख्य उद्देश्य मशीनों को सिखाना है कि वे आंकलन, संवेदनशीलता, और स्वयं सीखने की क्षमताओं का उपयोग कर सकें। AI में विभिन्न उपकरण और तकनीक हैं जैसे कि मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, न्यूरल नेटवर्क्स, और नेचरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग जो विभिन्न कार्यों में लागू होते हैं।

AI के चिकित्सा में उपयोग की विविधता

AI का चिकित्सा में उपयोग व्यापक है और इसमें कई विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं, जैसे कि रोगों के निदान, और उनके उपचार, और चिकित्सा डेटा का प्रबंधन। यहाँ हम कुछ मुख्य क्षेत्रों को विस्तार से देखेंगे:

1. रोगों के निदान में AI का उपयोग

AI के प्रयोग से डॉक्टर्स और वैज्ञानिकों को नए तरीके से रोगों के निदान करने में मदद मिल रही है। उन्हें लक्षणों, रोग के इतिहास, और रूग्ण के परिवार के चिकित्सा रिकॉर्ड्स के आधार पर सही निदान लगाने में सहायता प्राप्त हो रही है। AI के अल्गोरिथम्स डेटा को विश्लेषण कर रोगों के पहचान में अधिक सक्षम होते हैं और डॉक्टर्स को अधिक सही निदान देने में मदद करते हैं।

2. उपचार योजना और व्यक्तिगतकरण

AI द्वारा विशिष्ट रोगियों के लिए व्यक्तिगत चिकित्सा योजनाओं का विकास किया जा सकता है। यह व्यक्तिगत चिकित्सा योजनाएँ रोगी के स्वास्थ्य की स्थिति, उसके आयु, और अन्य व्यक्तिगत परिस्थितियों के आधार पर तैयार की जा सकती हैं। AI के उपयोग से उपचार की भी गणना की जा सकती है, जिससे कि दवाओं की मात्रा और समय की सही जानकारी मिल सके।

3. चिकित्सा डेटा विश्लेषण

बड़े मात्रा में चिकित्सा डेटा का प्रबंधन और विश्लेषण AI के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह डेटा उपचार के परिणामों, लक्षणों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है और नए चिकित्सा अद्वितीयों के विकास में मदद करता है। AI के अल्गोरिथम्स इस डेटा को अच्छी तरह से विश्लेषित कर सकते हैं और पैटर्न और रोगों के मध्य जोड़ी बना सकते हैं जो डॉक्टर्स को अधिक अच्छी देखभाल देने में मदद करता है।

चिकित्सा परीक्षणों में AI का उपयोग

AI के उपयोग से चिकित्सा परीक्षणों की अद्वितीयता बढ़ाई जा सकती है। यह टेस्टों के परिणामों को फास्टर और अधिक सटीक बना सकता है, जिससे कि रोगों का पता लगाना और उपचार शुरू करना तेजी से हो सके। AI चिकित्सा परीक्षणों के लिए भीतरी चित्र और डाटा की विश्लेषण कर सकता है, जिससे कि डॉक्टर्स को रोग की गहराई और प्रकार का सही निदान लगाने में मदद मिल सके।

1 निदान और चिकित्सा इमेजिंगः

क. AI का उपयोग रोग निदान में बहुत बढ़ा है, विशेषकर मेडिकल इमेजिंग में। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम एक्स–रे, एमआरआई, और सीटी स्कैन जैसी छवियों का विश्लेषण करके सटीक निदान में मदद कर सकते हैं।

ख. उदाहरणः कैंसर निदान में, AI प्रणाली ट्यूमर के आकार और प्रकार को पहचानने में सक्षम होती है।

2. व्यक्तिगत चिकित्साः

क. AI का उपयोग मरीजों की व्यक्तिगत चिकित्सा योजनाएँ तैयार करने में किया जा रहा है। यह मरीजों के जीनोमिक डेटा और अन्य स्वास्थ्य डेटा का विश्लेषण करके व्यक्तिगत उपचार योजनाएँ सुझाता है।

ख. उदाहरणः किसी रोगी के जीनोमिक प्रोफाइल के आधार पर कैंसर उपचार की योजना बनाना।

3. प्रेडिक्टिव एनालिटिक्सः

क. AI भविष्य की स्वास्थ्य समस्याओं की भविष्यवाणी करने में मदद कर सकता है। यह इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड (EHR) का विश्लेषण करके मरीजों के स्वास्थ्य जोखिमों का अनुमान लगा सकता है।

ख. उदाहरणः किसी मरीज के भविष्य में हृदय रोग विकसित होने की संभावना का पूर्वानुमान करना।

4. स्वास्थ्य निगरानी और देखभालः

क. AI का उपयोग पहनने योग्य उपकरणों और स्मार्टफोन ऐप्स के माध्यम से स्वास्थ्य निगरानी में किया जा रहा है। यह वास्तविक समय में स्वास्थ्य डेटा एकत्र करता है और विश्लेषण करता है।

ख. उदाहरणः स्मार्टवॉच के माध्यम से हृदय गति और नींद पैटर्न की निगरानी करना।

5. चिकित्सा अनुसंधानः

क. AI का उपयोग चिकित्सा अनुसंधान में डेटा विश्लेषण के लिए किया जा रहा है। यह बड़े पैमाने पर डेटा सेट का विश्लेषण करके नई दवाओं और उपचारों की खोज में मदद करता है।

ख. उदाहरणः नई दवाओं के लिए संभावित अणुओं की पहचान करना।

चिकित्सा क्षेत्र में AI की भविष्यवाणी

1. रोग प्रबंधन में सुधारः

क. AI आधारित सिस्टम रोग प्रबंधन को और भी कुशल और सटीक बना देंगे। मरीजों के स्वास्थ्य डेटा के निरंतर विश्लेषण से उपचार योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।

2. सुदूर स्वास्थ्य सेवाएँ (Telemedicine):

क. AI सुदूर स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांति ला सकता है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में भी उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जा सकेंगी। वर्चुअल असिस्टेंट और चैटबॉट्स मरीजों को त्वरित चिकित्सा सलाह प्रदान कर सकेंगे।

3. उन्नत चिकित्सा अनुसंधानः

क. AI चिकित्सा अनुसंधान को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। दवाओं के विकास और परीक्षण में AI का उपयोग तेजी से परिणाम देने में सहायक होगा।

4. नए उपचार और तकनीकेंः

क. AI नई चिकित्सा तकनीकों और उपचारों की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह जीन एडिटिंग, सेल थेरेपी, और अन्य उन्नत चिकित्सा तकनीकों को और भी प्रभावी बनाएगा।

5. स्वचालित चिकित्सा प्रक्रियाएँः

क. भविष्य में, AI आधारित रोबोटिक्स का उपयोग सर्जरी और अन्य चिकित्सा प्रक्रियाओं में किया जाएगा। इससे सर्जरी की सटीकता और सफलता दर में सुधार होगा।

चिकित्सा क्षेत्र में AI का भविष्य बहुत उज्जवल है और यह स्वास्थ्य सेवाओं में व्यापक सुधार लाने में सक्षम है। इससे न केवल चिकित्सा प्रक्रियाओं की सटीकता बढ़ेगी, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच भी व्यापक होगी।

चिकित्सा क्षेत्र में AI के अनुप्रयोग

1. निदान और चिकित्सा इमेजिंग (Diagnosis and Medical Imaging)

• स्वचालित छवि विश्लेषणः AI का उपयोग एक्स–रे, एमआरआई, और सीटी स्कैन जैसी चिकित्सा छवियों का स्वचालित रूप से विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह ट्यूमर, फ्रैक्चर, और अन्य असामान्यताओं की पहचान करने में मदद करता है।

क. उदाहरणः Google का DeepMind, जो नेत्र रोगों के निदान में उपयोग किया जाता है।

2. रोग भविष्यवाणी और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स (Disease Prediction and Predictive Analytics)

• भविष्यवाणी एल्गोरिदमः AI का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड (EHR) का विश्लेषण करके रोगियों के भविष्य के स्वास्थ्य जोखिमों की भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता है।

क. उदाहरणः IBM Watson Health, जो कैंसर के उपचार की योजना बनाने में मदद करता है।

3. व्यक्तिगत चिकित्सा (Personalized Medicine)

• जीनोमिक डेटा विश्लेषणः AI का उपयोग जीनोमिक डेटा का विश्लेषण करके व्यक्तिगत उपचार योजनाएँ तैयार करने में किया जाता है।

क. उदाहरणः AI प्रणाली का उपयोग करके कैंसर रोगियों के लिए व्यक्तिगत कीमोथेरापी योजनाएँ बनाना।

4. स्वास्थ्य निगरानी और देखभाल (Health Monitoring and Care)

• पहनने योग्य उपकरण और ऐप्सः AI का उपयोग स्मार्टवॉच और स्मार्टफोन ऐप्स के माध्यम से स्वास्थ्य निगरानी में किया जाता है। यह हृदय गति, रक्तचाप, और नींद पैटर्न जैसी जानकारी एकत्र करता है।

क. उदाहरणः Apple Watch, जो हृदय गति और ECG मॉनिटरिंग के लिए AI का उपयोग करता है।

5. सुदूर स्वास्थ्य सेवाएँ (Telemedicine)

• वर्चुअल असिस्टेंट और चैटबॉट्सः AI का उपयोग वर्चुअल चिकित्सा सलाह प्रदान करने के लिए किया जाता है। यह मरीजों के सवालों का जवाब देता है और प्रारंभिक निदान करता है।

क. उदाहरणः Babylon Health, जो AI आधारित चैटबॉट का उपयोग करता है।

6. दवा खोज और विकास (Drug Discovery and Development)

• दवा खोज एल्गोरिदमः AI का उपयोग नए दवाओं और उपचारों की खोज में किया जाता है। यह संभावित अणुओं और यौगिकों की पहचान करता है जो उपचार के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

क. उदाहरणः Atomwise, जो AI का उपयोग करके नई दवाओं के अणुओं की खोज करता है।

7. अस्पताल प्रबंधन और संचालन (Hospital Management and Operations)

• प्रक्रिया स्वचालनः AI का उपयोग अस्पताल प्रबंधन को स्वचालित और कुशल बनाने के लिए किया जाता है। यह रोगी प्रबंधन, शेड्यूलिंग, और संसाधन आवंटन में मदद करता है।

क. उदाहरणः Qventus, जो AI का उपयोग करके अस्पताल के कार्यों को स्वचालित करता है।

8. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)

• AI आधारित थेरेपीः AI का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य उपचार में किया जा रहा है। यह चैटबॉट्स और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से चिकित्सा परामर्श प्रदान करता है।

क. उदाहरणः Woebot, जो AI आधारित मानसिक स्वास्थ्य थेरेपी प्रदान करता है।

9. सर्जिकल रोबोटिक्स (Surgical Robotics)

• सटीक सर्जरीः AI का उपयोग रोबोटिक सर्जरी में किया जाता है, जिससे सर्जरी की सटीकता और सफलता दर में सुधार होता है।

क. उदाहरणः Da Vinci Surgical System, जो AI का उपयोग करके सर्जरी को अधिक सटीक बनाता है।

चिकित्सा क्षेत्र में AI के ये अनुप्रयोग न केवल स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी और सटीक बना रहे हैं, बल्कि वे मरीजों के लिए भी अधिक व्यक्तिगत और सुलभ देखभाल प्रदान कर रहे हैं। भविष्य में, AI के इन अनुप्रयोगों के और भी विस्तृत और उन्नत होने की संभावना है।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) मेडिकल साइंस में एक महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है और भविष्य में इसका उपयोग और भी बढ़ने की संभावना है। इस प्रौद्योगिकी ने डायग्नोस्टिक सटीकता में सुधार किया है, उपचार योजनाओं को व्यक्तिगतकृत किया है, चिकित्सा डेटा का प्रबंधन सुगम बना दिया है, और चिकित्सा अनुसंधान और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

AI के अनुसार, चिकित्सा में वैश्विक स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिए नए अवसर प्रस्तुत हो रहे हैं। यह प्रौद्योगिकी रोगी को तेजी से और सटीक निदान प्रदान करती है, व्यक्तिगत चिकित्सा योजनाओं का विकास करती है, और चिकित्सा प्रदाताओं को डेटा–आधारित सूचनाओं के साथ समर्थित निर्णय लेने में मदद करती है।

आने वाले समय में, AI का उपयोग चिकित्सा में और भी बढ़ेगा और यह और भी तेजी से विकसित होने की संभावना है। लेकिन, इसके साथ साथ नैतिक मुद्दे, डेटा गोपनीयता की चिंताएँ, और AI–संचालित चिकित्सा नवाचारों के सामाजिक समावेशन को भी ध्यान में रखना होगा।

सम्पूर्ण रूप से, AI चिकित्सा विज्ञान के तटस्थ नजरिये को बदल रहा है, जिससे जनस्वास्थ्य में सुधार, चिकित्सा अनुसंधान के विकास, और अंततः वैश्विक रूप से व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ऐरिक टोपोल. "डीप मेडिसन, हाऊ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस केन मेक हेल्थकेयर हयूमन अगेल" पारटीकुरली चेपटरस ऑन AI अपलीकेशंसस इन डाइगोनोसिटिक्स एडं पर्सनालाईजड मेडिसन.

2. एन्थोनी चेंग, "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन मेडिसनः AI एडं ML इन किलिनिकलकृ

3. ताहा कास–हाउटकृ "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन हेल्थकेयरः ए लीडरस गाइड टू वींनिग इन दी नऊ ऐज ऑफ इंटेलिजेंस हेल्थ सिस्टम" आन AI–ड्राईवेन इनोवेशन इन हेल्थकेयर डिलीवर एडं पेशेंट आऊटकमस.

4. लियो ऐन्थोनी सेली, ऐजीकीयेल जे. ईमेनयूल "प्रीडिक्टिव हेल्थः हाऊ वी केन रेनवेंट मेडिसन टू एक्सटेंडउ अवर बेस्ट ईयरस"कृ डिस्कस AI's रोल इन प्रीडिक्टिव एनालेटिक्स एडं ईटस पोटेन्सियल इमपैक्ट ऑन प्रीवेनटिव मेडिसन.

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 93–99

सूखा रोगः सतत शिक्षा गतिविधि

अंजुम जावेद*

रिकेट्स एक ऐसी स्थिति है जो एपिफिसियल प्लेटों के खनिजकरण में दोष की विशेषता है। यह स्थिति विरासत में मिल सकती है या अधिग्रहित हो सकती है। अधिग्रहित रिकेट्स (पोषण संबंधी) दुनिया भर में रिकेट्स का सबसे आम कारण है। इसकी प्रस्तुति का स्पेक्ट्रम स्पर्शोन्मुख होने से लेकर चिड़चिड़ापन, विकास मंदता और अचानक मश्त्यु तक भिन्न होता है। दीर्घकालिक जटिलताओं से बचने के लिए, रिकेट्स का तुरंत निदान और आक्रामक उपचार आवश्यक है। यह गतिविधि रिकेट्स का कारण बनने वाली स्थितियों, पैथोफिज़ियोलॉजी और प्रस्तुति की समीक्षा करती है और रिकेट्स के रोगियों के मूल्यांकन और उपचार में इंटरप्रोफेशनल टीम की भूमिका पर प्रकाश डालती है।

परिचय

विटामिन–डी, कैल्शियम, और फास्फोरस हड्डियों की परिपक्वता और खनिजीकरण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं। दोषपूर्ण खनिजीकरण रिकेट्स और/या ऑस्टियोमैलेशिया का कारण बन सकता है। रिकेट्स की विशेषता खनिजीकरण में दोष और एपिफिसियल प्लेटों के चौड़े होने से होती है। दूसरी ओर, ऑस्टियोमैलेशिया हड्डी के मैट्रिक्स के खनिजीकरण में दोष के रूप में प्रकट होती है। रिकेट्स और ऑस्टियोमैलेशिया दोनों आमतौर पर बच्चों में एक साथ होते हैं। रिकेट्स विशेष रूप से बच्चों में होता है, जबकि एपीफिसियल प्लेट के संलयन के बाद वयस्कों में ऑस्टियोमैलेशिया विकसित होती है।[1]

*अंजुम जावेद, प्रोफेसर, ग्लोकल कॉलेज ऑफ यूनानी मेडिकल साइंस एंड रिसर्च, सहारनपुर anjum@glocalunanicollege.in

कारण

अब तक, विटामिन डी की कमी पोषण संबंधी रिकेट्स का सबसे आम कारण है। शायद ही कभी, कैल्शियम या फास्फोरस की पोषण संबंधी कमी से भी रिकेट्स हो सकता है। रिकेट्स के अन्य कम सामान्य कारणों में आनुवंशिक कारण, दवाओं के कारण रिकेट्स, और यकृत रोग शामिल हैं। डिफेनिलहाइडेंटोइन और रिफैम्पिसिन जैसी दवाएँ, जो विटामिन डी के चयापचय को प्रभावित करती हैं, भी रिकेट्स का कारण बन सकती हैं।[2] कैल्शियम की कमी से कैल्सीपेनिक रिकेट्स होता है, और विटामिन डी की कमी कैल्सीपेनिक रिकेट्स का सबसे आम कारण है। कैल्सीपेनिक रिकेट्स अपर्याप्त आहार कैल्शियम सेवन के परिणामस्वरूप हो सकता है, जो कुछ विकासशील देशों में रिपोर्ट किया गया है। यह खराब कैल्शियम अवशोषण के परिणामस्वरूप भी हो सकता है, जैसे कि कुअवशोषण सिंड्रोम वाले बच्चों में, विशेष रूप से सीलिएक रोग और सिस्टिक फाइब्रोसिस के मामलों में। वास्तव में, सीलिएक रोग वाले रोगियों में रिकेट्स पहली प्रस्तुति के रूप में अभिव्यक्त हो सकता है।[3] विटामिन डी–आश्रित रिकेट्स प्रकार IA (VDDR1A): इस प्रकार को पहले वंशानुगत छद्म–विटामिन डी की कमी के रूप में जाना जाता था। यह एक ऑटोसोमल रिसेसिव उत्परिवर्तन द्वारा CYP27B1 जीन में होता है। रिकेट्स के इस रूप में, 25–हाइड्रोक्सीविटामिन डी को 1,25–डायहाइड्रोक्सी विटामिन डी में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि 1–अल्फा हाइड्रॉक्सिलेज एंजाइम की कमी होती है, जो किडनी में विटामिन डी जैवसंश्लेषण के लिए आवश्यक है। विटामिन डी–आश्रित रिकेट्स प्रकार IB (VDDR1B): इस प्रकार को विटामिन डी हाइड्रॉक्सिलेशन–कमी वाले रिकेट्स के रूप में भी जाना जाता है। यह एक दुर्लभ स्थिति है, जो CYP2R1 जीन में ऑटोसोमल रिसेसिव उत्परिवर्तन द्वारा होती है। इस प्रकार में, विटामिन डी को 25–हाइड्रॉक्सीविटामिन डी और फिर 1,25–डायहाइड्रॉक्सी विटामिन डी में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि 25–हाइड्रॉक्सिलेज एंजाइम की कमी होती है, जो लीवर में विटामिन डी जैवसंश्लेषण के लिए आवश्यक है। विटामिन डी–आश्रित रिकेट्स टाइप II A (VDDR2A): इस प्रकार के रिकेट्स को वंशानुगत विटामिन डी–प्रतिरोधी रिकेट्स के रूप में भी जाना जाता है। यह एक ऑटोसोमल रिसेसिव स्थिति के रूप में विरासत में मिलता है और विटामिन डी के सक्रिय रूप के लिए अंत–अंग प्रतिरोध की विशेषता है। VDDR2A VDR जीन में उत्परिवर्तन के कारण होता है, जिससे VDR को 1,25–डायहाइड्रॉक्सी विटामिन डी के साथ इंटरैक्ट करने में परेशानी होती है। परिणामस्वरूप, VDR जीन की गतिविधि को नियंत्रित नहीं कर सकता, भले ही शरीर में 1,25–डायहाइड्रॉक्सी विटामिन डी की सामान्य मात्रा हो। विटामिन डी–आश्रित रिकेट्स टाइप II बी (VDDR2B): यह विटामिन डी–आश्रित रिकेट्स का एक असामान्य रूप है। यह एक परमाणु प्रोटीन की अत्यधिक अभिव्यक्ति के कारण होता है, जो सामान्य

विटामिन डी कार्य में हस्तक्षेप करता है, और इसका सटीक रोगजनन स्पष्ट नहीं है। बड़े शिशुओं और बच्चों में दुनिया भर में रिकेट्स का मुख्य कारण विटामिन डी की कमी है, जो या तो पोषण की कमी या सूरज की अपर्याप्त रोशनी के कारण होती है। एक अध्ययन में पाया गया कि रिकेट्स के 89% रोगियों को सूरज की रोशनी बिल्कुल नहीं मिली थी या बहुत कम मिली थी।[4]

पोषण संबंधी विटामिन डी की कमी के जोखिम कारकों में विटामिन डी अनुपूरण के बिना लंबे समय तक विशेष स्तनपान, फोर्टिफाइड दूध की खपत के बजाय अत्यधिक जूस का सेवन, और विटामिन डी फोर्टिफाइड खाद्य पदार्थों का अपर्याप्त सेवन शामिल हैं। जिन गर्भवती माताओं में विटामिन डी की कमी होती है, उनके शिशुओं में रिकेट्स और हाइपोकैल्सीमिया होने की संभावना अधिक होती है।[5] ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उन देशों में भी जहाँ पूरे वर्ष सूर्य का प्रकाश उपलब्ध रहता है, निम्नलिखित कारणों से सीमित सूर्य संपर्क हो सकता हैः ऐसे कपड़े पहनना जो अधिकांश त्वचा को ढकते हैं (धार्मिक, सांस्कृतिक, या जलवायु कारणों से), अधिकांश समय घर के अंदर रहना, गहरी त्वचा का रंग होना (त्वचा में मेलेनिन की उच्च सांद्रता विटामिन डी संश्लेषण को कम करती है), शाकाहारी आहार का सेवन करना, उच्च वायुमंडलीय प्रदूषण वाले क्षेत्र में रहना (प्रदूषण यूवीबी किरणों को जमीनी स्तर तक पहुंचने से रोकता है), या सुरक्षा कारक > 8 वाले सनस्क्रीन का व्यापक उपयोग करना।[6]

उपचार/प्रबंधन

रिकेट्स की उपचार रणनीतियाँ अंतर्निहित कारण पर निर्भर करती हैं – पोषण संबंधी बनाम आनुवंशिक रिकेट्स।

विटामिन डी की पोषण संबंधी कमी के कारण होने वाले रिकेट्स का उपचारः

उपचार में प्रारंभिक गहन और देर से रखरखाव चरण शामिल है। विटामिन डी की पोषण संबंधी कमी के कारण रिकेट्स के इलाज के लिए कई तरह के आहार का उपयोग किया जाता है। इन सभी में विटामिन डी का प्रशासन शामिल होता है, चाहे वह विटामिन डी2 (एर्गोकैल्सीफेरोल) हो या विटामिन डी3 (कोलेकैल्सीफेरोल)। उपचार के बाद, निगरानी की जाती है। विटामिन डी उपचार का गहन चरण कैल्शियम सप्लीमेंटेशन (आहार के माध्यम से या पूरक द्वारा 500 मिलीग्राम) के साथ दो से तीन महीने के लिए दिया जाता है, विशेष रूप से उन बच्चों में जिनमें आहार कैल्शियम की कमी होती है।

एकल खुराक चिकित्सा (स्टॉस थेरेपी):

इसमें विटामिन डी की एक बड़ी खुराक का उपयोग किया जाता है, खासकर उन रोगियों में जिनमें दवा अनुपालन कम होता है। इसे 1 महीने से अधिक उम्र के शिशुओं

के लिए 100,000 से 600,000 अंतरराष्ट्रीय इकाइयों (आईयू) की खुराक पर मौखिक रूप से या इंट्रामस्क्युलर रूप से दिया जाता है। मौखिक उपचार की सिफारिश की जाती है क्योंकि यह विटामिन डी को अधिक तेजी से बहाल करता है। यह उपचार आमतौर पर विटामिन डी की कमी से होने वाले रिकेट्स के इलाज में सुरक्षित और प्रभावी दोनों है। हालांकि, शायद ही कभी यह हाइपरकैल्सीमिया के जोखिम में वृद्धि से जटिल हो सकता है। यूएस एंडोक्राइन सोसाइटी छह सप्ताह के लिए साप्ताहिक रूप से एक बार 50,000 आईयू विटामिन डी (चाहे वह विटामिन डी2 हो या डी3) की खुराक की सिफारिश करती है।

विटामिन डी की कई खुराकें:

इस उपचार में विटामिन डी की छोटी दैनिक खुराक दी जाती है। खुराक रोगी की उम्र पर निर्भर करती है।

– शिशुओं < 1 महीने के लिए, 2–3 महीने के लिए 1000 आईयू दैनिक।

– 1–12 महीने के लिए, 1000 – 5000 आईयू दैनिक।

– > 12 महीने के लिए, 5000 आईयू दैनिक।

इसके बाद, रखरखाव चरण के रूप में 400 आईयू की दैनिक खुराक देने की सिफारिश की जाती है। इसी तरह, यूएस एंडोक्राइन सोसाइटी गहन चिकित्सा में छह सप्ताह के लिए प्रतिदिन 2000 आईयू विटामिन डी और विटामिन डी की कमी के रखरखाव के लिए 400–600 आईयू की सिफारिश करती है।[7] बच्चों में, उपचार शुरू होने के दो सप्ताह के भीतर हड्डियों का दर्द ठीक हो जाता है। मेटाफिसियल सूजन छह महीने में ठीक हो जाती है, और धनुषाकार पैर और घुटने के दर्द में सुधार में 2 साल तक का समय लग सकता है। हालांकि, किशोरों में आमतौर पर कुछ अवशेष रह जाते हैं जिन्हें आर्थोपेडिक सर्जिकल सुधार की आवश्यकता हो सकती है। जैव रासायनिक रूप से, सीरम कैल्शियम और फॉस्फेट का स्तर छह से दस दिनों के भीतर सामान्य हो जाता है, जबकि पीटीएच एक से दो महीने में सामान्य हो जाता है। एएलपी तीन महीने या उससे अधिक समय में सामान्य हो सकता है।

उपचार शुरू होने के बाद, सीरम कैल्शियम, फॉस्फेट, एएलपी और 25 हाइड्रॉक्सीविटामिन डी की सावधानीपूर्वक निगरानी की जाती है। मूत्र कैल्शियम में किसी भी वृद्धि का मूल्यांकन करने के लिए यादृच्छिक मूत्र कैल्शियम से क्रिएटिनिन अनुपात को मापा जाना चाहिए। इसका उपयोग अक्सर उपचार को समायोजित करने की आवश्यकता की निगरानी करने और नेफ्रोकैल्सीनोसिस को रोकने के लिए हाइपरकैल्सीयूरिया का

मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। जैव रासायनिक असामान्यताओं और विटामिन डी बहाली के उपचार के बाद, गंभीर और लगातार अस्थि संबंधी असामान्यताओं का शल्य चिकित्सा द्वारा इलाज किया जा सकता है।[8]

विटामिन डी की पोषण संबंधी कमी के कारण रिकेट्स की रोकथामः यह एक रोकथाम योग्य बीमारी है। पोषण संबंधी रिकेट्स को रोकने का इष्टतम तरीका माता–पिता और गर्भवती महिलाओं को कैल्शियम और विटामिन डी के अच्छे आहार स्रोतों के बारे में शिक्षित करना है, साथ ही पर्याप्त धूप के महत्व के बारे में भी बताना है। हालांकि, त्वचा कैंसर के बढ़ते जोखिम के बिना विटामिन डी संश्लेषण के लिए सूर्य के प्रकाश के संपर्क की सुरक्षित सीमा ज्ञात नहीं है। गर्भवती महिलाओं को अपने बच्चों में रिकेट्स को रोकने के लिए आदर्श रूप से अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ विटामिन डी के 600 आईयू प्रति दिन प्राप्त करने चाहिए। गर्भावस्था के दौरान विटामिन डी सप्लीमेंटेशन प्लेसेंटल एएलपी के उच्च स्तर और नवजात फॉन्टानेल के आकार में वशद्धि, हाइपोकैल्सीमिया और दंत तामचीनी जटिलताओं से बचने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, स्तनपान कराने वाले शिशुओं और अपने जीवन के पहले वर्ष में प्रतिदिन 500 एमएल से कम फोर्टिफाइड फॉर्मूला का सेवन करने वाले शिशुओं को प्रतिदिन 400 आईयू के सार्वभौमिक मौखिक विटामिन डी पूरकता द्वारा रिकेट्स को रोका जा सकता है। शैशवावस्था से परे, विटामिन डी की कमी के लिए उच्च जोखिम वाले समूहों (रिकेट्स के पिछले इतिहास वाले बच्चे, और अपर्याप्त आहार विटामिन डी के उच्च जोखिम वाले) को आहार या पूरक द्वारा प्रतिदिन 600 आईयू विटामिन डी प्राप्त करना चाहिए। विटामिन डी की कमी से होने वाले रिकेट्स को रोकने में विटामिन डी सप्लीमेंटेशन एक प्रभावी हस्तक्षेप है। उदाहरण के लिए, 2005 में टर्की में एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम शुरू किया गया था, जिसमें तीन साल से कम उम्र के बच्चों को मुफ्त विटामिन डी ड्रॉप्स (400 आईयू/दिन) देने का प्रस्ताव दिया गया था। इसके परिणामस्वरूप, रिकेट्स का प्रचलन 1998 में 6% से घटकर 2008 में 0. 1% हो गया। कनाडा में 55वें दृष्टिकोण से ऊपर स्थित भौगोलिक क्षेत्रों के निवासियों को आहार स्रोतों और/या विटामिन डी सप्लीमेंटेशन के माध्यम से 800 आईयू की उच्च दैनिक रखरखाव खुराक लेने की सिफारिश की गई थी।[9]

आनुवंशिक कारणों से होने वाले रिकेट्स का उपचारः

रिकेट्स के कारण होने वाली आनुवंशिक स्थितियों का सबसे अच्छा इलाज बाल चिकित्सा एंडोक्राइनोलॉजिस्ट और/या मेटाबोलिक अस्थि विशेषज्ञ द्वारा किया जाता है।

– **विटामिन डी–निर्भर रिकेट्स प्रकार IA (VDDR1A) और विटामिन डी–निर्भर रिकेट्स प्रकार IB (VDDR1B):** इन दोनों प्रकारों का इलाज कैल्सीट्रिऑल (1,25–डायहाइड्रोक्सीविटामिन डी) से किया जाता है।

– **विटामिन डी–निर्भर रिकेट्स टाइप II ए (VDDR2A) और विटामिन डी–निर्भर रिकेट्स टाइप II बी (VDDR2B):** इनका इलाज कैल्सीट्रिऑल और कैल्शियम की उच्च खुराक से किया जाता है। दीर्घकालिक प्रबंधन में अंतःशिरा कैल्शियम प्रशासन की उच्च खुराक शामिल हो सकती है।

– **पारिवारिक हाइपोफॉस्फेटमिक रिकेट्स:** इसका इलाज मौखिक फॉस्फेट पूरकता के साथ विटामिन डी के रूप में कैल्सीट्रिऑल या अल्फाकैल्सीडोल (1á–हाइड्रॉक्सीकोलेकैल्सीफेरोल) के साथ किया जाता है।[10]

रोग का निदान

रोग का निदान रिकेट्स के कारण और गंभीरता पर निर्भर करता है। पोषण संबंधी रिकेट्स का निदान शीघ्र पहचान और उपचार की प्रारंभिक अवस्था के साथ आशाजनक होता है। उपचार शुरू करने के कुछ महीनों के भीतर इसे पूरी तरह से ठीक किया जा सकता है। हालांकि, अनुपचारित रोगियों में गंभीर जटिलताएं हो सकती हैं। दूसरी ओर, रिकेट्स के आनुवंशिक कारण ज्यादातर इलाज योग्य नहीं होते हैं। उपचार मुख्य रूप से लक्षणात्मक होता है, जो जीवन की गुणवत्ता और जटिलताओं के प्रबंधन में सुधार के लिए केंद्रित होता है।

निवारण और रोगी शिक्षा

माता–पिता को विटामिन डी और कैल्शियम के अच्छे आहार स्रोतों, फोर्टिफाइड खाद्य पदार्थों के सेवन, और पर्याप्त धूप के संपर्क के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। गर्भवती महिलाओं और शिशुओं को विटामिन डी की खुराक देना इस स्थिति को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, इस स्थिति को पोषण संबंधी कमियों को दूर करने में सरकारी पोषण सहायक कार्यक्रम (जैसे SNAP) से भी बहुत लाभ मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पिट एम० जे० रिकेट्स और ऑस्टियोमैलेशिया अभी भी मौजूद हैं। रेडियोल क्लिन नॉर्थ एम० 1991 जनवरी; 29 (1):97–118. (पबमेड)

2. फुकुमोतो एस०, ओज़ोनो के०, मिचिगामी टी०, मिनगावा एम०, ओकाज़ाकी आर०, सुगिमोटो टी०, टेकाउची वाई०, मात्सुमोतो टी०। रिकेट्स और ऑस्टियोमैलेशिया के लिए रोगज़नन और नैदानिक मानदंड – स्वास्थ्य, श्रम और कल्याण मंत्रालय, जापान, जापानी सोसायटी फॉर बोन एंड रिसर्च और जापान एंडोक्राइन सोसायटी द्वारा नियुक्त एक विशेषज्ञ पैनल द्वारा प्रस्ताव। एंडक्र जे० 2015; 62 (8): 665–71। (पबमेड)

3. अल–शराफी बी० ए०, अल–इमाद एस० ए०, शमशायर ए० एम०, अल–फकीह डी० एच० सीलिएक रोग का कारण एक युवा लड़की में गंभीर रिकेट्सः विलंब से निदान की त्रासदीः एक केस रिपोर्ट। बी०एम०सी० विश्राम नोट्स। 2014 अक्टूबर 08; 7 :701. (पी० एम० सी० मुफ़्त लेख) (पबमेड)

4. रॉबिन्सन पी० डी०, होगलर डब्ल्यू०, क्रेग एम० ई०, वर्ज सी० एफ०, वॉकर जे० एल०, पाइपर ए० सी०, वुडहेड एच० जे०, कॉवेल सी० टी०, एंबलर जी० आर०, रिक रेट्स का फिर से उदय हुआ लोडः सिडनी से एक दशक का अनुभव। आर्क डिस इंस्टीट्यूट। जुलाई 2006; 91 (7):564–8। (पी० एम० सी० मुफ़्त लेख) (पबमेड)

5. डिज्क्स्ट्रा एस० एच०, वैन बी० के० ए०, जानसेन जे० डब्ल्यू०, डी वेलेस्चौवर एलएच, ह्यूसमैन डब्ल्यू० ए०, वैन डेन अक्कर ईएल। उच्च जोखिम वाली नवजात शिशुओं में विटामिन डी की कमी का उच्च प्रसार। आर्क डिस आर्काइव. 2007 सितम्बर; 92 (9):750–3. (सी मुक्त लेख) (पबमेड)

6. ओज़कन बी. पोषण संबंधी एसोसिएटेड रिकेट्स। जेक्लिन रेस पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोल। 2010; 2 (4):137–43. (पी० एम० सी० मुफ़्त लेख) (पबमेड)

7. होलिक एम० एफ०, बिंकले एन० सी०, बिस्चॉफ–फेरारी एच० ए०, गॉर्डन सी० एम०, हेनली डी० ए०, हेनी आर० पी०, एमयूपी एम० एच०, वीवर सी० एम०, एंडोक्राइन सोसाइटी। विटामिन डी की कमी का आकलन, उपचार और रोकथामः एंडोक्राइन सोसाइटी के नैदानिक अभ्यास दिशानिर्देश। जे क्लिन एंडोक्रिनॉल मेटाब। 2011 जुलाई; 96 (7):1911–30। (पबमेड)

8. नील्ड एल० एस०, महाजन पी०, जोशी ए०, कामत डी० रिकेट्सः अतीत की बीमारी नहीं। एम० फैम फिजिशियन। 2006 अगस्त 15; 74 (4):619–26। (पबमेड)

9. सिंगलटन आर०, लेशर आर०, गेसनर बी० डी०, बेन्सन एम०, बुल्को एल०, रोसेनफेल्ड जे०, थॉमस टी०, होलमैन आर० सी०, हेलिंगबर डी०, ब्रूस एम०, बार्थोलोम्यू एम०, टिसिंगा जे०। अलास्का के मूल बच्चों में रिकेट्स और विटामिन डी की कमी। जे पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोल मेटाब। 2015 जुलाई; 28 (7–8):815–23. (देखें निःशुल्क लेख) (पबमेड)

10. नील्ड एल० एस०, महाजन पी०, जोशी ए०, कामत डी० रिकेट्सः अतीत की बीमारी नहीं। एम० फैम फिजिशियन। 2006 अगस्त 15; 74 (4):619–26। (पबमेड)

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

की योजना के प्रति ग्लोकल विश्वविद्यालय पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

ग्लोकल विश्वविद्यालय में सुकन्या योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष 200 मेधावी निर्धन छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

हमारी वैबसाइटः **glocaluniversity.edu.in**

हेल्पलाइन नंबरः

+91-9311632008; +91-9311650087

अधिक जानकारी के लिये लिखें:

query@theglocaluniversity.in

ग्लोकल विश्वविद्यालय,
दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 101–105

मुँहासे (एक्ने वल्गेरिस)

मोहम्मद इमलाक*

मुँहासे, जिसे एक्ने वल्गेरिस (Acne Vulgaris) के नाम से भी जाना जाता है, एक सामान्य त्वचा रोग है जो खासकर युवाओं में होता है। यह समस्या तब उत्पन्न होती है जब त्वचा के रोमछिद्र (पोर) तेल और मश्त त्वचा कोशिकाओं से भर जाते हैं। यह आमतौर पर चेहरे, माथे, छाती, ऊपरी पीठ और कंधों पर होता है। (1)

यूनानी चिकित्सा प्रणाली में, एक्ने वल्गैरिस को बुसूर लाबानिया, मोहसा या कील कहा जाता है। (5)

मशहूर यूनानी चिकित्सक इब्न सीना अपने उपनिषद "कैनन ऑफ मेडिसिन" में कहते हैं कि मोहसा नाक और गालों पर छोटे सफेद उद्दिपन होते हैं जो दूध की घनी बूंदों की तरह दिखते हैं। इसका कारण मद्दा सादीदीया (पुरुषीय सामग्री) माना जाता है, जो शरीर की बुखारात (भाप) के कारण त्वचा की सतह पर आता है और इसलिए अपनी चिपचिपाहट के कारण त्वचा में समाप्त नहीं होता है। (10)

कारण

मुँहासे होने के कई कारण हो सकते हैंः

1. हार्मोनल परिवर्तनः किशोरावस्था, मासिक धर्म, गर्भावस्था और मेनोपॉज़ के दौरान हार्मोनल परिवर्तन होते हैं, जो मुँहासे का कारण बन सकते हैं। (2)

---

*मोहम्मद इमलाक, असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रिवेंटिव एण्ड सोशल मेडिसिन विभाग, ग्लोकल कॉलेज ऑफ यूनानी मेडिकल साइंस एण्ड रिसर्च सेन्टर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश।

2. तेल ग्रंथियों की अति सक्रियताः सेबम नामक तेल का उत्पादन अधिक मात्रा में होना। (3)

3. बैक्टीरियाः पोर में बैक्टीरिया का संक्रामण। (4)

4. दवाएँः कुछ दवाएँ जैसे कि स्टेरॉयड और एंटीबायोटिक्स। (2)

5. आहारः उच्च शर्करा और डेयरी उत्पादों का सेवन। (3)

6. तनावः तनाव के कारण हार्मोनल असंतुलन। (6)

लक्षण

मुँहासे के लक्षणों में शामिल हैंः

– चेहरे, गर्दन, पीठ और छाती पर छोटे लाल, सूजे हुए धब्बे। (4)

– दर्दनाक फुंसियाँ जो मवाद से भरी होती हैं। (5)

– त्वचा पर काले धब्बे (ब्लैकहेड्स) और सफेद धब्बे (व्हाइटहेड्स)। (4)

– त्वचा पर गहरे, दर्दनाक गाँठ (सिस्ट)। (4)

उपचार

मुँहासे के उपचार के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं, जिनमें शामिल हैंः

1. स्थानीय उपचारः (7)

– बेंज़ॉयल पेरोक्साइडः बैक्टीरिया को मारता है और सूजन को कम करता है।

– सैलिसिलिक एसिडः मश्त त्वचा कोशिकाओं को हटाता है और रोमछिद्रों को साफ रखता है।

– रेटिनोइड्सः त्वचा की कोशिकाओं के उत्पादन को नियंत्रित करते हैं।

2. मुंह से ली जाने वाली दवाएँः (7)

– एंटीबायोटिक्सः बैक्टीरिया को कम करते हैं और सूजन को नियंत्रित करते हैं।

– हार्मोनल उपचारः गर्भनिरोधक गोलियाँ या एंटी–एण्ड्रोजन एजेंट्स।

3. प्राकृतिक उपचारः (7)

– चाय के पेड़ का तेलः सूजन और बैक्टीरिया को कम करने के लिए।

– एलोवेराः सूजन को कम करने और त्वचा को शीतलता प्रदान करने के लिए।

4. जीवनशैली और घरेलू उपचारः (8)

– संतुलित आहारः अधिक पानी पिएँ और फल, सब्जियाँ, और संपूर्ण अनाज खाएँ।

– चेहरे को दिन में दो बार साफ करेंः हल्के साबुन और गुनगुने पानी का उपयोग करें।

– तनाव प्रबंधनः योग, ध्यान और नियमित व्यायाम करें।

गाज़ा–ए–हुस्न अफ़ज़ा (Ghazae Husn afza) : सुंदरता को निखारने वाला एक यूनानी उपचारः (9)

गाज़ा–ए–हुस्न अफ़ज़ा एक प्रसिद्ध यूनानी हर्बल पेस्ट है जिसे त्वचा की सुंदरता और स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से चेहरे की त्वचा की देखभाल के लिए किया जाता है। यह पेस्ट विभिन्न प्राकृतिक जड़ी–बूटियों और सामग्रियों से बना होता है जो त्वचा की समस्याओं को दूर करने और उसकी चमक को बढ़ाने में मदद करते हैं।

गाज़ा–ए–हुस्न आफ़ज़ा के घटकः

1. पोस्त नारंगी (Orange peel) – 25 ग्राम
2. तुख्म बाक़ला मुक़्क़शर (Phaseolus vulgaris) – 100 ग्राम
3. तुख्म मूली (Raphanus sativus) – 150 ग्राम
4. तुरमु (Lupinus albus) – 150 ग्राम
5. जौ (Hordeum vulgare) – 50 ग्राम
6. दा लचना मुक़्क़शर (Cicer arietinum) – 50 ग्राम
7. अदास मुस्सलाम मुक़्क़शर (Lens culinaris) – 50 ग्राम
8. कतीरा (Cochlospermum religiosum) – 25 ग्राम
9. मटर (Pisum sativum) – 100 ग्राम
10. मग़्ज़ तुख्म–ए खरबूज़ा (Cucumis melo) – 150 ग्राम

11. निशास्ता (Starch) – 50 ग्राम

12. खुशबू–ए–गुलाब (Rose essence) – 15 मिलीलीटर

उपयोग की विधिः

पेस्ट तैयार करनाः गाज़ा–ए–हुस्न अफ़ज़ा (10 ग्राम) को पानी की मदद से पेस्ट बनाएँ।

लगाने का समयः रात को सोने से पहले इस पेस्ट को चेहरे पर स्थानीय रूप से लगाएँ।

सावधानीः इस पेस्ट को आँखों के संपर्क में आने से बचाएँ।

धोनाः अगले दिन सुबह इसे गुनगुने पानी से धो लें।

लाभ

1. त्वचा की सफाईः गहरी सफाई प्रदान करता है और त्वचा के छिद्रों को खोलता है।

2. मश्त त्वचा को हटानाः मश्त त्वचा कोशिकाओं को हटाने में मदद करता है, जिससे त्वचा का नवीनीकरण होता है।

3. मुँहासों का इलाजः मुँहासों और अन्य त्वचा संक्रमणों को कम करने में सहायक।

4. चमक बढ़ानाः त्वचा की प्राकृतिक चमक और कोमलता को बढ़ाता है।

5. दाग–धब्बों का इलाजः त्वचा के दाग–धब्बों और काले धब्बों को हल्का करने में मदद करता है।

निष्कर्ष

मुँहासे एक सामान्य और सामान्यतः अस्थायी त्वचा समस्या है जो समय के साथ ठीक हो सकती है। उचित उपचार और सावधानी बरतने से इसे नियंत्रित किया जा सकता है। अगर मुँहासे बहुत गंभीर हो जाएँ या घरेलू उपचार से ठीक न हों, तो एक त्वचा विशेषज्ञ से परामर्श लें।

टिप्पणीः इस लेख का उद्देश्य आपको मुँहासे के बारे में जानकारी देना और इसके उपचार के विभिन्न विकल्पों से अवगत कराना है। आपकी त्वचा की देखभाल के लिए सही कदम उठाना महत्वपूर्ण है ताकि आप स्वस्थ और सुंदर त्वचा प्राप्त कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पसरीचा जे० एस०, गुप्ता आर. इलस्ट्रेटेड टेक्स्टबुक ऑफ डर्मेटोलॉजी. तीसरा संस्करण. नई दिल्लीः जयपी ब्रदर्स मेडिकल पब्लिशर्स (पी०) एलटीडी; 2006. पृष्ठ 126–129।

2. लोलिस एम० एस०, बोवे डब्ल्यूपी, शलिता ए आर० एक्ने और प्रणालीगत रोग. क्यूटेनियस मैनिफेस्टेशन ऑफ इंटरनल डिजीज 2009; 93(6):1161–68, 1172–73।

3. बेहल पी० एन०, अग्रवाल ए, श्रीवास्तव जी० प्रैक्टिस ऑफ डर्मेटोलॉजी. नौवां संस्करण. नई दिल्लीः सीबीएस पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स; 2002. पृष्ठ 408–412।

4. थप्पा डीएम० टेक्स्टबुक ऑफ डर्मेटोलॉजी, वेनेरोलॉजी और लेप्रोसी (नई एमसीआई दिशानिर्देशों पर आधारित). नई दिल्लीः बीआई चर्चिल लिविंगस्टोन प्रा० लिमिटेड; 2008. पृष्ठ 88–89।

5. कुरेशी एच० एम० जामीउल हिकमत. नई दिल्लीः इदारा किताबुश शिफा; 2011. पृष्ठ 994, 995.

6. चियू ए० चॉन एसवाई, किम्बॉल एबी. तनाव के प्रति त्वचा रोग की प्रतिक्रियाः परीक्षा के तनाव से प्रभावित एक्ने वल्गैरिस की गंभीरता में परिवर्तन. आर्क डर्मेटोल 2003: 139 (7): 897–900।

7. खन्ना एन० इलस्ट्रेटेड सिनॉप्सिस ऑफ डर्मेटोलॉजी एंड सेक्सुअली ट्रांसमिटेड डिजीज. पांचवाँ संस्करण. नई दिल्लीः एल्सेवियर, रीड एल्सेवियर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की एक शाखा; 2016. पृष्ठ 119–130।

8. रज़ी अबू बक्र मोहम्मद बिन जकरिया. किताबुल फाखिर फिल तिब. खंड I. भाग I. नई दिल्लीः सीसीआरयूएम; 2005. पृष्ठ 37–38।

9. कराबदीन मजीदी. नई दिल्लीः ऑल इंडिया यूनानी तिब्बी कांफ्रेंस; 1986. पृष्ठ 286।

10. लोने एएच, हबीब एस, अहमद टी, अंवर एम. एक पॉलीहर्बल यूनानी तैयारी के प्रभाव का अध्ययन एक्ने वल्गैरिस में: एक प्रारंभिक अध्ययन। आयुर्वेद और एकीकृत चिकित्सा जर्नल। 2012 अक्टूबर; 3(4):180।

'ग्लोकल दृष्टि' में योगदान के लिये निर्देश

1. 'ग्लोकल दृष्टि' मूल रूप से लिखे गये शोध–पत्रों का स्वागत करता है। शोध–पत्र (6000– 8000 शब्दों से ज्यादा नहीं) का पृष्ठ के एक तरफ टाइप किया होना तथा पंक्तियों के बीच दोहरी जगह के साथ पृष्ठ के चारों तरफ बराबर हाशिया होना आवश्यक है। शोध–पत्र के साथ (300 शब्दों से ज्यादा नहीं) उसका सामान्य सारांश भी संलग्न होना चाहिए।

2. शोध–पत्र को माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में टाइप करके ई मेल द्वारा संलग्नक के रूप में glocaldrishti@theglocaluniversity.in पर भेजा जाना चाहिए। लेख के अक्षर KrutiDev 011 लिपि में होना चाहिए। अन्य किसी लिपि में टाइप किया हुआ लेख स्वीकार्य नहीं होगा।

3. लेख में उद्धरण के लिए कृपया लेखक दिनांक की प्रक्रिया को अपनाएं, उदाहरण के लिए, (चौहान 2002)। यदि किसी लेखक के एक अधिक लेखों का उद्धरण दिया जा रहा हो तो कृपया प्रकाशन के वर्षों को अल्पविराम द्वारा अलग करें (सिहं 1995, 1999)। उद्धरण के पृष्ठ संख्या को कोलन का प्रयोग कर अलग लिखें (मुखर्जी 1995 : 244) तथा यदि एक से अधिक पृष्ठों का उद्धरण दिया जा रहा हो तो पृष्ठ संख्याओं को हाइफन का प्रयोग कर लिखें (दूबे 1995 : 244–344)। जब एक से अधिक लेखकों का उद्धरण दिया जा रहा हो तो भिन्न लेखकों को कालानुक्रम के हिसाब से सेमी कोलन द्वारा अलग करके लिखें (दूबे 1995; मिश्रा 2005; नारायण 2008)। सह–लेखकों के कार्य के लिए, दोनों के नामों को इस प्रकार उद्धृत करें (फ्रैंक और डेविड 1995); तीन से अधिक लेखकों को उद्धृत करने के लिए, पहले नाम के बाद 'और अन्य' का उपयोग करें (हैल्ड और अन्य, 2010)। अगर राजपत्र रिपोर्ट और सरकारी संस्थाओं के या किसी अन्य संगठन के कार्यों को उद्धृत करना हो तो, जिस संस्था/संगठन ने प्रकाशन को प्रायोजित किया हो तो उसका पूरा नाम लिखें (दिल्ली सरकार 2010), और इन्हें फिर से बाद के प्रसंगों में उद्धृत करना हो तो संस्था/संगठन के नाम का शब्द संक्षेप /लघु रूप लिखें (दि.स. 2010)।

4. लेख में प्रयोग में लाये हुए पुस्तकों का विस्तृत विवरण बाद मे अलग से सन्दर्भ ग्रन्थ सूची इस क्रम में लिखें– (क) लेख : लेखक का नाम; प्रकाशन का वर्ष; लेख का शीर्षक (इन्वर्टिड कोमा में); शोध पत्रिका नाम (इटालिक में); और वोल्यूम सं., अंक सं. और प्रारम्भ और अंत के पृष्ठ सं.। (ख) संपादित पुस्तकों /कार्यों में अध्याय; लेखक का नाम; प्रकाशन का वर्ष; अध्याय का शीर्षक (इन्वर्टिड कोमा में); सम्पादक का नाम; पुस्तक का वर्ष (इटालिक में); अध्याय का शीर्षक (इन्वर्टिड कोमा में); अध्याय के प्रारम्भ और अंत के पृष्ठ सं.; प्रकाशन का स्थल; प्रकाशन का वर्ष; प्रकाशन का नाम। सन्दर्भों की सूची में (पहले) लेखक के उपनााम के वर्णक्रमानुसार रूप से लिखा जाना चाहिए।

5. 'ग्लोकल दृष्टि' एंडनोट स्वरूप का अनुकरण करता है जो इस प्रकार हैः उन सभी व्याख्यात्मक टिप्पणियों को एक साथ क्रमबद्ध करें जिस क्रम में उन्हें मुख्य लेख में उल्लेखित किया गया है (क्रमांक के आधार पर सुपरस्क्रिप्ट का प्रयोग करके) एवं उन्हें लेख के अन्त में पर सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के पहले रखें। एंडनोटस को सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

6. तालिका, चार्ट, नक्शे, ऑकडे आदि लेख के अन्त में अलग से रखा जाना चाहिए। इन्हें अंकों का प्रयोग कर उपयुक्त शीर्षक/कैप्शन के साथ क्रमानुसार रखें। लेख में उन्हें उनके अंको द्वारा सूचित करें –सारणी 5, नक्शा 1 आदि न कि उनके स्थान द्वारा–जैसे सारणी के ऊपर चित्र के नीचे आदि।

7. अन्य कार्यों से लिए शब्द या वाक्यों को ऐकल उद्धरण चिन्हों के भीतर रखें, दोहरे उद्धरण चिन्हों का उपयोग केवल कोटेशन के भीतर ही करें। यदि कोटेशन पचास शब्दों से अधिक हो तो उन्हें मुख्य टेक्स्ट से अलग लिखें एवं उन्हें पृष्ठ के बाईं तरफ रखें। जब तक पूरा वाक्य उद्धरण का हिस्सा न हो तो विराम चिन्ह उद्धरण चिन्हों के बाहर ही रहना चाहिए।

8. 1 से 99 तक के अंकों को शब्दों में लिखें 100 तथा उससे ऊपर के अंकों को आँकडों में। हालांकि कुछ जगहों पर आँकडों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जैसे दूरीः 3 कि.मी.; उम्रः 32 वर्ष; प्रतिशतः 64 प्रतिशत एवं वर्षः 1995 आदि।

9. योगदानकर्ताओं द्वारा अपने लेख के साथ एक अलग पृष्ठ पर अपना नाम, पद, आधिकारिक पता और ई–मेल भेजना आवश्यक है। उन्हीं लेखों के प्रकाशन पर विचार किया जायेगा जिन्हें पहले कभी प्रकाशित नही किया गया हो या जिन्हें किसी अन्य जगह पर प्रकाशन के लिए विचार न किया जा रहा हो।

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 107–114

ए.आई. टैकनोलोजी के साथ अकेलेपन को दूर करना

यश राज*

सारांश

आधुनिक समाज में अकेलेपन की बढ़ती व्यापकता मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पेश करती है। यह शोधपत्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) के माध्यम से अकेलेपन को कम करने के लिए एक नए दृष्टिकोण की खोज करता है। हम उपयोगकर्ताओं को बातचीत में शामिल करने के लिए ए.आई. चौटबॉट का उपयोग करने वाली एक प्रणाली का प्रस्ताव करेंगे, जो उनकी रुचियों और नापसंदियों के आधार पर व्यक्तिगत टोकन उत्पन्न करेगी। ये टोकन परिष्कृत एल्गोरिदम का उपयोग करके समान रुचियों वाले व्यक्तियों के मिलान की सुविधा प्रदान करेंगे। उपयोगकर्ताओं के बीच सार्थक संबंध बनाकर, इस दृष्टिकोण का उद्देश्य अकेलेपन की महामारी को प्रभावी ढंग से संबोधित करना है। हम टोकन जनरेशन, मिलान एल्गोरिदम और डेटा गोपनीयता और एल्गोरिदम पूर्वाग्रह के नैतिक विचारों के तकनीकी पहलुओं पर चर्चा करेंगे। प्रस्तावित प्रणाली बेहतर सामाजिक कनेक्शन और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य की क्षमता प्रदान करेगी। हम इस तकनीक को मौजूदा सोशल प्लेटफॉर्म और निरंतर सिस्टम सुधार के साथ एकीकृत करने के लिए भविष्य की दिशाओं पर भी प्रकाश डालेंगे। यह शोध आज के डिजिटल युग में सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देने और अकेलेपन को कम करने में ए.आई. की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डालता है।

प्रस्तावना

अकेलापन एक गंभीर सामाजिक मुद्दा बन गया है जिसका दुनिया भर में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ रहा है। यह सिर्फ अकेले होने का एहसास नहीं हैय यह एक जटिल भावनात्मक स्थिति है जो सेहत को बुरी तरह प्रभावित कर सकती है। हाल के सामाजिक बदलावों, जिसमें सामाजिक अलगाव में वृद्धि, पारंपरिक सामुदायिक संरचनाओं का क्षरण और डिजिटल संचार तकनीकों का उदय शामिल है, ने इस मुद्दे को और बढ़ा दिया है। जबकि ये तकनीकें कनेक्शन के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती हैं, वे अक्सर गहरे, सार्थक संबंधों के बजाय सतही बातचीत की ओर ले जाती हैं।

अकेलेपन में कई कारक योगदान करते हैं। सीमित बातचीत या अपने समुदाय से अलग होने की भावना की विशेषता वाला सामाजिक अलगाव एक प्रमुख कारण है। इसके

---

* असिस्टेंट प्रोफेसर, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर– 247121

अतिरिक्त, आधुनिक जीवनशैली में बदलाव, जैसे कि दूर से काम करना और गतिशीलता में वृद्धि, ने पारंपरिक सामाजिक नेटवर्क को बाधित कर दिया है। अवसाद और चिंता जैसी मानसिक स्वास्थ्य स्थितियाँ अकेलेपन की भावनाओं को और बढ़ा देती हैं, जिससे एक दुष्चक्र बनता है जो मानसिक और भावनात्मक संकट दोनों को बढ़ाता है।

अकेलेपन के परिणामों को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है, जो इसे अवसाद और चिंता जैसे मानसिक स्वास्थ्य विकारों के बढ़ते जोखिमों के साथ–साथ हृदय संबंधी बीमारियों और कमजोर प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं जैसी शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं से जोड़ता है। दीर्घकालिक अकेलापन स्वास्थ्य के लिए धूम्रपान या मोटापे जितना ही हानिकारक हो सकता है, जो प्रभावी समाधानों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

इस संदर्भ में प्रौद्योगिकी की दोहरी भूमिका है। जबकि डिजिटल संचार प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया कनेक्ट करने के नए तरीके प्रदान करते हैं, वे अक्सर वास्तविक, पर्याप्त बातचीत को बढ़ावा देने में विफल होते हैं, जिससे एक विरोधाभास पैदा होता है जहाँ व्यक्ति लगातार "जुड़े" रहने के बावजूद अधिक अलग–थलग महसूस करते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) इस विरोधाभास का एक आशाजनक समाधान प्रदान करता है। उन्नत भाषा मॉडल और चौटबॉट उपयोगकर्ताओं को सार्थक बातचीत में शामिल कर सकते हैं, उनकी रुचियों और भावनात्मक स्थितियों को समझ सकते हैं। इन इंटरैक्शन के आधार पर वैयक्तिकृत टोकन बनाकर, ए.आई. परिष्कृत मिलान Algorithm के माध्यम से गहरे कनेक्शन की सुविधा प्रदान कर सकता है। इस अभिनव दृष्टिकोण में अकेलेपन की महामारी को महत्वपूर्ण रूप से संबोधित करने और सामाजिक कल्याण में सुधार करने की क्षमता है।

अवधारणा अवलोकन

ए.आई. चौटबॉट उपयोगकर्ताओं को गतिशील और सार्थक वार्तालापों में शामिल करके डिजिटल इंटरैक्शन में क्रांति ला रहे हैं। GPT और Google के Gemma जैसे उन्नत भाषा मॉडल का लाभ उठाते हुए, ये चौटबॉट उपयोगकर्ताओं की रुचियों, प्राथमिकताओं और नापसंदियों का पता लगाने के लिए गहन संवाद कर सकते हैं। प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) के माध्यम से, चौटबॉट उपयोगकर्ता प्रतिक्रियाओं में सूक्ष्म बारीकियों की व्याख्या करते हैं, प्रत्येक व्यक्ति की भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं का विस्तृत प्रोफाइल बनाते हैं। यह व्यक्तिगत जुड़ाव मैचमेकिंग प्रक्रिया में बाद के चरणों का आधार बनता है, जिससे ए.आई. को उपयोगकर्ता की संतुष्टि को बढ़ाने वाली चीजों के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त करने की अनुमति मिलती है।

उपयोगकर्ता डेटा के संग्रह के बाद, सिस्टम टोकन जनरेशन के साथ आगे बढ़ता है। टोकन उपयोगकर्ताओं की रुचियों, प्राथमिकताओं और नापसंदियों का डिजिटल प्रतिनिधित्व है, जो संवादात्मक डेटा से प्राप्त होता है। प्रत्येक टोकन में शौक, मूल्य और

भावनात्मक स्थिति जैसी विशिष्ट विशेषताएँ समाहित होती हैं। इस प्रक्रिया में मुख्य विषयों की पहचान करने और इन विशेषताओं को टोकन में एन्कोड करने के लिए वार्तालाप डेटा का विश्लेषण करना शामिल है। उपयोगकर्ता प्रोफाइल का यह संक्षिप्त और संरचित प्रतिनिधित्व वरीयताओं को सटीक रूप से कैप्चर करना सुनिश्चित करता है, जिससे अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ प्रभावी तुलना और मिलान की सुविधा मिलती है।

मिलान एल्गोरिदम अंतिम घटक है, जो समान प्रोफाइल वाले उपयोगकर्ताओं को जोड़ने के लिए जेनरेट किए गए टोकन का उपयोग करता है। साझा रुचियों और वरीयताओं के आधार पर उच्च संगतता की पहचान करने के लिए एल्गोरिथ्म उपयोगकर्ता आधार में टोकन की तुलना करता है। यह समानता स्कोर की गणना करता है, संभावित मिलानों को फिल्टर करता है, और प्रासंगिकता के अनुसार उन्हें रैंक करता है। तुलनीय रुचियों और भावनात्मक स्वभाव वाले उपयोगकर्ताओं का मिलान करके, एल्गोरिथ्म सफल बातचीत और उपयोगकर्ता संतुष्टि की संभावना को बढ़ाता है। यह समग्र दृष्टिकोण – एआई चौटबॉट, टोकन जनरेशन और मिलान एल्गोरिदम को एकीकृत करना – वास्तविक और संगत सामाजिक कनेक्शन को बढ़ावा देकर अकेलेपन से निपटने के लिए एक मजबूत समाधान प्रदान करता है।

कार्यान्वयन

डेटा संग्रहण

एक प्रभावी ए.आई.–संचालित मैचमेकिंग सिस्टम की नींव उपयोगकर्ता डेटा का नैतिक संग्रह है। ए.आई. चौटबॉट्स के साथ बातचीत के दौरान, यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि उपयोगकर्ता डेटा पारदर्शी रूप से और स्पष्ट सहमति से एकत्र किया जाए। उपयोगकर्ताओं को डेटा संग्रह के उद्देश्य, एकत्र किए जा रहे डेटा की प्रकृति और इसका उपयोग कैसे किया जाएगा, इसके बारे में सूचित किया जाना चाहिए। गोपनीयता नीतियाँ स्पष्ट और सुलभ होनी चाहिए, और उपयोगकर्ताओं के पास किसी भी समय डेटा संग्रह से बाहर निकलने या अपना डेटा हटाने का विकल्प होना चाहिए।

उपयोगकर्ता की गोपनीयता की रक्षा के लिए, व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं की पहचान को रोकने के लिए डेटा को अनाम और एकत्रित किया जाना चाहिए। उपयोगकर्ता की जानकारी को अनधिकृत पहुँच और उल्लंघनों से बचाने के लिए एन्क्रिप्शन और सुरक्षित डेटा संग्रहण जैसे मजबूत सुरक्षा उपायों को लागू करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, प्रासंगिक डेटा सुरक्षा विनियमों, जैसे कि General Data Protection Regulation (GDPR) या California Consumer Privacy Act (CCPA) का पालन यह सुनिश्चित करता है कि सिस्टम डेटा गोपनीयता और उपयोगकर्ता अधिकारों के लिए कानूनी मानकों का अनुपालन करता है।

टोकनीकरण

टोकनीकरण में वार्तालाप डेटा को एक संरचित प्रारूप में परिवर्तित करना शामिल है जो उपयोगकर्ता के रुचियों और प्राथमिकताओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रक्रिया ए.आई. चौटबॉट के साथ बातचीत से एकत्रित प्राकृतिक भाषा इनपुट का विश्लेषण करने के साथ शुरू होती है। GPT या Google के Gemma जैसे उन्नत भाषा मॉडलों का उपयोग करके, प्रणाली पाठ से सार्थक अंतर्दृष्टि निकाल सकती है, प्रत्येक उपयोगकर्ता से संबंधित प्रमुख विषयों और विशेषताओं की पहचान कर सकती है।

टोकनीकरण की तकनीकी प्रक्रिया में कई चरण शामिल हैं:

1. टेक्स्ट विश्लेषण (TeÛt Analysis): भाषा मॉडल उपयोगकर्ता के वार्तालाप इनपुट को महत्वपूर्ण पैटर्न और विषयों की पहचान करने के लिए संसाधित करता है। नामित इकाई मान्यता (Named Entity Recognition), भावना विश्लेषण (Sentiment Analysis), और विषय मॉडलिंग (Topic Modeling) जैसी तकनीकों का उपयोग प्रासंगिक जानकारी निकालने के लिए किया जाता है।

2. फीचर एक्सट्रैक्शन (Feature EÛtraction): निकाली गई जानकारी को उपयोगकर्ता की प्रोफाइल के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करने वाली विशिष्ट विशेषताओं में वर्गीकृत किया जाता है, जैसे कि शौक, मूल्य, प्राथमिकताएं, और भावनात्मक अवस्थाएँ। प्रत्येक विशेषता को एक संख्यात्मक या श्रेणीबद्ध मान सौंपा जाता है ताकि उपयोगकर्ता की रुचियों का एक संरचित प्रतिनिधित्व बनाया जा सके।

3. टोकन जनरेशन (Token Generation): विशेषताओं को टोकनों में एन्कोड किया जाता है, जो उपयोगकर्ता की प्रोफाइल का सार पकड़ने वाले अद्वितीय पहचानकर्ता होते हैं। ये टोकन कॉम्पैक्ट और आसानी से तुलनीय होने के लिए डिजाइन किए गए हैं, जिससे अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ कुशलतापूर्वक मिलान करना संभव हो सके।

4. टोकन स्टोरेज (Token Storage): उत्पन्न टोकन को सुरक्षित रूप से एक डेटाबेस में संग्रहीत किया जाता है, जहां उन्हें मिलान उद्देश्यों के लिए एक्सेस और उपयोग किया जा सकता है। डेटा की अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखा जाता है ताकि टोकन सटीक रूप से उपयोगकर्ता प्रोफाइल को प्रतिबिंबित करें और गोपनीय रहें।

मिलान के लिए एल्गोरिदम

मिलान एल्गोरिदम एक महत्वपूर्ण घटक है जो उत्पन्न टोकनों का उपयोग करके समान प्रोफाइल वाले उपयोगकर्ताओं को जोड़ता है। एल्गोरिदम उच्च संगतता और सार्थक कनेक्शनों को सुनिश्चित करने के लिए कई चरणों के माध्यम से संचालित होता है:

1. समानता गणना (Similarity Calculation): एल्गोरिदम विभिन्न उपयोगकर्ताओं के टोकनों की तुलना करके समानता स्कोर की गणना करता है। इस प्रक्रिया में टोकनों द्वारा

दर्शाए गए रुचियों, प्राथमिकताओं, और अन्य गुणों के संरेखण का मूल्यांकन शामिल है। कोसाइन समानता (Cosine Similarity) या यूक्लिडियन दूरी (Euclidean Distance) जैसी तकनीकों का उपयोग टोकन सेटों के बीच समानता की डिग्री को मापने के लिए किया जा सकता है।

2. फिल्टरिंग और रैंकिंग (Filtering and Ranking): समानता स्कोर के आधार पर, एल्गोरिदम संभावित मेल को फिल्टर करता है ताकि उच्चतम संगतता वाले मेल की पहचान की जा सके। उपयोगकर्ताओं को उनकी प्रासंगिकता के अनुसार रैंक किया जाता है, उच्च–रैंक वाले मेल रुचियों और प्राथमिकताओं में मजबूत संरेखण को प्रतिबिंबित करते हैं।

3. विविधता विचार (Diversity Consideration): कनेक्शनों की विविधता को बढ़ावा देने और प्रतिध्वनि कक्षों (Echo Chambers) को रोकने के लिए, एल्गोरिदम मिलान प्रक्रिया में विविधता मानदंडों को शामिल करता है। इसमें विभिन्न रुचियों और पृष्ठभूमियों पर विचार करना शामिल है ताकि उपयोगकर्ताओं को उन व्यक्तियों के साथ जोड़ा जा सके जो व्यापक दृष्टिकोण और अनुभवों का स्पेक्ट्रम प्रदान करते हैं।

4. मिलान अनुकूलन (Match Optimization): सिस्टम उपयोगकर्ता फीडबैक और इंटरैक्शन परिणामों के आधार पर मिलान एल्गोरिदम को लगातार परिष्कृत करता है। मशीन लर्निंग तकनीकों का उपयोग करके मेल सफलता दर का विश्लेषण किया जाता है और एल्गोरिदम को समय के साथ सटीकता और उपयोगकर्ता संतुष्टि में सुधार करने के लिए समायोजित किया जाता है।

कुल मिलाकर, ए.आई.–चालित मैचमेकिंग सिस्टम का कार्यान्वयन नैतिक डेटा संग्रह, सटीक टोकनीकरण, और एक परिष्कृत मिलान एल्गोरिदम पर ध्यान केंद्रित करता है। गोपनीयता, सटीकता, और विविधता सुनिश्चित करके, सिस्टम का लक्ष्य सार्थक सामाजिक संपर्क को सुविधाजनक बनाना और अकेलेपन की महामारी को प्रभावी ढंग से संबोधित करना है।

लाभ, चुनौतियाँ, और नैतिक विचार

प्रस्तावित ए.आई.–चालित मैचमेकिंग सिस्टम अकेलेपन को संबोधित करने में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। उपयोगकर्ताओं को साझा रुचियों और प्राथमिकताओं के आधार पर मिलान करके, सिस्टम अधिक सार्थक और प्रामाणिक कनेक्शनों को सुविधाजनक बनाता है। यह लक्षित दृष्टिकोण उपयोगकर्ताओं को संगत साथी खोजने में मदद करता है, जिससे गहरे संबंध बन सकते हैं जो समग्र सामाजिक संतुष्टि और भावनात्मक भलाई को बढ़ा सकते हैं। परिणामस्वरूप, अकेलेपन को कम करने पर संभावित प्रभाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि उपयोगकर्ता संतोषजनक इंटरैक्शन में संलग्न होने की अधिक संभावना रखते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य को काफी हद तक सुधार सकते हैं।

हालांकि, कई चुनौतियों और नैतिक विचारों को संबोधित करना आवश्यक है। गोपनीयता और सुरक्षा सर्वोपरि हैंय उपयोगकर्ता डेटा को अनधिकृत पहुंच और उल्लंघनों को रोकने के लिए Encryption और सुरक्षित स्टोरेज जैसी कड़े उपायों के माध्यम से संरक्षित किया जाना चाहिए। डेटा संग्रह प्रथाओं में पारदर्शिता और गोपनीयता विनियमों का अनुपालन उपयोगकर्ता विश्वास बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

एल्गोरिदम पूर्वाग्रह (Algorithm Bias) एक और महत्वपूर्ण चिंता है। मिलान एल्गोरिदम को विविध Datasets को शामिल करके और एल्गोरिदम का लगातार मूल्यांकन और परिष्कृत करके पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए। यह दृष्टिकोण रूढ़ियों को सुदृढ़ करने या उपयोगकर्ता प्रोफाइल के आधार पर असमान अवसर बनाने से बचने में मदद करता है।

अंत में, प्रणाली की सफलता के लिए पहुंच योग्यता (Accessibility) महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना कि प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ता–मित्रवत है और विभिन्न स्तरों की तकनीकी प्रवीणता वाले व्यक्तियों के लिए सुलभ है, आवश्यक है। इसमें स्पष्ट निर्देश, समर्थन संसाधन, और सिस्टम के साथ जुड़ने के वैकल्पिक तरीके प्रदान करना शामिल है ताकि उन सभी उपयोगकर्ताओं को समायोजित किया जा सके, जिनमें वे भी शामिल हैं जो तकनीकी रूप से कुशल नहीं हो सकते हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने से प्रणाली की प्रभावशीलता और अकेलेपन को कम करने पर इसका प्रभाव अधिकतम हो जाएगा।

निष्कर्ष

प्रस्तावित ए.आई.–संचालित मैचमेकिंग प्रणाली में उपयोगकर्ता की रुचियों और प्राथमिकताओं के आधार पर बुद्धिमान मिलान के माध्यम से सार्थक संयोजन की सुविधा प्रदान करके अकेलेपन की महामारी को संबोधित करने की महत्वपूर्ण क्षमता है। उपयोगकर्ता प्रोफाइल को समझने के लिए उन्नत AI Chat&Bot का लाभ उठाकर और समान टोकन वाले व्यक्तियों से मिलान करने के लिए परिष्कृत एल्गोरिदम का उपयोग करके, सिस्टम सामाजिक संपर्कों को बढ़ाने और अलगाव की भावनाओं को कम करने के लिए एक आशाजनक समाधान प्रदान करता है।

आगे देखते हुए, इस सिस्टम को मौजूदा सोशल प्लेटफॉर्म के साथ एकीकृत करने से इसकी पहुँच काफी हद तक बढ़ सकती है, व्यापक दर्शकों से जुड़ सकती है और इसके प्रभाव को बढ़ा सकती है। लोकप्रिय सोशल मीडिया और नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म के साथ सहयोग करने से उपयोगकर्ताओं को मैचमेकिंग के अवसरों तक सहज पहुँच मिल सकती है, जिससे प्रणाली की दृश्यता और प्रभावशीलता बढ़ सकती है।

इसके अतिरिक्त, निरंतर सुधार के माध्यम से सिस्टम की प्रभावशीलता को और भी बेहतर बनाया जा सकता है। उपयोगकर्ता प्रतिपुष्टि (feedback) को शामिल करके और इन्टरएक्शन डाटा (Interaction Data) का विश्लेषण करके, सिस्टम उपयोगकर्ताओं की

जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने और उभरती चुनौतियों का समाधान करने के लिए विकसित हो सकता है। मिलान मानदंडों को परिष्कृत करने और समय के साथ संयोग की सटीकता को बढ़ाने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम (Machine Learning Algorithm) का उपयोग किया जा सकता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रणाली प्रासंगिक और प्रभावशाली बना रहे।

संक्षेप में, ए.आई. बुद्धिमान और व्यक्तिगत मैचमेकिंग के माध्यम से अकेलेपन को कम करने में परिवर्तनकारी क्षमता रखता है। हालांकि, इसकी प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए, आगे अनुसंधान और विकास महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में निरंतर अन्वेषण और नवाचार अधिक मजबूत, सुलभ और प्रभावी समाधान बनाने में योगदान देगा, अंततः सामाजिक संपर्कों की गुणवत्ता में सुधार करेगा और बड़े पैमाने पर अकेलेपन का मुकाबला करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

केसिओप्पो, जे.टी. 2018: दी ग्रोइंग प्रोब्लमस् ऑफ लोनलीनेस, दी लेंसेट, 391(10119), 426-427. (This paper provides a comprehensive overview of the increasing prevalence of loneliness, its impacts on mental and physical health, and the need for effective interventions.)

होल्ट–लुनस्टेड,जे., स्मिथ,टी.बी. एन्ड लेटन, जे.बी. 2015: सोशल रिलेशनशिप्स एन्ड मोरेलिटी रिस्कः ए मेटा अनेलेसिस, पी.एल.ओ.एस. मेडिसिन 7(7), e1000316. (A meta-analysis that explores the connection between social relationships and health outcomes, emphasizing the significance of addressing loneliness.

गारटन,एल., हेथोर्नथवैट,सी. एन्ड वैलमैन, बी. 2014: स्टडिंग सोशल नेटवकर्स्: ए गाइड टू मेथडस एन्ड एपलिकेशन्स. सेज पब्लिकेशंस। (This book offers insights into social network analysis methods, which are useful for understanding the dynamics of social connections and interventions.)

वेसक्वेज,सी.ए., मारजेनो,एल. 2023: ए.आई. चैटबोटस एन्ड मेन्टल हैल्थः पोटेंशियल एन्ड पिटफाल्स, जरनल ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रिसर्च, 82, 457-478. (Discusses the capabilities and limitations of AI chatbots in mental health applications, including their use in reducing loneliness.)

बिंस,आर., विएल्स,एम., वान क्लिक एम., 2002: एल्गोरिदमिक बायसः हाउ टू रिकग्नाइज एंड मिटिगेट बायस इन मशीन लर्निंग, ए.सी.एम. ट्रांजेक्शन्स ऑन कम्प्यूटर–ह्यूमैन इंटरेक्शन, 29(1), 1-21. (Provides a detailed examination of algorithmic bias and methods for mitigation, relevant for ensuring fairness in the AI matching algorithm.)

यूरोपियन यूनियन 2016: जनरल डेटा प्राटेक्शन रेगुलेशन (GDPR)] ऑफिशियल जरनल ऑफ यूरोपियन यूनियन। (Outlines data protection principles and regulations crucial for ensuring user privacy and security in AI applications.)

स्वीने,एल. 2013: डिकस्क्रिमिनेशन इन ऑनलाइन एड डिलिवरी, ए.सी.एम. डिजीटल लाइब्रेरी। (Explores issues related to discrimination and bias in online algorithms, highlighting concerns that are pertinent to the proposed matching system.)

सट्टन,आर.एस. एंड बारटो,ए.जी. 2018: रीइन्फोर्समेंट लर्निंगः एन इंट्रोडक्शन, एम.आई.टी. प्रेस। (A foundational text on reinforcement learning, which can be applied to continuously improve the AI system based on user feedback and interaction outcomes.)

एलिसन,एन.बी., स्टीनफील्ड,सी. एंड लेम्पे, सी. 2007: 'दी बेनिफिट ऑफ फेसबुक फ्रैंडस': सोशल केपिटल एंड कॉलेज स्टूडेंटस यूज ऑफ ऑनलाइन सोशल नेटवर्क साइट्स, जरनल ऑफ कम्प्यूटर–मिडिएटिड कम्यूनिकेशन, 12(4), 1143-1168. (Examines the role of social networking sites in forming social connections, relevant for exploring integration with existing platforms.)

कुमार,एस. एंड कौर, ए. 2021: चैलेंजिस एंड स्ट्रेटेजिस फॉर एनश्यूरिंग ए.आई. एक्सेसेबिलिटी, इंटरनेशनल जरनल ऑफ ह्यूमैन–कम्प्यूटर इंटरेक्शन, 37(11), 1040-1057. (Discusses strategies for making AI technologies accessible to a diverse user base, which is essential for the successful deployment of the proposed system.)

आई.एस.एस.एन. संख्या : 3048–8664
ग्लोकल दृष्टि GLOCAl DRISHTI
वर्ष 1, अंक 1, सितम्बर 2024, पृ. 115–121

विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट

विश्वविद्यालय का सामान्य परिचय

ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, मिर्जापुर पोल के पास शिवालिक पहाड़ियों के मध्य 350 एकड़ के सुरम्य स्थल में स्थापित है। माँ शाकुंभरी देवी के क्षेत्र में स्थापित यह विश्वविद्यालय यू० जी० सी० 2 (f)व 12(B) के अंतर्गत पंजीकृत है। इसको एन० आई० आर० एफ० रैंक में 165 वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय माननीय कुलपति प्रो० पी० के० भारती के कुशल मार्गदर्शन में निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। प्रतिकुलपति प्रो० सतीश कुमार शर्मा, प्रति कुलपति प्रो० जॉन फिनबे (आयूष) व कुलसचिव प्रो० एस० पी० पाण्डे आई० क्यू० ए० सी० डाइरेक्टर प्रो० संजय कुमार सहित लगभग 20 सिद्धहस्त विद्वानों के नेतृत्व में शैक्षिक व प्रशासनिक कार्यों का संचालन सुगमतापूर्वक हो रहा है। विश्वविद्यालय में 500 से ऊपर शिक्षक 55 से अधिक कोर्स 15 से अधिक देशों के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ के छात्रों को अच्छे पैकेज में रोजगार प्राप्त हो रहे हैं। इस वर्ष का अधिकतम पैकेज 35 लाख रुपए प्रति वर्ष रहा।

आयुर्वेद और यूनानी पद्धतियों की चिकित्सीय शिक्षा व चिकित्सा से संबंधित पराचिकित्सा, फार्मेसी, नर्सिंग विभागों की शिक्षा भी दी जाती है। यहाँ पर विज्ञान और तकनीकी, डिजाइनिंग, पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन के साथ वोकेशनल स्टडीज, कानून, कृषि विज्ञान, विज्ञान, कॉमर्स, शिक्षा, कला एवं सामाजिक विज्ञान आदि सभी विषयों के 55 से अधिक कोर्स संचालित हैं, जो यू० जी० सी०, एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज, फार्मेसी काउंसिल ऑफ़ इंडिया, बार काउंसिल ऑफ इंडिया, इंडियन नर्सिंग काउंसिल, नेशनल कमिशन फॉर इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन, नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन, उत्तर प्रदेश स्टेट मेडिकल फैकल्टी और नेशनल इंस्टीट्यूशन रैंकिंग फ्रेमवर्क से अनुमोदित और सम्बद्ध हैं। ग्लोकल विश्वविद्यालय विशेषतः अपने उच्च कोटि के शोध कार्यों के लिए जाना जाता है।

ग्लोकल विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय में 41 हजार ग्रंथ है। केंद्रीय पुस्तकालय में चीफ लाइब्रेरियन बिपुल कुमार झा और डिप्टी लाइब्रेरियन शालू विश्वकर्मा कार्यरत है, इसी के साथ सम्मिलित यहाँ आयुर्वेद और यूनानी डिपार्टमेंट लाइब्रेरी भी है,

जिसका संचालन असद खान और अनवर खान करते हैं। पुस्तकालय में पाठक की आवत प्रतिदिन लगभग 300 होती है, तथा पुस्तकों की निर्गत–आवत संख्या प्रतिदिन लगभग 250 होती है, इसके साथ ही ग्लोकल मेडिकल पुस्तकालय भी है जिसमें लाइब्रेरियन के पद पर उर्वशी त्यागी कार्यरत हैं। मेडिकल पुस्तकालय में 9550 पुस्तक हैं। 500 बैक वॉल्यूम जर्नल हैं जिसमें 255 अंतर्राष्ट्रीय और 245 भारतीय जर्नल हैं। करेंट सब्सक्राइब राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय जर्नल 19 हैं। पुस्तकालय में पाठक की आवत प्रतिदिन लगभग 100 से 150 के बीच होती है।

पुस्तकालयों की कार्यावधि प्रातः 9:00 से सायं 4:00 बजे तक है, तथा पुस्तकालय में कोहा सॉफ्टवेयर से सभी कार्यों का संपादन होता है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों में उन्नत कोटि की प्रयोगशालाएँ हैं जिसमें छात्रों को उनके अध्ययन से संबंधित सभी प्रकार के प्रयोग करने हेतु फैकल्टी मदद करती है।

विश्वविद्यालय में छात्र और छात्राओं हेतु अलग–अलग छात्रावास हैं और उत्तम और स्वच्छ मेस है, जिसमें छात्र–छात्राओं की रुचि अनुसार तीन समय का भोजन दिया जाता है। इसके साथ ही दोनों छात्रावासों से संलग्न प्लेग्राउंड भी हैं और छात्र–छात्राओं हेतु आधुनिक जिम भी है।

मई, जून, जुलाई 2024 की प्रगति रिपोर्ट

विश्वविद्यालय में सभी कोर्स को पूर्ण करके परीक्षाओं का सफल सफलतापूर्वक संपादन किया गया और समय पर परिणाम घोषित किए गए। इसके साथ अंतिम वर्ष के छात्रों का लगभग 20 कंपनियों में अधिकतम 35 लाख प्रतिवर्ष के पैकेज से प्लेसमेंट हुआ। विश्वविद्यालय की गुणवत्ता को देखते हुए यहाँ पर नवीन छात्र पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। अतः प्रवेश प्रक्रिया भी प्रगति पर है। जुलाई माह तक विश्वविद्यालय में 1100 से अधिक छात्र प्रवेश ले चुके हैं। सभी विभागों की बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक जुलाई माह तक पूर्ण कर ली गई है। जिससे नई शिक्षा नीति के अनुसार पाठ्यक्रम में नवीनता और उसकी गुणवत्ता बनी रहे। शोध परक दृष्टि और निरंतर ज्ञान वृद्धि के प्रति लगन होने के कारण अनेक फैकल्टी नें महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। जिसमें लॉ विभाग के प्रोफेसर पी० एस० पवार, डॉ० आतिका बानो, डॉ० वसीम अहमद, डॉ० मुक्तादिर अली, डॉ० नंदिनी, डॉ० काशिफ़ा अज़ीम, डॉ० अनस जमील, डॉ० मोहम्मद सलमान, डॉ० फ़ासिब रागिब गौहर, डॉ० वाजिद खान, डॉ० वंदना मिश्रा, डॉ० मलिक अमीन, डॉ० ज़फ़र अहमद खान, डॉ० शुभम सिंह बागिया, डॉ० अंतरा राय, और कुमारी वैशाली नें बुक चैप्टर लिखे।

इसके साथ ही कॉमर्स एंड बिजनेस विभाग में 25 मई 2024 को परीक्षा प्रबंधन में सुधार एवं दक्षता विषय पर सेमिनार, 14 जून 2024 को म्युचुअल फंड के महत्व पर

वेबिनार और उद्यमिता कौशल एवं उद्यमिता क्षमता पर कार्यशाला की गई। इसके साथ 'छात्रों की नए वर्ष में शैक्षिक तैयारी' विषय पर कार्यशाला हुई। इसी विभाग के डीन डॉक्टर विजय कुमार द्वारा 'भारतीय अर्थशास्त्र और सामाजिक गतिशीलता' विषय पर पुस्तक का प्रकाशन किया गया। 16 जुलाई को डॉ० अमित कुमार द्वारा ए० आई० के उपयोग पर व्याख्यान दिया गया। इसके साथ ही डॉ० अमित कुमार, डॉ० विजय कुमार, डॉ० विकास श्रीवास्तव एवं डॉ० संदीप गुप्ता का डिजाइन 'प्रीसीजन एग्रीकल्चर कॉस्ट एनालिसिस के लिए रियल टाइम ए० आई० प्लेटफार्म' का डिज़ाइन पेटेंट स्वीकृत कर लिया गया है।

तकनीकी विभाग में छात्र अलामीन अबुबकर मोहम्मद, को रिगटेक ऑयलफील्ड ट्रेनिंग सेंटर प्राइवेट लिमिटेड में और छात्र शीबू अहमद, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी में 1 महीने की इंटर्नशिप के लिए चुना गया है।

फैकल्टी एस० मिर्जा, मुहम्मद फरहान, वजीहा के०, भारत के विभिन्न उत्तर मध्य क्षेत्र में सड़कों की योजना, डिजाइन और निर्माण की विफलता, स्थिरता के लिए नागरिक, सामग्री और पर्यावरण पर पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आई० सी० सी० एम० ई० एस० 2024), आयोजित सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा, जे० पी० सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाकनाघाट, भारत, 4–5 अक्टूबर 2024 के लिए स्वीकृत हुआ है।

इसके साथ मुहम्मद फरहान, ए० हुसैन, एस० मिर्जा, खुजामशुकुरोव एन० ए०, '3डी प्रिंटिंग का उपयोग करके रोगाणुरोधी पी० एल० ए०–कम्पोजिट बायोमेडिकल अनुप्रयोगों का विकासः माइक्रोबियल पर्यावरण पर प्रभाव और मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम', अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक और व्यावहारिक सम्मेलन 'स्थिति और विकास' मौलिक और व्यावहारिक माइक्रोबायोलॉजी की संभावनाएँः युवा वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण 'उज्बेकिस्तान गणराज्य के विज्ञान अकादमी' के माइक्रोबायोलॉजी संस्थान द्वारा आयोजित और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नल साइंस एंड इनोवेशन के सहयोग से आयोजित, 25–26 सितंबर, 2024 के लिए स्वीकृत हुआ।

मुहम्मद फरहान*, एच० सरवर, नजीर ए०, सूफियान एम०, एस० एच० अब्बास, एम० मुगीश, 'मशीन लर्निंग (एम० एल०) एल्गोरिदम का उपयोग करके वास्तविक समय अनुप्रयोगों में एक प्रभावशीलता धोखाधड़ी पहचान प्रणाली (एफ० डी० एस) डिजाइन करें', अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 30–31 जुलाई 2024 को विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में प्रगति (ICASET-2024) पर स्वीकृत हुआ।

मुहम्मद फरहान, सुफियान मिर्जा, एस० पी० अंसारी, ए० खान, के० रशीद, पी० के० भारती, 'लकड़ी के पॉलिमर कंपोजिट में चावल की भूसी के सुदृढीकरण के यॉंत्रिक

गुण', स्प्रिंगर नेचर, के लिए 2024 https://link.springer.com/पुस्तक/10.1007/978–3–031–35664–3 स्वीकृत हुआ।

खान डब्ल्यू०, श्यामल डी० एस०, काज़मी ए० ए० भारत में एंड–ऑफ–लाइफ टायरों का प्रबंधनः वर्तमान प्रथाएँ, नियामक ढाँचा, चुनौतियाँ और अवसर। सामग्री चक्र और अपशिष्ट प्रबंधन जर्नल। 2024 मई;26(3):1310–25 में प्रकाशित हुआ।

श्यामल डी० एस०, सवाई ए०, काज़मी ए० ए० भारतीय हिमालयी राज्य की शहरी नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली पर एक समीक्षा। सामग्री चक्र और अपशिष्ट प्रबंधन जर्नल। 2022 मई;24(3):835–51 में प्रकाशित हुआ।

7–8 जून, 2024 को वॉटरलू विश्वविद्यालय, कनाडा द्वारा आयोजित भू–आपदा और निर्माण इंजीनियरिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICGCE-2024) में ऑनलाइन भाग लिया।

एलायंस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड डिजाइन, एलायंस यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आयोजित 'हालिया रुझान कंपोजिट्स में' पर 5–दिवसीय ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लिया। एफ० डी० पी० के दौरान उद्योग और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के अकादमी के विशेषज्ञों द्वारा ऑनलाइन सत्र आयोजित किए गए। (18/06/2024 से 22/06/2024 तक)। जोरहाट इंजीनियरिंग कॉलेज के सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा ऑनलाइन आयोजित 'आपदा प्रबंधन में भू–इंफार्मेटिक्स' पर एक सप्ताह के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लिया। जोरहाट इंजीनियरिंग कॉलेज के सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा ऑनलाइन आयोजित 'संरचनात्मक इंजीनियरिंग और सामग्री विज्ञान में हालिया प्रगति (RASEMS)' पर एक सप्ताह के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लिया।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों पर पेटेंट प्राप्त किए गए।

1. ए आई बेस्ड सेंसर इंटीग्रेटेड सेफ्टी हेलमेट फॉर कंस्ट्रक्शन – डिजाइन न० 6307981– यू के ग्रांट ई डी।
2. लॉट बेस्ड इंटेलिजेंट डस्टबिन फ़ॉर वेस्ट सेग्रीगेशन और डिस्पेंसिंग बेस्ड ऑन लासो रिग्रेशन– 20234162409 – प्रकाशित।
3. सिस्टम एंड मेथड टू जेनरेट इलेक्ट्रिक एनर्जी फ्रॉम काइनेटिक एनर्जी का मूविंग व्हीकल यूजिंग डिस्क्रिमिनेंट एनालिसिस– 202341062406– प्रकाशित।

4. स्क्रैच जेनरेटिंग शटरिंग प्लेट ऑफ प्लास्टरिंग – डिजाइन नं० 396095–001– ग्रांटेड।

5. अग्रीगेट क्वालिटी एनालाइजर– डिजाइन नं० 415770–001– प्रकाशित।

कला और सामाजिक विज्ञान विभाग के डीन डॉ० वसीम अहमद द्वारा विश्वविद्यालय की परीक्षा में सहायक केंद्र निरीक्षक की भूमिका का निर्वहन किया गया । इसके साथ ही उनके और डॉ० शोभा त्रिपाठी के द्वारा ग्राम प्रधान सम्मान समारोह, शिक्षक सम्मान समारोह और वृक्षारोपण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। डॉ० शोभा त्रिपाठी नें जून माह में वैश्विक साहित्यिक सांस्कृतिक एवं ज्योतिष शोध संस्था, हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन नीदरलैंड्स, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक मध्य प्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में चित्रकूट में हो रहे अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में ,'रामचरितमानस में षटविकारों के प्रतीक पात्र' विषय पर अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। इनके प्रपत्र की पूर्ण मौलिकता को देखते हुए इन्हें 'साहित्य शिल्पी सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया, जिसमें स्वरचित मौलिक रचनाओं का प्रस्तुतीकरण होना था। इस प्रस्तुतीकरण में उन्हें 'नीलू गुप्ता साहित्यिक सम्मान' भी प्राप्त हुआ। इसके साथ ही इनका प्रपत्र 'राम चरित मानस में भारतीय संस्कृति' उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान की पत्रिका 'अपरिहार्य' में प्रकाशन हेतु स्वीकृत हो गया है।

फार्मेसी कॉलेज के डीन डॉ० उमेश कुमार के संरक्षण में पोस्टर प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, और मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। उनके संरक्षण में हुए NIRF फार्मेसी कैटेगरी में विश्वविद्यालय के फार्मेसी कॉलेज को 110वाँ स्थान प्राप्त हुआ है।

फार्मेसी विभाग से पब्लिकेशंस

लेखक

अब्दुल हफीज, शम्मून अहमदः रेट्स में लिपोपॉलीसैकराइड–प्रेरित चिंता और अवसाद में एरुसिक एसिड उपचार का उपयोग करते हुए ADMET गुण/व्यवहार परिप्रेक्ष्य/इंटरल्यूकिन पथ (Scopus. WOS)

सतीश कुमार शर्माः डर्माटोलॉजी में माइक्रोसपोंज की खोजः अवसर और चुनौतियाँ (Scopus. WOS)

शम्मून अहमदः बोन टिशू रीजेनेरेशन के लिए स्कैफोल्ड के विकास के लिए उपयोग की गई टूल्स और तकनीकेंः एक विस्तृत समीक्षा (Scopus)

शम्मून अहमदः सिरब्रोवास्कुलर पहेली मोयामोया रोग की उत्पत्ति, पहचान, और प्रबंधन (Scopus)

अब्दुल हफीजः ड्राईपीटेस रॉक्सबर्गीआई की वनस्पति वर्णन, फाइटोकॉन्स्टीटुएंट्स, और जैविक गतिविधि पर एक समीक्षा (Scopus. WOS)

वर्षा देवीः रुमेटाइड आर्थराइटिस थेरेपी में त्रिदैक्स प्रोकम्बेन्स लिन के नैनोजेल की संभावनाएँ (Scopus)

पुस्तक

डॉ० शम्मून अहमदः फार्मेसी और नर्सिंग में भविष्यवादी प्रवृत्तियाँ, ISBN 978–93–6252–573–4

पेटेंट

फिरोज आलमः मेडिकल फ्लूइड मेजरमेंट डिवाइस 420671–001

फिरोज आलमः एक्सपायर्ड मेडिसिन्स डिटेक्टिंग डिवाइस 420670–001

मुहम्मद मुर्तजाः कॉम्पैक्ट और पोर्टेबल ब्लड केमिस्ट्री एनालाइजर, 418986–001

मुहम्मद मुर्तजाः रोडेंट्स में न्यूरोसाइकोलॉजिकल व्यवहारिक गतिविधि का पता लगाने के लिए उपकरण 415853–001

विश्वविद्यालय की अतिरिक्त गतिविधियों में लॉ० डिपार्टमेंट द्वारा 'मेरा प्रथम वोट राष्ट्र के लिए' विषय पर तत्क्षण वाक् प्रतियोगिता और शपथ ग्रहण समारोह हुआ और जिला स्तरीय यूथ पार्लियामेंट का आयोजन किया गया। जुलाई माह में स्थानीय लगभग 100 ग्राम प्रधानों को माननीय कुलपति द्वारा सम्मानित किया गया। इसी माह में समस्त भारत के लगभग 300 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। शिक्षक सम्मान समारोह की विशेषता यह रही थी इसमें मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री डॉक्टर भारत भूषण तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मश्री डॉक्टर राजन सक्सेना, पद्मश्री श्री सेठपाल सिंह की उपस्थिति रही। 20 जुलाई को वृक्षारोपण दिवस में विश्वविद्यालय की समस्त फैकल्टी और छात्र–छात्राओं द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इसके साथ सभी फैकल्टी नें ग्लोकल विश्वविद्यालय में नवाचार और बहु–विषयक अनुसंधान के लिए बौद्धिक संपदा अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन IIPMR में भाग लिया।

अन्य गतिविधियां

5 मई 2024	ग्लोकल वि0 वि0 की कार्यशाला में दिये टिप्स . विज्ञान वर्ग में रुचि बनाने की आवश्यकता।
12 मई 2024	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा शीर्षक ये एक व्याख्यान माला का आयोजन।
26 मई 2024	ग्लोकल वि0 वि0 में शिक्षा की आधुनिक चुनौतियों पर चर्चा।
28 मई 2024	परीक्षा प्रणाली में चुनौतियों का समाधान किया प्रस्तुत।
5 जून 2024	ग्लोकल वि0 वि0 में मनाया पर्यावरण दिवस।
5 जून 2024	ग्लोकल वि0 वि0 में चलाया पौधारोपण अभियान।
5 जून 2024	छात्र–छात्राओं पौधरोपण व संरक्षण का लिया संकल्प।
12 जून 2024	ग्लोकल कॉलेज में पंचकर्म इलाज शुरु।
14 जून 2024	ग्लोकल विश्वविद्यालय की देश में चालीसवीं रैंक।
14 जून 2024	ग्लोकल वि0 वि0 ने उच्च शिक्षा में की उपलब्धि हासिल।
14 जून 2024	इंपैक्ट रैंकिंग 2024 में ग्लोकल वि0 वि0 का भी नाम।
21 जून 2024	ग्लोकल वि0 वि0 में मनाया गया योग दिवस।
27 जून 2024	200 छात्राओं को ग्लोकल वि0 वि0 की ओर से निशुल्क शिक्षा।
4 जुलाई 2024	ग्लोकल विश्वविद्यालय में किया ग्राम प्रधान सम्मान समारोह का आयोजन।
10 जुलाई 2024	ग्लोकल विश्वविद्यालय को मिला अभिनव विश्वविद्यालय का पुरस्कार।
10 जुलाई 2024	ग्लोकल विश्वविद्यालय को मिला मोस्टर प्रॉमिसिंग पुरस्कार
19 जुलाई 2024	ग्लोकल विश्वविद्यालय के 45 छात्र–छात्राओं का कैंपस प्लेसमेंट।

ग्लोकल विश्वविद्यालय में मशीन लर्निंग, कंप्यूटिंग में प्रगति, नवीकरणीय ऊर्जा और संचार MARC के अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। विश्वविद्यालय में शिक्षण व शिक्षणेत्तर कार्य माननीय कुलपति जी के दिशा निर्देशन में प्रगति पर है।

— शोभा त्रिपाठी

-.

शोध पत्रिका मंगाने हेतु आवेदन पत्र

(APPLICATION FORM FOR SUBSCRIPTION)

प्रति

प्रधान सम्पादक 'ग्लोकल दृष्टि'

ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग

मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121

महोदय/महोदया,

मैं आपकी संस्था द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका 'ग्लोकल दृष्टि' को वर्ष.....के लिये व्यक्तिगत/ संस्था हेतु नियमित रुप से मंगाने का/की इच्छुक हूँ। अतः मैं नकद/बैंक ड्राफ्ट द्वारा एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष के लिये अंकन रु0 .....की राशि जमा कर रहा/रही हूँ।

भवदीय

नाम व हस्ताक्षर

पूरा नाम (Full Name in Block Letters)

पत्राचार का पता (Mailing Address)

.....

दूरभाष संख्या (Telephone No.) .....

ई–मेल पता (E-mail address)

.....

भुगतान का विवरण (Transaction Details)

.....

मूल्य दर: व्यक्तिगतः रु0 500 प्रति वर्ष संस्थागतः रु0 800 प्रति वर्ष

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

प्रो. शोभा त्रिपाठी,

प्रधान सम्पादक, ग्लोकल विश्वविद्यालय, दिल्ली–यमुनोत्री मार्ग,

मिर्जापुर पोल, सहारनपुर–247121, shobha.tripathi@theglocaluniversity.in

-

.

GLOCAL

GLOCAL
Dr. Subodh Kumar Sharma

THE GLOCAL UNIVERSITY
दीक्षांत समारोह
दीक्षांत
समारोह
2024

THE GLOCAL UNIVERSITY